ISSN 2278-1633ANTIM JAN

गांधी दर्शन
अंतिम जन

वर्ष-7, अंक: 1, संख्या-51 जून 2024 मूल्य: ₹20

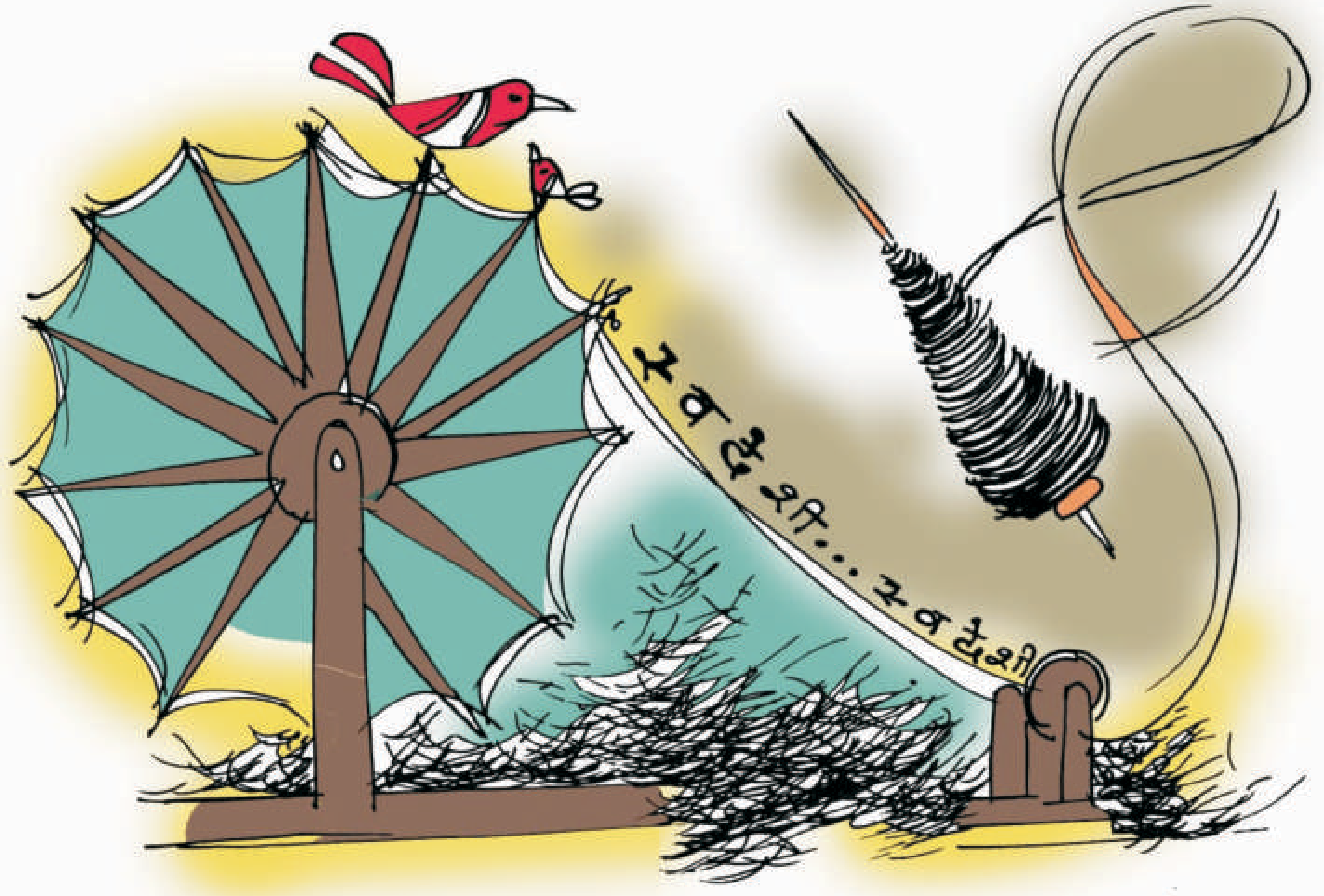

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति संग्रहालय

समिति के दो परिसर हैं- गांधी स्मृति और गांधी दर्शन।

गांधी स्मृति, 5, तीस जनवरी मार्ग, नई दिल्ली पर स्थित है। इस भवन में उनके जीवन के अंतिम 144 दिनों से जुड़े दुर्लभ चित्र, जानकारियाँ और मल्टीमीडिया संग्रहालय (Museum) है। जिसमें प्रवेश निःशुल्क है।

दूसरा परिसर गांधी दर्शन राजघाट पर स्थित है। यहाँ 'मेरा जीवन ही मेरा संदेश' प्रदर्शनी, डोम थियेटर और राष्ट्रीय स्वच्छता केंद्र संग्रहालय (Museum) है।

दोनों परिसर के संग्रहालय प्रतिदिन प्रातः 10 से शाम 6:30 तक खुलते हैं।
(सोमवार एवं राजपत्रित अवकाश को छोड़ कर)

ISSN 2278A 1633ANTIM JAN

गांधी दर्शन
अंतिम जन

वर्ष-7, अंक: 1, संख्या-51
जून 2024

संरक्षक
विजय गोयल
उपाध्यक्ष, गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति

प्रधान सम्पादक
डॉ. ज्वाला प्रसाद

सम्पादक
प्रवीण दत्त शर्मा
पंकज चौबे

परामर्श
वेदाभ्यास कुंडू
संजीत कुमार

प्रबन्ध सहयोग
शुभांगी गिरधर

आवरण व रेखांकन
संजीव शाश्वती

मूल्य : ₹ 20
वार्षिक सदस्यता : ₹ 200
दो साल : ₹ 400
तीन साल : ₹ 500

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति
गांधी दर्शन, राजघाट, नई दिल्ली-110002
फोन : 011-23392796
ई-मेल : antimjangsds@gmail.com
2010gsds@gmail.com
गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, राजघाट,
नई दिल्ली-110002, की ओर से मुद्रित एवं प्रकाशित।

लेखकों द्वारा उनकी रचनाओं में प्रस्तुत विचार एवं दृष्टिकोण उनके अपने हैं, गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, राजघाट, नई दिल्ली के नहीं।
समस्त मामले दिल्ली न्यायालय में ही विचाराधीन।

मुद्रक
पोहोजा प्रिंट सोल्यूशंस प्रा. लि., दिल्ली - 110092

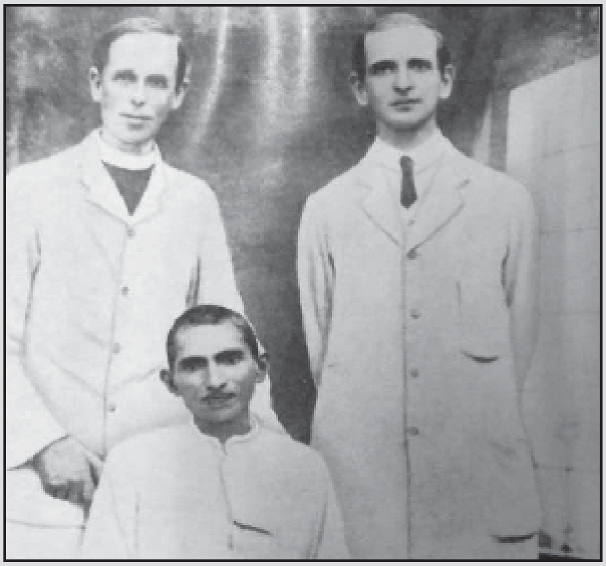

इस अंक में

धरोहर
मैं हिन्दू क्यों हूँ ? - *मोहनदास करमचंद गांधी* 5
भाषण
सशक्त युवा और समृद्ध जम्मू-कश्मीर - *श्री नरेंद्र मोदी* 9
स्मरण
अग्निकुंड में खिला गुलाब - *नारायण देसाई* 14
पर्यावरण-विमर्श
'एन्थ्रोपोसिन': क्या 'मानव युग' आ चुका है? - *कुशाग्र राजेंद्र* 20
जल संरक्षण व संग्रहण - *मनोज कुमार झा* 23
महात्मा गांधी और पर्यावरण दर्शन - *डॉ नन्दकिशोर साह* 25
सामूहिक जन भागीदारी से पर्यावरण संरक्षण - *अशोक चौधरी* 30
विमर्श
गांधी जी की रामराज्य की अवधारणा - *प्रो. रसाल सिंह* 33
साहित्य में गांधी-प्रभाव स्पष्ट है - *सुमन बाजपेयी* 40
गांधी विचार का सरकार की नीतियों पर प्रभाव - *संजीत कुमार* 45
लोक का आलोक : महात्मा गांधी - *कृष्ण बिहारी पाठक* 49
कविता
डॉ. संतोष पटेल की कविताएँ 52
फोटो में गांधी 55
बाल कहानी
गाँव की गुनगुन - *कल्पना मनोरमा* 56
सिसकता बचपन - *मुग्धा* 58
बंदर और खरगोश - *पतरस बुखारी* 60
गांधी क्विज-3 61
गतिविधियाँ 62

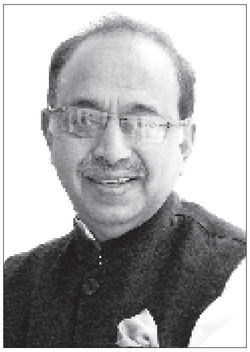

गांधी से सीखिए कम्यूनिकेशन की कला

अच्छा कम्यूनिकेशन व्यक्ति के व्यक्तित्व में चार चांद लगाता है। खासकर जो व्यक्ति जनता का प्रतिनिधि हो उसका अच्छा कम्यूनिकेटर होना आवश्यक है। क्योंकि कम्यूनिकेशन यानि संचार कौशल के जरिए ही जनप्रतिनिधि आम जनता से ज्यादा कनेक्ट हो सकता है। अपने समय में गांधी जी एक जबर्दस्त कम्यूनिकेटर थे। उनका संचार कौशल इतना मजबूत था कि अंग्रेज और भारतीय दोनों को अपनी बात समझाने की उनमें क्षमता थी। गांधी सबके थे। समाज के हर वर्ग को वे अपने लगते थे। हर कोई भावनात्मक, तार्किक और नैतिक आधारों पर उनसे जुड़ सकता था।

महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटने के बाद 1917 में बिहार के चंपारण पहुंचे। यहां उन्होंने नील के किसानों की दुर्व्यवस्था देखी और चंपारण किसान आंदोलन चलाया। गुजराती गांधीजी का इससे पहले बिहार के किसानों से कोई संपर्क नहीं था। उनकी भाषा-बोली भी स्थानीय किसानों से अलग थी। लेकिन ये गांधीजी का कम्यूनिकेशन का गजब तरीका ही था, जिसके चलते उन्होंने लोगों के बीच अपनी खास जगह बना ली थी। चंपारण में सरकार ने उन्हें तुरंत जिला छोड़कर जाने अन्यथा मुकदमा दर्ज करने की चेतावनी दी थी। ऐसी चेतावनी सुनकर कोई भी भड़क सकता था। लेकिन गांधीजी ने बड़ी शांत भाषा में मोतिहारी के मजिस्ट्रेट के समक्ष बयान दिया कि वे जिला नहीं छोड़ेंगे, जेल से छूटने के बाद वे यहीं घर बनाकर रहना पसंद करेंगे। गांधीजी के इस बयान ने स्थानीय निवासियों का दिल जीत लिया, वे गांधीजी के साथ डटकर खड़े हो गए। मजिस्ट्रेट ने बिना कुछ कहे मुकदमा वापस ले लिया। यह गांधीजी के संचार कौशल की जीत थी। इस कौशल के दम पर वे ब्रिटिश सरकार में भी और आम लोगों में भी आत्मीयता के भाव जगाते हैं।

गांधी ने अपनी बात अधिकाधिक लोगों तक पहुंचाने के लिए संचार के विभिन्न साधनों का उपयोग किया। उन्होंने पत्रकारिता को भी बहुत महत्व दिया। अपने जीवनकाल में उन्होंने अनेक पत्र निकाले। इंडियन ओपिनियन, यंग इंडिया, नवजीवन, हरिजन जैसे पत्रों के माध्यम से वे लोगों से जुड़े और उन्हें अपना बनाया। गांधीजी को पढ़कर हम उनसे अच्छा कम्यूनिकेटर बनने के गुण सीख सकते हैं।

'अंतिम जन' का ताजा अंक आपको सौंपते हुए मुझे प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। कृपया पत्रिका के बारे में अपने विचारों से हमें जरूर अवगत करवाएं।

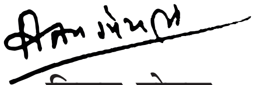

विजय गोयल

गांधी जी का पर्यावरण चिंतन

आज भारत सहित पूरे विश्व में पर्यावरण संरक्षण बहस का मुद्दा बना हुआ है। पर्यावरण की चिंताजनक स्थिति को लेकर दुनिया के कई भागों में बुद्धिजीवियों और पर्यावरण कार्यकर्ता सड़कों पर उतरे हैं और वातावरण के प्रदूषण पर विराम लगाने की बातें उन्होंने की हैं।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भी पर्यावरण पर समग्र चिन्तन किया है। यद्यपि बापू के जीवनकाल में पर्यावरण शब्द चलन में नहीं था, लेकिन युगद्रष्टा गांधी की सोच इतनी दूरदर्शी थी कि उन्होंने उस समय में आज की स्थिति पर चिंता और चिंतन आरंभ कर दिया था। गांधी जी का मानना था कि ''विश्व के पास सब की जरूरतें पूरा करने के लिए कुछ न कुछ है, पर किसी के लालच की पूर्ति के लिए कुछ भी नहीं है।''बापू ने पर्यावरण को नुकसान पहुँचाने के विभिन्न कारकों और उसे संरक्षित रखने के विभिन्न उपायों पर अपने विचार रखे हैं। अपने लेख 'स्वास्थ्य की कुंजी' में उन्होंने स्वच्छ वायु पर अपने विचार व्यक्त किए हैं। इसमें उन्होंने कहा है कि तीन प्रकार के प्राकृतिक पोषण की आवश्यकता होती है-हवा, पानी और भोजन, लेकिन स्वच्छ वायु सबसे आवश्यक है।

अपनी पुस्तक 'हिन्द स्वराज' में उन्होंने मशीनों का विरोध किया है और हाथ के श्रम को महत्व दिया है। मशीनीकरण के विरोध के जरिए उन्होंने लोगों को समझाया है कि अनावश्यक मशीनीकरण पर्यावरण को हानि पंहुचाता है। गांधीजी ने भारतवासियों को चरखे से सूत कातने व उससे बुने वस्त्र पहनने को पहने के लिए प्रेरित किया। इसके पीछे उनका उद्देश्य स्वदेशी के प्रति अलख जगाना तो था ही, साथ ही कपड़ा मिलों से निकलने वाले अपशिष्ट पदार्थों और कचरे को कम करना भी था। गांधी जी प्रकृति प्रेमी थे और चाहते थे कि इस सुन्दर प्रकृति को निज स्वार्थ हेतु मानव खराब ना करे।

पर्यावरण के प्रति गांधीजी का दृष्टिकोण व्यापक था। उन्होंने देशवासियों से, तकनीकों के अंधानुकरण के विरुद्ध, जागरूक होने का आवाहन किया था। उनका मानना था कि पश्चिमी देशों के जीवन स्तर की नकल करने से, पर्यावरण का संकट पनप सकता है। यदि विश्व के अन्य देश भी आधुनिक तकनीकों के मौजूदा स्वरूप को स्वीकार कर लेंगे, तो पृथ्वी के संसाधन नष्ट हो जायेंगे।

इस अंक में पर्यावरण से संबंधित विशेष सामग्री रखी गई है। साथ हर सभी स्थायी स्तंभ और बच्चों के लिए कहानियां भी आपको पसंद आएंगी, ऐसी आशा है।

डॉ. ज्वाला प्रसाद

आपके ख़त

गांधी विचार की पत्रिका

'अंतिम जन' पत्रिका में प्रकाशित आलेखों में गांधी विचार की प्रधानता है। गांधी जी के विचार को, आज भी भारत और पूरे विश्व में महत्वपूर्ण माना जाता है। गांधी जी हिंसा के खिलाफ थे। हिंसा शारीरिक हो या मानसिक, इसे किसी भी तरह से स्वीकार नहीं किया जा सकता है। हिंसा ने आज हमारे समाज को पूरी तरह से जकड़ रखा है। इसने समाज के बड़े वर्ग को अपनी चपेट में ले रखा है। समाज के सभी वर्ग को गांधी ने अपने साथ करने की कोशिश की थी। जुड़ा हुआ समाज देश को तरक्की के रास्ते पर ले जाने में सक्षम है। गांधी जी आजीवन सत्य के रास्ते पर चलकर देश को आजादी दिलायी। 'अंतिम जन' पत्रिका में प्रकाशित आलेखों में विचारात्मक पुट है।

राकेश शर्मा
न्यू अशोक नगर, दिल्ली

यक्ष प्रश्न कलयुग का

हे धर्म राज यह भारत पूछ रहा आपसे यक्ष प्रश्न
संभव हो तो हल कर दो यह भारत के यक्ष प्रश्न ।।

चार भाई के जीवन खातिर आपने हल किए सारे यक्ष प्रश्न
आज इस कलयुग में क्यों नहीं हल कर रहे यह यक्ष प्रश्न।।

माना भीम अर्जुन सा ना अब इस युग में है कोई बलवान
पर आप तो समदर्शी हैं इसका कहाँ आपको अभिमान।।

उस युग में तो केवल चार जान थे संकट में
लेकिन आज तो पूरा भारत ही है संकट में।।

वहाँ तो केवल एक शकुनी जो गंदी चाले चलता था
यहाँ तो हर गली में शकुनी जो गंदी चाले चलता है।।

वहाँ तो केवल एक दुर्योधन जिसको था सत्ता का भूख
यहाँ तो हर घर चौराहे पर दुर्योधन खोज रहा सत्ता का सुख ।।

एक धृतराष्ट्र मौन साधकर बुलाया कई संकट को
यहाँ तो धृतराष्ट्र का फौज खड़ा बुला रहा संकटों को ।।

एक शकुनी कंधार से आकर
हस्तिनापुर मिटाने का रखा था दम
आज ना जाने कितने शकुनी
भारत को मिटाने का करते जतन ।।

उन दुष्टों को तो झेल गए आप अपने दृढ़ विचारों से
अब इस भारत को कौन बचाए ऐसे कु विचारों से ।।

दुर्योधन संग एक दुशासन चीर हरण को था बेताब।
आज ना जाने कितने दुशासन चीरहरण को है तैयार ।।
उस युग में तो श्रीकृष्ण थे स्वयं विष्णु के अवतार
आज इस कलयुग में पूरा भारत हीं है निराधार ।।

सत्ता पाने के मद में सब के सब बन बैठे धृतराष्ट्र ।
भारत माता की गरिमा को कर रहे हैं तार-तार ।।

सेना की गरिमा को यह धूल धूसरीत करते हैं।
अपने खादी के काले छीटें को भारत माँ पर मढते हैं ।।

अगर उन्हें मौका मिले तो बोटी बोटी नोच कर खाएंगे ।
ऊपर से राक्षसी अट्टाहस कर हम आम जनता को डराएंगे ।।

जब आपने स्थापित किया खुशहाल शासन आपको भी ना
इसका होगा एहसास।
एक दिन इस भरतपुर का होगा ऐसा खस्ताहाल ।।

अब जनता त्रस्त हो चुका ऐसा यक्ष प्रश्न झेल कर
बस आपसे यही निवेदन आम जनता को शांति देदो यक्ष प्रश्न
हल कर ।।

यह ना कर सकते तो आपको पुन: धरा पर आना होगा।
संग अपने परीक्षित को लाकर पुन: एक कुशल शासक छोड़कर
जाना होगा ।।३

कमलेश झा
भागलपुर बिहार

आप भी पत्र लिखें। सर्वश्रेष्ठ पत्र को पुरस्कृत कर, उपहार दिया जाएगा।

मैं हिन्दू क्यों हूँ ?

मोहनदास करमचंद गांधी

एक अमेरिकी बहन जो अपने को हिन्दुस्तान का यावज्जीवन मित्र कहती है, लिखती हैं:

चूंकि हिन्दू-धर्म पूर्व के मुख्य धर्मों में से एक है, और चूंकि आपने ईसाई धर्म और हिन्दू-धर्म का अध्ययन किया है, और उस अध्ययन के आधार पर अपने आपको हिन्दू घोषित किया है, मैं आपसे अपनी इस पसन्दगी का कारण पूछने की अनुमति चाहती हूँ। हिन्दू और ईसाई दोनों ही मानते हैं कि मनुष्य की प्रधान आवश्यकता है ईश्वर को जानना, और सच्चे मन से उसकी पूजा करना। यह मानते हुए कि ईसा परमात्मा के प्रतिनिधि थे, अमेरिका के ईसाइयों ने अपने हजारों पुत्रों और पुत्रियों को हिन्दुस्तान वालों को ईसा के बारे में बतलाने के लिए भेजा है। क्या आप कृपा करके बदले में ईसा की शिक्षाओं के साथ-साथ हिन्दू-धर्म-की तुलना करेंगे और हिन्दू-धर्म की अपनी व्याख्या देंगे? इस कृपा के लिए मैं आपका हार्दिक आभार मानूंगी।

कई मिशनरी सभाओं में अंग्रेज और अमेरिकी मिशनरियों से मैंने यह कहने का साहस किया है कि अगर वे ईसा के बारे में हिन्दुस्तान को 'बताने' से बाज आते और 'सरमन ऑन द माउंट' में बताये गये ढंग से अपना जीवन बिताते, तो भारत उन पर शक करने के बदले अपनी सन्तानों के बीच उनके रहने की कद्र करता और उनकी उपस्थिति से लाभ उठाता। अपने इस विचार के कारण मैं अमेरिकी मित्रों को हिन्दू-धर्म के बारे में बतौर 'बदले' के कुछ 'बता' नहीं सकता। अपने धर्म के बारे में, विशेष रूप से धर्म परिवर्तन के उद्देश्य से लोग दूसरों से कुछ कहें, इसमें मेरा विश्वास नहीं है। विश्वास में किसी को कुछ बताने की गुंजाइश नहीं है। विश्वास पर तो आचरण करना होता है और तब वह अपना प्रचार स्वयं करता है। और सिवाय अपने जीवन के और किसी अन्य ढंग से हिन्दू-धर्म की व्याख्या करने के योग्य मैं अपने को नहीं मानता। और अगर मैं लिख कर हिन्दू धर्म को समझा नहीं सकता तो ईसाई धर्म से उसकी तुलना भी नहीं कर सकूंगा। इसलिए मैं तो सिर्फ इतना ही कर सकता हूँ कि यथा सम्भव संक्षेप में मैं बताऊँ कि मैं हिन्दू क्यों हूँ।

मैं वंशानुगत गुणों के प्रभाव पर विश्वास रखता हूँ, और मेरा जन्म एक हिन्दू परिवार में हुआ है इसलिए मैं हिन्दू हूँ। अगर मुझे यह अपने

'गीता' में कर्म का सन्देश, भक्ति का सन्देश और ज्ञान का सन्देश दिया गया है। जीवन इन तीनों का एक मिला जुला समन्वित रूप होना चाहिए। सेवा इन सभी का आधार है और जो लोग देश की सेवा करना चाहते हैं उनके लिए इससे ज्यादा महत्त्वपूर्ण और क्या हो सकता है कि वे उस अध्याय के अध्ययन से शुरुआत करें जिसमें कर्म-का सन्देश दिया गया है?

नैतिक बोध या आध्यात्मिक विकास के विरुद्ध लगे तो मैं इसे छोड़ दूंगा। अध्ययन करने पर जिन धर्मो को मैं जानता हूँ उनमें मैंने इसे सबसे अधिक सहिष्णु पाया है। इसमें सैद्धान्तिक कट्टरता नहीं है, यह बात मुझे बहुत आकर्षित करती है क्योंकि इस कारण इसके अनुयायी को आत्माभिव्यक्ति का अधिक से-अधिक अवसर मिलता है। हिन्दू धर्म वर्जनशील नहीं है, अतः इसके अनुयायी न सिर्फ दूसरे धर्मों का आदर कर सकते हैं बल्कि वे सभी धर्मो की अच्छी बातों को पसन्द कर सकते हैं और अपना सकते हैं। अहिंसा सभी धर्मों में है मगर हिन्दू धर्म में इसकी उच्चतम अभिव्यक्ति और प्रयोग हुआ है। (मैं जैन और बौद्ध धर्मों को हिन्दू-धर्म से अलग नहीं गिनता।) हिन्दू-धर्म न सिर्फ सभी मनुष्यों की एकात्मता में विश्वास करता है बल्कि सभी जीवधारियों की एकात्मता में विश्वास करता है। मेरी राय में हिन्दूधर्म में गाय की पूजा मानवीयता के विकास की दिशा में उसका एक अनोखा योगदान है। सभी जीवों की एकात्मता और इसलिए सभी प्रकार के जीवन की पवित्रता में इसके विश्वास का यह व्यावहारिक रूप है। भिन्न योनियों में जन्म लेने का महान विश्वास, इसी विश्वास का सीधा नतीजा है। अन्त में, वर्णाश्रम धर्म के सिद्धान्त की खोज सत्य की निरन्तर खोज का अत्यन्त सुन्दर परिणाम है। ऊपर बतलाई बातों की परिभाषा देकर मैं इस लेखको भारी नहीं बनाऊँगा। मैं तो यहाँ सिर्फ इतना ही कहूँगा कि गोभक्ति और वर्णाश्रम के आजके खयालात, मेरी समझ में, मूल गोभक्ति और वर्णाश्रम की विकृतियाँ-भर हैं। जो चाहें, वे 'यंग इंडिया' के पिछले अंकों में वर्णाश्रम और गोभक्ति की परिभाषा देख सकते हैं। मैं निकट भविष्य में ही वर्णाश्रम पर कुछ कहने की आशा रखता हूँ। इस अत्यन्त संक्षिप्त खाके में तो मैंने सिर्फ हिन्दू-धर्म की वे विशेषताएँ बतलाई हैं जो मुझे हिन्दू बनाये हुए है।

सम्पूर्ण भारत में हम जो-कुछ करना चाहते हैं, उसे देखते हुए तो स्वाभाविक है कि इस राजधानी को अपने आसपास के क्षेत्रों में पैदा होने वाली सारी रुई का उपयोग करना चाहिए। मैं चाहता हूँ कि आप अपनी सेवा के बलपर कपास के उत्पादकों को इस प्रकार अपने वश में कर लें कि वे अपनी रुई केवल आपको ही बेचें, और मैं यह चाहता हूँ कि अपनी उसी सेवा के अधिकार के द्वारा आप गरीब ग्रामीणों को इस प्रकार प्रभावित करें कि एक भी घर ऐसा न बचे जिसमें चरखा न चलता हो।

भगवद्गीता का अध्ययन

गीता-कक्षा का उद्घाटन करते हुए महात्माजी ने छात्रों को सुबह 4 बजे उठने और प्रतिदिन नियमित रूप से 'भगवद्गीता' पढ़ने की सलाह दी। उन्होंने कहा, मैं चाहता हूँ कि आप लोग पूरे मन से 'गीता' का अध्ययन शुरू करें। यदि आप लोग संस्कृत नहीं पढ़ सकते तो आप 'गीता' का तमिल अनुवाद पढ़ सकते हैं, लेकिन अंग्रेजी अनुवाद नहीं क्योंकि अंग्रेजी अनुवाद 'गीता' का सच्चा महत्त्व प्रकट नहीं कर सकता। उन्होंने कहा कि 'गीता' का तीसरा अध्याय महत्त्वपूर्ण है।

'गीता' में कर्म का सन्देश, भक्ति का सन्देश और ज्ञान का सन्देश दिया गया है। जीवन इन तीनों का एक मिला जुला समन्वित रूप होना चाहिए। सेवा इन सभी का आधार है और जो लोग देश की सेवा करना चाहते हैं उनके लिए इससे ज्यादा महत्त्वपूर्ण और क्या हो सकता है कि वे उस अध्याय के अध्ययन से शुरुआत करें जिसमें कर्म-का सन्देश दिया गया है? लेकिन आप 'गीता' को पाँच आवश्यक साधनों से सज्जित होकर पढ़ें। वे पाँच साधन हैं, अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह और अस्तेय । तभी और केवल तभी आप 'गीता' की सही व्याख्या कर सकेंगे। और तब आप उसमें हिसा नहीं, जैसा कि अधिकांश लोग उसमें देखते हैं, बल्कि अहिंसा देखेंगे। आप उसका अध्ययन उपयुक्त उपकरणों से सज्जित होकर कीजिए और मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आपको ऐसी शान्ति प्राप्त होगी जिसका आपको पहले कभी भान भी नहीं था।

दरिद्रनारायण की दृष्टि से

मैं आपको सारे अभिनन्दन पत्रों, इन थैलियों, खादी के विभिन्न उपहारों तथा हीरे के इन दो बुन्दों के लिए,

जिन्होंने मेरा और आपका अगला काम तय कर दिया है, घन्यवाद देता हूँ। अब तक तो आप जान ही चुके होंगे कि मेरे लिए इन मूल्यवान उपहारों का महत्त्व केवल दरिद्रनारायण की दृष्टि से ही है, मेरे व्यक्तिगत उपयोग की दृष्टि से नहीं। जिस थोड़ी बहुत खादी की जरूरत मुझे पड़ती है वह तो मेरे पास पहले से ही है। और इसलिए अगर आप भाषण के खत्म होने पर धैर्य रखेंगे तो मैं सारी खादी और इन मूल्यवान बुन्दों तथा इन फेमों को विक्री के लिए आपके सामने पेश करूँगा। आपने मुझे याद दिलाई है कि कुछ समय पहले जब मैं तिरुपुर आया था तो आपने मुझे खादी के राजाकी तथा इसे [तिरुपुरको] खादी के राजा की राजधानी की उपाधि दी थी। इस उपाधि को मैंने आदरपूर्वक और नम्रता के साथ स्वीकार कर लिया था और इस स्थान को खादी के राजा की राजधानी कहने के आपके दावे को भी मैंने मान लिया था और चूंकि मैं अपनी प्रजासे बहुत अपेक्षाएँ रखने वाला कोई कठोर राजा नहीं हूँ इसलिए मैं कह सकता हूँ कि आपने अपने-आपको जो उपाधि दी है वह बिलकुल ठीक दी है। उत्पादन की दृष्टि से आपका सारे भारत में अब भी पहला स्थान है। आपने अपनी खादी की किस्म में भी काफी सुधार कर लिया है। लेकिन जब मैं अपने अभीष्ट लक्ष्य की दृष्टि से तथा आपसे और सम्पूर्ण भारत से जो-कुछ अपेक्षित है उस दृष्टि से सोचता हूँ तो मुझे यह मानना पड़ता है कि प्रगति अपेक्षाकृत अच्छी होते हुए भी सन्तोषजनक नहीं है। सम्पूर्ण भारत में हम जो-कुछ करना चाहते हैं, उसे देखते हुए तो स्वाभाविक है कि इस राजधानी को अपने आसपास के क्षेत्रों में पैदा होने वाली सारी रुई का उपयोग करना चाहिए। मैं चाहता हूँ कि आप अपनी सेवा के बलपर कपास के उत्पादकों को इस प्रकार अपने वश में कर लें कि वे अपनी रुई केवल आपको ही बेचें, और मैं यह चाहता हूँ कि अपनी उसी सेवा के अधिकार के द्वारा आप गरीब ग्रामीणों को इस प्रकार प्रभावित करें कि एक भी घर ऐसा न बचे जिसमें चरखा न चलता हो। और एक भी बुनकर ऐसा न बचे जो हाथ-कते सूत के अलावा और कुछ चुने। आप ऐसा न सोचें कि यह आप के बस के बाहर की बात है। यदि आप अपने शहर को खादी की राजधानी कहने का विशेषाधिकार कायम रखना चाहते हैं तो आपको यह लक्ष्य तो रखना ही चाहिए। और यदि आपने गरीब ग्रामीणों के शोषण के ध्येय से नहीं बल्कि महज उनकी सेवा करने के उद्देश्य से कार्य किया तो बहुत कम समय में ही ग्रामीणों और रुई के उत्पादकों पर आपका जो प्रभाव होना चाहिए वह आप जमा लेंगे। लेकिन यह तभी सम्भव होगा जब खादी के विभिन्न व्यापारियों के बीच हार्दिक सहयोग हो। आपको खादी के जरिये रुपया कमाने की अपनी व्यक्तिगत इच्छा पर भी अंकुश रखना होगा। इसमें मुझे कोई सन्देह नहीं कि खादी एक ठोस आर्थिक योजना है। यह आपको जीविका का बढ़िया साधन और उचित लाभ प्रदान कर सकती है। हाँ, उसमें ब्याज की ऊँची दरें लेने वाले व्यक्तियों के लिए कोई स्थान नहीं है, और न होना ही चाहिए। मैं स्वयं ऐसे संगठनों को सन्देह की दृष्टि से देखता हूँ जो अपनी पूँजीपर 25 प्रतिशत व्याज देने में समर्थ हों या 20 प्रतिशत देते हों। यह बात तो आसानी से चुनौती से परे, एक सामान्य सिद्धान्त के रूप में मानी जा सकती है कि जहाँ कहीं भी अधिक और अपरिमित लाभ प्राप्त हुआ है वह गरीबों के बूते पर ही हुआ है। लेकिन खादी की सारी अवधारणा तो यह है कि हमें, जो खादी के प्रचार में सक्रिय भाग ले रहे हैं, अपने-आपको इन क्षुधा-पीड़ित ग्रामीणों का न्यासी समझना चाहिए। सम्मानजनक जीवन-यापन करनेके लिए जो काफी है, उसके सिवा जितनी भी आमदनी हो वह सब इन ग्रामीणों को लौटा दी जानी चाहिए। आप देखेंगे कि जब तक यहाँ ऐसी हाथ-कताई जारी रहती है तब तक राजा अपनी इस छोटी-सी राजधानी के साथ रहेगा और इसकी जितनी तारीफ सम्भव है, उतनी तारीफ चारों ओर करेगा।

लेकिन दरिद्रनारायण की इस पीढ़ी के कुछ और भी साझेदार हैं और वे हैं कतैये और बुनकर। मुझे मालूम है कि इस सभा में कतैये नहीं हैं। लेकिन कुछ बुनकरों के यहाँ उपस्थित होने का मुझे पता है। जो बुनकर यहाँ मौजूद हैं उनसे मैं कहना चाहता हूँ कि मुझे यह सुनकर बहुत दु:ख हुआ है कि इस शहर में कुछ बुनकर शराब और जुए के शिकार हैं। मैं चाहता हूँ कि मेरा यह सन्देश आप उन बुनकरों तक भी पहुँचा दें जो इस समय यहाँ मौजूद नहीं हैं। दरिद्रनारायण की पेढ़ी में शराबियों और जुआरियों का

वास्तव में कोई काम नहीं है। मद्यपान एक ऐसी बुराई है जिसने संसार के हजारों घरों को बरबाद कर दिया है; और खादी से सम्बन्धित बुनकरों से यह अपेक्षा की जाती है कि कमसे-कम वे तो शराब पीकर अपने शरीर दूषित नहीं करेंगे। शराब के नशे में चूर व्यक्ति को पत्नी और बहन में कोई भेद नजर नहीं आता। इसलिए मैं आशा करता हूँ कि तिरुपुर के नवयुवक जागेंगे और जो लोग शराब के आदी हैं उनके बीच जाकर काम करेंगे तथा विनम्रता पूर्वक समझा-बुझाकर उनकी शराब की आदत को छुड़ायेंगे ।

जुआ खेलना एक पाप है जो जुआरी को नीचे गिराता है और उससे असंख्य अपराध करवाता है। इसलिए इसे छोड़ देना चाहिए। आप जानते हैं कि दक्षिण का यह भाग हत्या के अपराधों के लिए कुख्यात है। मुश्किल से कोई सप्ताह ही ऐसा जाता हो जब हत्या के कुछ मामले न होते हों और यह सर्वविदित है कि जहाँ कहीं भी शराब और जुएका बोलबाला होता है वहाँ हत्याएँ भी जरूर होती हैं यह इन बुराइयों का एक अनिवार्य परिणाम है। यदि समाज में कोई भी ऐसा व्यक्ति है जो जीवन को इतना सस्ता समझता है कि वह थोड़े से उत्तेजन या मामूली-सा बहाना मिलते ही किसी की जान ले ले तो हमें अपने ऊपर शर्म आनी चाहिए। यदि आपके यहाँ समाज-सेवक है, जो कि निस्सन्देह हैं, तो मैं चाहता हूँ कि वे इस अपराध का अध्ययन करें, इसके ठीक-ठीक कारण जानें तथा इस अच्छे जिले से इस लज्जास्पद बुराई को दूर करने का प्रयत्न करें।

आज सुबह म्युनिसिपल हाई स्कूल के हेडमास्टर तथा कुछ विद्यार्थियों से मिलने पर मुझे बड़ा हर्ष और सुख हुआ। उन्होंने मुझसे गीता-कक्षा का उद्‌घाटन करने के लिए कहा। और इस उत्सव को मनाने के लिए विद्यार्थी और शिक्षक गण काफी सवेरे लगभग पौने चार बजे ही आ गये। आशा है कि विद्यार्थी अपने को इस पवित्र अध्ययन के योग्य बनायेंगे और एक बार इस महान कार्य को आरम्भ कर देने के बाद इससे न तो पीछे हटेंगे और न इसे टालेंगे। यह सही दिशा में उठाया गया कदम है। इस समय देश में साहित्यिक शिक्षा का भूत सवार है। लेकिन चरित्र-निर्माण की ओर ध्यान कम दिया जाता है। मेरी नम्र राय में तो जिस शिक्षा का निर्माण चरित्र की ठोस बुनियाद पर न हुआ हो वह निर्जीव शरीर के समान है। एक हिन्दू बालक को 'भगवद्‌गीता' का श्रद्धापूर्वक अध्ययन करने से जो चारित्रिक दृढ़ता प्राप्त होती है, उतनी अन्य किसी चीज से नहीं हो सकती। विद्यार्थी इस बात का ध्यान रखें कि 'भगवद्‌गीता' का अध्ययन उन्हें अपना संस्कृत का ज्ञान या स्वयं 'गीता' का ज्ञान प्रदर्शित करने के लिए नहीं करना है। वे ध्यान रखें कि इसका अध्ययन उन्हें आध्यात्मिक सुख प्राप्त करने के लिए और इसकी सहायता से अपनी सारी मुसीबतों पर विजय प्राप्त करने के लिए करना चाहिए। जो भी व्यक्ति इस पुस्तक का श्रद्धापूर्वक अध्ययन करता है उसका देश-सेवक और जन-सेवक बनना लाजिमी है। लोकमान्य तिलक ने हमें बताया है कि 'गीता' मुख्य रूप से कर्म का सन्देश है-ऐसे कर्म का जो नि:स्वार्थ है। नि:स्वार्थ कर्म का तात्पर्य सेवा और त्याग के अलावा और कुछ नहीं है। मैं साहसपूर्वक यह कह सकता हूँ, चाहे इसके विरोध में कुछ भी कहा जाये कि इस युगमें सच्चा त्याग 'भगवद्‌गीता' में जिस त्याग का उपदेश हुआ है वह त्याग- लाखों क्षुधा-पीड़ितों के लिए तथा उनके नामपर हाथ-कताई करना है। यदि विद्यार्थियों को अपने और लाखों क्षुधा-पीड़ितों के बीच जीवन्त सम्बन्ध स्थापित करना है, जो कि उन्हें करना भी चाहिए, तो वे यह देखेंगे कि चरखे के अलावा कोई और चीज इतनी ताकतवर नहीं है जो इस कार्य में उन्हें मदद दे सके।

नगरपालिका द्वारा दिये गये अभिनन्दन पत्र में स्कूलों के सम्बन्ध में चरखे का उल्लेख देखकर मुझे प्रसन्नता हुई और मुझे उम्मीद है कि नगरपालिका निकट भविष्य में अपने इस निश्चय को कार्य रूप देगी। अब और कुछ कहकर मुझे आपको ज्यादा नहीं रोकना चाहिए क्योंकि अभी मुझे आपका कुछ समय इन वस्तुओं को बेचने में भी लेना है। इस बीच स्वयंसेवक जनता के बीच पहुँचेंगे और उन लोगों से जिन्हें खादी में श्रद्धा है और जिन्होंने खादी कोष के लिए रुपया नहीं दिया है, रुपया इकट्ठा करेंगे।

(संपूर्ण गांधी वाङ्मय खंड 35 से साभार)

सशक्त युवा और समृद्ध जम्मू-कश्मीर

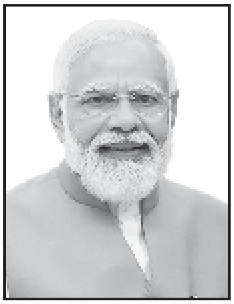

श्री नरेंद्र मोदी

साथियों, आज सुबह जब मैं दिल्ली से श्रीनगर के लिए आने की तैयारी कर रहा था। तो ऐसे ही मेरा मन बहुत उत्साह से भरा हुआ था। और मैं सोच रहा था कि आज इतना उत्साह उमंग मेरे मन में क्यों उमड़ रहा है। तो मुझे दो वजह की तरफ मेरा ध्यान गया। वैसे एक तीसरी वजह भी है। क्यों मैंने लंबे अर्से तक यहां रहकर के काम किया है तो मैं बहुत पुराने लोगों से परिचित हूं। अलग-अलग इलाकों से बहुत गहरा नाता रहा है। तो वो तो यादें ताजा होना बहुत स्वाभाविक है। लेकिन दो वजह की तरफ मेरा ध्यान बहुत स्वाभाविक गया है। आज के इस कार्यक्रम में जम्मू-कश्मीर की तरक्की से जुड़े प्रोजेक्ट्स का काम और दूसरा लोकसभा इलेक्शन के बाद ये कश्मीर के भाइयों और बहनों से मेरी पहली मुलाकात।

साथियों, मैं अभी पिछले सप्ताह इटली में जी-7 की बैठक में शामिल होकर के आया हूं। और जैसा मनोज जी ने बताया तीन बार किसी सरकार का लगातार बनना, इस Continuity का बहुत बड़ा वैश्विक प्रभाव होता है। इससे हमारे देश की तरफ देखने का नजरिया बदलता है। दुनिया के दूसरे देश भारत के साथ अपने रिश्तों को प्राथमिकता देकर मजबूत करते हैं। आज हम बहुत भाग्यशाली हैं। आज भारत के नागरिकों का जो मिजाज है, ये हमारा देश हम कह सकते हैं कि हमारी सोसायटी ये एस्पिरेशन ऑलटाइम हाई है। और ऑलटाइम हाई एस्पिरेशंस ये अपने आप में देश की सबसे बड़ी शक्ति होती है। जो आज भारत का नसीब हुई है। जब एस्पिरेशन हाई होती है तो लोगों की सरकार से एक्सपेक्टेशन, अपेक्षाएं भी बहुत ज्यादा बढ़ जाती है। इन कसौटियों पर परखने के बाद तीसरी बार लोगों ने हमारी सरकार को चुना है। एक एस्पिरेशनल सोसायटी किसी को दोबारा मौका नहीं देती। उसका एक ही पैरामीटर होता है-परफोर्मेंस। आपने अपने सेवाकाल के दरमियान क्या परफोर्म किया है। और वो तो उसको नजर के सामने दिखता है। वो सोशल मीडिया से नहीं चलता है, वो भाषण से नहीं होता है, और ये जो देश ने अनुभव किया, उस परफोर्मेंस को देखा, उसी का नतीजा है कि आज एक सरकार को तीसरी बार आप सबकी सेवा करने का अवसर मिला है। जनता को सिर्फ हम पर विश्वास और ये विश्वास उनकी

दुनिया के दूसरे देश भारत के साथ अपने रिश्तों को प्राथमिकता देकर मजबूत करते हैं। आज हम बहुत भाग्यशाली हैं। आज भारत के नागरिकों का जो मिजाज है, ये हमारा देश हम कह सकते हैं कि हमारी सोसायटी ये एस्पिरेशन ऑलटाइम हाई है। और ऑलटाइम हाई एस्पिरेशंस ये अपने आप में देश की सबसे बड़ी शक्ति होती है। जो आज भारत का नसीब हुई है।

एस्पिरेशन्स को हमारी सरकार ही पूरा कर सकती है। जनता को हमारी नीयत पर, हमारी सरकार की नीतियों पर भरोसा है, उस पर ये ठप्पा लगा है। और ये जो एस्पिरेशनल सोसायटी है, वो निरंतर अच्छा परफॉर्मेंस चाहती है, वो तेज गति से रिजल्ट चाहती है। उसे अब लेट-लतीफी स्वीकार नहीं है। होती है, चलता है, हो जाएगा, देखेंगे, ऐसा करो फिर मिलेंगे, वो जमाना चला गया। लोग कहते हैं बताओ भई आज शाम को क्या होगा? ये मिजाज है आज। जनता की उम्मीदों पर चलते हुए हमारी सरकार परफॉर्म करके दिखाती है, रिजल्ट लाकर के दिखाती है। इसी परफॉर्मेंस के आधार पर 60 साल के बाद, 6 दशक के बाद, तीसरी बार किसी सरकार को हमारे देश ने चुना है। और इस चुनाव के नतीजों ने, ये तीसरी बार सरकार बनने की घटना ने पूरी दुनिया को बहुत बड़ा संदेश दिया है।

पिछली सदी के आखिरी दशक में अस्थिर सरकारों का लंबा दौर देखा है। आप में से बहुत नौजवान हैं, जिनका उस समय जन्म भी नहीं हुआ था। आप हैरान हो जाएंगे इतना बड़ा देश और 10 साल में 5 बार इलेक्शन हुए थे। यानि देश चुनाव ही करता रहता था और कोई काम ही नहीं था। और इससे उस अस्थिरता के कारण, अनिश्चित्ता के कारण भारत को जब take off करने करने का वक्त था, हम grounded हो गए।

साथियों, लोक-सभा इलेक्शन में मिले जनादेश का बहुत बड़ा मैसेज स्थिरता का है, stability का है। देश ने आज से 20 साल पहले यानि एक प्रकार से पिछली शताब्दी थी, वो ये 21वीं शताब्दी, वो 20वीं शताब्दी थी। पिछली सदी के आखिरी दशक में अस्थिर सरकारों का लंबा दौर देखा है। आप में से बहुत नौजवान हैं, जिनका उस समय जन्म भी नहीं हुआ था। आप हैरान हो जाएंगे इतना बड़ा देश और 10 साल में 5 बार इलेक्शन हुए थे। यानि देश चुनाव ही करता रहता था और कोई काम ही नहीं था। और इससे उस अस्थिरता के कारण, अनिश्चित्ता के कारण भारत को जब take off करने करने का वक्त था, हम grounded हो गए। हमें बहुत नुकसान हुआ देश को। उस दौर को पीछे छोड़कर अब भारत स्थिर सरकार के नए दौर में प्रवेश कर चुका है। इससे हमारा लोकतंत्र और मजबूत हुआ है। और लोकतंत्र की मजबूती में जम्मू कश्मीर की अवाम की, आप लोगों की बहुत बड़ी भूमिका रही है। अटल जी ने जो इंसानियत, जम्हूरियत और कश्मीरियत का विजन दिया था, उसे आज हम हकीकत में बदलते देख रहे हैं। इस चुनाव में आपने जम्हूरियत को जिताया है। आपने पिछले 35-40 साल का रिकॉर्ड तोड़ा है। ये दिखाता है कि यहां का नौजवान, जम्हूरियत को लेकर कितने भरोसे से भरा हुआ है। और मैं आज इन कार्यक्रमों में तो आया हूं। लेकिन मेरा मन करता था कि मैं कश्मीर की वादियों में जाकर फिर से एक बार मेरे कश्मीर के भाई-बहनों को रूबरू जाकर धन्यवाद करूं। उन्होंने इस चुनाव में जो बढ़-चढ़कर के हिस्सा लिया है, जम्हूरियत का झंडा ऊंचा किया है, इसलिए मैं आपका धन्यवाद करने के लिए आया हूं। ये भारत की डेमोक्रेसी और संविधान के बनाए रास्तों पर चलकर नई इबारत लिखने की शुरुआत है। मुझे और खुशी होती अगर हमारा विपक्ष भी, कश्मीर में इतने उमंग उत्साह के साथ जो लोकतंत्र का उत्सव मनाया गया, इतनी भारी मात्रा में मतदान हुआ, ये जो उमंग उत्साह का माहौल है, काश अच्छा होता मेरे देश के विपक्ष के लोगों ने भी मेरे कश्मीर के भाई-बहनों की तारीफ की होती, उनका हौसला बुलंद किया होता तो मुझे बहुत खुशी होती। लेकिन विपक्ष ने ऐसे अच्छे काम में भी देश को निराश ही किया है।

साथियों, जम्मू-कश्मीर में आ रहा ये बदलाव हमारी सरकार की बीते 10 सालों की कोशिशों का नतीजा है। आजादी के बाद यहां की हमारी बेटियां, समाज के दूसरे कमजोर तबके के लोग, अपने हक से वंचित थे। हमारी सरकार ने सबका साथ, सबका विकास के मंत्र पर चलते हुए सबको अधिकार और अवसर दिए हैं। पाकिस्तान से आए शरणार्थी, हमारे वाल्मिकी समुदाय और सफाई कर्मचारियों के परिवार पहली बार लोकल बॉडीज इलेक्शन में वोट डालने का उन्हें अधिकार मिला है। वाल्मीकि समुदाय को SC कैटेगरी का लाभ मिलने की वर्षों पुरानी मांग पूरी हुई है। पहली बार ST समुदाय के लिए असेंबली में सीटें रिजर्व की गई हैं। 'पद्दारी जनजाति', 'पहाड़ी

जातीय समूह', 'गड्डा ब्राह्मण' और 'कोली' इन सभी समुदायों को भी ST का दर्जा दिया गया है। पंचायत, नगर पालिका और नगर निगम में ओबीसी रिजर्वेशन पहली बार लागू हुआ है। संविधान के प्रति समर्पण भाव क्या होता है। संविधान का letter & spirit में क्या महात्मय होता है। संविधान हिन्दुस्तान के 140 करोड़ देशवासियों की जिंदगी को बदलने के लिए, अधिकार देने के लिए, उनको भागीदार बनाने के लिए अवसर देता है। लेकिन पहले संविधान की इतनी बड़ी अमानत हमारे पास थी, इसको अस्वीकार किया जाता रहा। दिल्ली में बैठे हुए शासकों ने इसकी चिंता नहीं की। आजादी के इतने सालों तक नहीं की। आज मुझे खुशी है कि हम संविधान को जी रहे हैं, हम संविधान को लेकर के कश्मीर की जिंदगी बदलने के नए-नए रास्ते ढूंढ रहे हैं। जम्मू-कश्मीर में आज सही मायने में भारत का संविधान लागू हुआ है। और जिन्होंने अब तक संविधान लागू नहीं किया वे दोषी हैं, गुनहगार हैं, कश्मीर के नौजवानों के, कश्मीर की बेटियों के, कश्मीर के लोगों के गुनहगार हैं। और ये सब कुछ साथियों इसलिए हो रहा है, क्योंकि सबको बांटने वाली आर्टिकल 370 की दीवार अब गिर चुकी है।

भाइयों और बहनों, कश्मीर घाटी में जो बदलाव हम देख रहे हैं, आज पूरी दुनिया उसे देख रही है। मैं देख रहा हूं जी-20 समूह में जो लोग यहां आए थे। उन देशों के लोग जो भी मिलते हैं, तारीफ करते रहते हैं कश्मीर की भी। जिस प्रकार से मेहमानवाजी हुई है, बड़े गौरवगान करते हैं। आज जब श्रीनगर में G-20 जैसा इंटरनेशनल इवेंट होता है, तो हर कश्मीरी का गर्व से उसका सीना भर जाता है। आज जब लाल चौक पर देर-शाम तक हमारे बाल-बच्चे खेलते-खिलखिलाते हैं तो हर भारतीय आनंद से भर जाता है। आज जब यहां सिनेमा हॉल में, बाजारों में रौनक दिखती है तो सबके चेहरे खिल उठते हैं। मुझे कुछ दिन पहले की वो तस्वीरें याद हैं, जब डल झील के किनारे स्पोर्ट्स कारों का जबरदस्त शो हुआ। वो शो पूरी दुनिया ने देखा हमारा कश्मीर कितना आगे बढ़ गया है, अब यहां टूरिज्म के नए रिकॉर्ड्स की चर्चा होती है। और कल जो अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस है ना। वो भी टूरिस्टों के आकर्षण का कारण बनने

वाला है। पिछले साल जैसा अभी मनोज जी ने बताया 2 करोड़ से ज्यादा टूरिस्ट record break यहां हमारे जम्मू कश्मीर में टूरिस्ट आए हैं। इससे स्थानीय लोगों के रोजगार में गति आती है, तेजी आती है, रोजगार बढ़ता है, आय बढ़ती है, कारोबार का विस्तार होता है।

साथियों, मैं दिन रात यही करता रहता हूं। मेरे देश के लिए कुछ न कुछ करूं। मेरे देशवासियों के लिए कुछ न कुछ करूं। और मैं जो भी कर रहा हूं, नेक नीयत के साथ कर रहा हूं। मैं बहुत ईमानदारी से समर्पण भाव से जुटा हूं, ताकि कश्मीर की पिछली पीढ़ियों ने जो भुगता, उससे बाहर निकलने का रास्ता बनाया जा सके। दूरियां चाहे दिल की रही हों या फिर दिल्ली की हर दूरी को मिटाने के लिए हम हर कोशिश कर रहे हैं। कश्मीर में जम्हूरियत का फायदा, हर इलाके, हर परिवार को मिले हर किसी की तरक्की हो, इसके लिए हम सबको मिलकर के काम करना है। केंद्र सरकार से पैसे पहले भी आते थे। लेकिन आज केंद्र सरकार से आई हुई पाई-पाई आपकी भलाई के लिए खर्च होती है। जिस काम के लिए पैसा दिल्ली से निकला है, उसी काम के लिए वो पैसा लगे और उसका परिणाम भी नजर आए, ये हम पक्का करते हैं।

जम्मू-कश्मीर के लोग लोकल लेवल पर अपने नुमाइंदे चुनें, उनके जरिए आप समस्याओं के समाधान के रास्ते खोजें, इससे बेहतर और क्या होगा? इसलिए अब असेंबली इलेक्शन की तैयारी भी शुरु हो चुकी है। वो समय दूर नहीं, जब आप अपने वोट से जम्मू कश्मीर की नई गवर्नमेंट चुनेंगे। वो दिन भी जल्द आएगा, जब जम्मू और कश्मीर फिर से राज्य के रूप में अपना फ्यूचर और बेहतर बनाएगा।

साथियों, थोड़ी देर पहले ही यहां जम्मू-कश्मीर के डेवलपमेंट से जुड़े 1500 करोड़ रुपए से अधिक के प्रोजेक्ट्स का शुभारंभ हुआ है। खेती और इससे जुड़े सेक्टर के लिए भी 1800 करोड़ रुपए के प्रोजेक्ट शुरु हुए हैं। मैं इन प्रोजेक्ट्स के लिए जम्मू और कश्मीर की अवाम को बहुत-बहुत बधाई देता हूं। मैं यहां राज्य प्रशासन को भी बधाई दूंगा कि वो सरकारी नौकरियों में भी तेजी से भर्तियां कर रहे हैं। बीते 5 सालों में करीब 40 हजार सरकारी भर्तियां की गई हैं। अभी करीब दो हजार नौजवानों को तो इस कार्यक्रम में ही Employment Letter मिला है। कश्मीर में हो रहे लाखों करोड़ रुपए के निवेश से भी स्थानीय युवाओं के लिए हजारों नई नौकरियां बन रही हैं।

जम्मू कश्मीर में नए-नए नेशनल हाईवे बन रहे हैं, एक्सप्रेस वे बन रहे हैं। कश्मीर घाटी रेल कनेक्टिविटी से भी जुड़ रही है। चिनाब नदी पर बने दुनिया के सबसे ऊंचे रेलवे ब्रिज की तस्वीरें देखकर तो हर भारतवासी गर्व से भर उठता है। नॉर्थ कश्मीर की गुरेज घाटी को पहली बार बिजली ग्रिड से जोड़ा गया है। कश्मीर में एग्रीकल्चर हो, हॉर्टिकल्चर हो, हथकरघा उद्योग हो, स्पोर्ट्स हो या फिर स्टार्ट-अप्स सभी के लिए अवसर बन रहे हैं।

भाइयों और बहनों, रोड और रेल कनेक्टिविटी हो, एजुकेशन और हेल्थ से जुड़ा इंफ्रास्ट्रक्चर हो, या फिर बिजली-पानी हर मोर्चे पर जम्मू-कश्मीर में बड़े पैमाने पर काम हो रहा है। पीएम ग्रामीण सड़क योजना के तहत यहां हजारों किलोमीटर नई सड़कें बनी हैं। जम्मू कश्मीर में नए-नए नेशनल हाईवे बन रहे हैं, एक्सप्रेस वे बन रहे हैं। कश्मीर घाटी रेल कनेक्टिविटी से भी जुड़ रही है। चिनाब नदी पर बने दुनिया के सबसे ऊंचे रेलवे ब्रिज की तस्वीरें देखकर तो हर भारतवासी गर्व से भर उठता है। नॉर्थ कश्मीर की गुरेज घाटी को पहली बार बिजली ग्रिड से जोड़ा गया है। कश्मीर में एग्रीकल्चर हो, हॉर्टिकल्चर हो, हथकरघा उद्योग हो, स्पोर्ट्स हो या फिर स्टार्ट-अप्स सभी के लिए अवसर बन रहे हैं। और मैं अभी ऊपर स्टार्टअप की दुनिया से जुड़े नौजवानों से मिलकर के आया हूं। मुझे आने में देरी इसलिए हुई, क्योंकि मैं उनको इतना सुनना चाहता, उनके पास इतना कुछ कहने को था, इनका आत्मविश्वास मेरे मन को बड़ा उत्साहित कर रहा था और अच्छी पढ़ाई छोड़कर के, अच्छी करियर छोड़कर के अपने आप को स्टार्टअप में झोंक दिया है यहां के नौजवानों ने और उन्होंने करके दिखाया। मुझे बता रहे थे किसी ने दो साल पहले चालू किया, किसी ने तीन साल पहले चालू किया और आज एक नाम बना दिया है। और उसमें हर प्रकार के स्टार्टअप्स हैं। आयुर्वेद से जुड़े विषय भी हैं, खानपान से जुड़े विषय हैं। वहां पर Information Technology के नए पराक्रम दिखते हैं, Cyber Security की चर्चा नजर आ रही है। Fashion Design है, Tourism को बल देने वाला Home Stay की कल्पना है। यानि शायद इतने क्षेत्रों में जम्मू कश्मीर में स्टार्टअप्स हो सकते हैं और मेरे जम्मू कश्मीर के नौजवान स्टार्टअप की दुनिया में अपना डंका बजा रहे हो, ये देखने का बहुत खुशी का पल था मेरे लिए दोस्तों। मैं इन सब नौजवानों को बधाई देता हूं।

साथियों, आज जम्मू कश्मीर स्टार्ट-अप्स, स्किल डेवलपमेंट और स्पोर्ट्स का एक बड़ा हब बन रहा है। और मेरा मत है, जम्मू कश्मीर के पास स्पोर्टस की टैलेंट जो है ना अद्‌भुत है। और अब मुझे पक्का विश्वास है जो हम infrastructure तैयार कर रहे हैं, वो चीज की व्यवस्था कर रहे हैं, नए-नए खेलों को बढ़ावा दे रहे हैं। बहुत बड़ी मात्रा में international खेलों की दुनिया में जम्मू कश्मीर के बच्चों का नाम रोशन होगा। और जम्मू कश्मीर के बच्चे मेरे देश का नाम रोशन करके रहेंगे, ये मैं अपनी आंखों से

देख रहा हूं।

साथियों, यहां खेती से जुड़े सेक्टर में मुझे बताया गया करीब 70 स्टार्ट अप्स बने हैं। यानि agriculture sector का revolution मैं देखता हूं। और ये नई generation का agriculture को modernize करने का ये जो अपमू है। Global market की तरफ नजर करने का उनका दृष्टिकोण है, ये वाकई बड़ा प्रेरणा देने वाला है। बीते कुछ सालों में ही यहां 50 से ज्यादा डिग्री कॉलेज बने हैं। ये आंकड़ा छोटा नहीं है। अगर पिछले आजादी के बाद के 50-60 साल देखें और ये 10 साल देखें तब आसमान जमीन का अंतर नजर आएगा। पॉलिटेक्निक में सीटें बढ़ने से यहां के नौजवानों को नई स्किल्स सीखने का मौका मिला है। आज जम्मू कश्मीर में IIT है, IIM है, AIIMS बन रहा हैं, अनेकों नए मेडिकल कॉलेज बने हैं। टूरिज्म और हॉस्पिटैलिटी सेक्टर में लोकल लेवल पर स्किल्स भी तैयार की जा रही हैं। टूरिस्ट गाइड्स के लिए ऑनलाइन कोर्स हों, स्कूल-कॉलेज-यूनिवर्सिटीज में युवा टूरिज्म क्लब की स्थापना हो, ये सब काम आज कश्मीर में बहुत बड़ी मात्रा में हो रहे हैं।

साथियों, जम्मू-कश्मीर में हो रहे विकास कार्यों का बहुत ज्यादा लाभ कश्मीर की बेटियों को मिल रहा है। सरकार, सेल्फ हेल्प ग्रुप्स से जुड़ी बहनों को टूरिज्म, आईटी और दूसरी स्किल्स की ट्रेनिंग देने का अभियान चला रही है। दो दिन पहले ही देश में 'कृषि सखी' कार्यक्रम की शुरुआत की गई है। आज जम्मू-कश्मीर में भी 1200 से ज्यादा बहनें, 'कृषि सखी' के रूप में काम कर रही हैं। नमो ड्रोन दीदी योजना के तहत भी जम्मू-कश्मीर की बेटियों को ट्रेनिंग दी जा रही है। वो पॉयलट बन रही हैं। मैंने कुछ महीनों पहले जब दिल्ली में इस योजना का शुभारंभ किया था, तब जम्मू कश्मीर की ड्रोन दीदियाँ भी उसमें शामिल हुई थीं। ये सारे प्रयास कश्मीर की महिलाओं की आय बढ़ा रहे हैं, उन्हें रोजगार के नए अवसर दे रहे हैं। देश की 3 करोड़ बहनों को लखपति दीदी बनाने के लक्ष्य की ओर हमारी सरकार तेजी से आगे बढ़ रही है।

भाइयों और बहनों, टूरिज्म और स्पोर्ट्स में भारत दुनिया की एक बड़ी पावर बनने की तरफ आगे बढ़ रहा है। इन दोनों सेक्टर्स में जम्मू कश्मीर के पास बहुत सामर्थ्य है। आज जम्मू कश्मीर के हर जिले में शानदार स्पोर्ट्स इंफ्रास्ट्रक्चर बनाया जा रहा है। यहां खेलो इंडिया के करीब 100 सेंटर्स बनाए जा रहे हैं। जम्मू कश्मीर के करीब साढ़े 4 हजार नौजवानों को नेशनल और इंटरनेशनल कंपीटिशन के लिए ट्रेन किया जा रहा है। ये आंकड़ा बहुत बड़ा है। विंटर स्पोर्ट्स के मामले में तो जम्मू कश्मीर एक प्रकार से भारत की कैपिटल बनता जा रहा है। इसी फरवरी में ही यहां जो चौथा खेलो इंडिया विंटर गेम्स का आयोजन हुआ, उसमें देशभर के 800 से ज्यादा खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया है। ऐसे आयोजनों से भविष्य में यहां इंटरनेशनल स्पोर्ट्स इवेंट्स के लिए नई संभावनाएं बनेंगी।

साथियों, ये नई ऊर्जा, ये नई उमंग, और इसके लिए आप सब मुबारक के अधिकारी हैं। लेकिन अमन और इन्सानियत के दुश्मनों को जम्मू-कश्मीर की तरक्की पसंद नहीं है। आज वो आखिरी कोशिश कर रहे हैं कि जम्मू-कश्मीर का विकास रुक सके, यहां अमन-चौन स्थापित ना हो। हाल ही में जो आतंक की वारदातें हुई हैं, उन्हें सरकार ने बहुत गंभीरता से लिया है। गृहमंत्री जी ने जम्मू-कश्मीर प्रशासन के साथ मिलकर सारी व्यवस्थाओं को री-व्यू किया है। मैं आपको आश्वस्त करता हूं कि जम्मू-कश्मीर के दुश्मनों को सबक सिखाने में कोई कोर कसर बाकी नहीं छोड़ेंगे। जम्मू कश्मीर की नई पीढ़ी, स्थाई शांति के साथ ही जिएगी। जम्मू-कश्मीर ने तरक्की का जो रास्ता चुना है, उस रास्ते को हम और मजबूत करेंगे। एक बार फिर आप सभी को इस अनेक विविध नए प्रोजेक्ट्स के लिए मैं बहुत-बहुत देता हूं और कल पूरे विश्व को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का संदेश श्रीनगर की धरती से जाएगा, इससे बड़ा सुहाना अवसर क्या हो सकता है। विश्व मंच पर मेरा श्रीनगर फिर से एक बार चमकेगा। मेरी आप सबको बहुत बहुत शुभकामनाएं। बहुत-बहुत धन्यवाद!

स्मरण

अग्निकुंड में खिला गुलाब

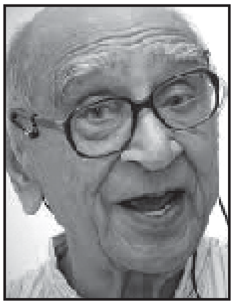

नारायण देसाई

गांधी सेवासंघ रचनात्मक कार्यकर्ताओं की संस्था थी, फिर भी कोई खास रचनात्मक कार्य रोज-ब-रोज करने की उसकी जिम्मेदारी नहीं थी। उस संस्था का मुख्य काम था कार्यकर्ताओं की विचारशुद्धि और परस्पर स्नेह सम्बन्ध को दृढ़ करना। उसके सदस्यों में से बहुशः आजीवन रचनात्मक कार्यकर्ता जरूर थे, परन्तु गांधी सेवा संघ का मुख्य कार्य तो उसके वार्षिक सम्मेलन में ही होता था। गांधीजी के प्रवचन, कार्यकर्ताओं की एक-दूसरे से होने वाली मुक्त-चर्चा और विचार-विनिमय, साथ ही रोज सुबह सबका मिल कर किया गया श्रमकार्य तथा अनौपचारिक स्नेह मिलन, इन सबसे गांधी सेवा संघ के सम्मेलन स्मरणीय थे। ऐसे सम्मेलनों में 1937 के अप्रैल को कर्नाटक के बुदली गाँव में हुआ कुमरी आश्रम का सम्मेलन और 1938 के मार्च का उड़ीसा के डेलांग का सम्मेलन, ये दोनों, अलग-अलग कारणों से महादेवभाई के लिए विशेष स्मरणीय रहे थे। कर्नाटक सम्मेलन उसकी मधुर स्मृतियों से और उड़ीसा का उसकी करुण स्मृतियों से।

कर्नाटक सम्मेलन बुदली में बनाई गई पत्तों की झोपड़ियों में करना तय हुआ था। लेकिन अकल्पित बारिश के कारण स्थान बदलना पड़ा और कुमरी गाँव के आश्रम के पक्के मकानों में सम्मेलन रखा गया। प्राकृतिक दृश्य अचानक पलट गया था। सूखी, गेरूआ रंग की धूल की जगह छोटे-छोटे झरनों जैसा पानी जगह-जगह बहने लगा। सम्मेलन के मूल स्थान से कुमरी जाने के रास्ते में प्रतिनिधियों को दो-तीन बार ऐसे क्षिप्र-गति झरने पार करने पड़े। आश्रम के आसपास और गाँव में और मकानों पर भी जंगली गुलाब की लताएँ थीं। उसके ऊपर खिले हुए गुलाब, शायद 'जंगली' होने से ही, भारी वृष्टि का सामना करते हुए भी अपना गौरव बढ़ा रहे थे।

कर्नाटक सम्मेलन बुदली में बनाई गई पत्तों की झोपड़ियों में करना तय हुआ था। लेकिन अकल्पित बारिश के कारण स्थान बदलना पड़ा और कुमरी गाँव के आश्रम के पक्के मकानों में सम्मेलन रखा गया। प्राकृतिक दृश्य अचानक पलट गया था। सूखी, गेरूआ रंग की धूल की जगह छोटे-छोटे झरनों जैसा पानी जगह-जगह बहने लगा।

इस सम्मेलन में महादेवभाई के लिए दो विशेष स्मरणीय घटनाएँ घटीं। उनकी बहन निर्मला का विवाह हुआ और छोटे भाई परमानन्द के तथा पुत्र नारायण के यज्ञोपवीत संस्कार हुए। उसी मंडप में गांधीजी की पौत्री मनुबहन हरिलाल गांधी का भी विवाह हुआ। कन्याओं के माता-पिता के तौर पर गांधीजी कस्तूरबा के साथ और महादेवभाई दुर्गाबहन के साथ उपस्थित थे। उसी दिन सुबह महादेवभाई ने नारायण को और परमानन्द को

गायत्री का मुखपाठ करवाया था। उसी दिन गीता के बारहवें अध्याय के श्लोकों का अर्थ समझाया था। चारों संस्कार बहुत ही सादगी से सम्पन्न हुए। दोनों दूल्हे–श्री सुरेन्द्र मशरूवाला (मनु बहन के पति) और श्री ईश्वरलाल देसाई (निर्मला के पति) शायद बिल्कुल अकेले ही आये थे। पूरी विधि का खर्च नगण्य हुआ था। गांधीजी ने दोनों दम्पतियों को तथा दोनों 'द्विजों' को 'आश्रम भजनावली' तथा 'अनासक्ति योग' की एक–एक प्रति भेंट दी थी। खूबी की बात यह थी कि इन बारहों पुस्तिकाओं में प्रत्येक में अलग–अलग वाक्य लिख कर गांधीजी ने अपने दस्तखत किये थे। नारायण को दी हुई 'भजनावली' में गांधीजी ने लिखा था, 'इन सब भजनों को, अर्थ समझ के कंठस्थ करना।' और 'अनासक्ति योग' में लिखा था, 'तुम्हारे लिए जो आशाएँ रखी हैं, उन्हें पूरा करना। नारायण मानता है कि उसकी तरह दूसरों ने भी (पाँचों ने) गांधीजी के आशीर्वचनों को जिन्दगी भर स्मरण रखा होगा। 'अनासक्ति योग' पुस्तिका में लिखे हुए वाक्य ने नारायण के जीवन में अलग–अलग मोड़ों पर नई प्रेरणा दी है, वैसा ही दूसरों का भी अनुभव होगा। व्यक्ति को व्यक्ति के तौर पर गौरवपूर्ण स्थान देकर गांधीजी उसके मनुष्यत्व को ऊपर उठाने में मदद करते थे। इस अवसर पर नवदम्पति और बटुकों को सम्बोधन करके गांधीजी ने कुछ बोधवचन भी सुनाये थे।

परन्तु उड़ीसा डेलांग गाँव में जिसका अधिवेशन था, उस सम्मेलन में जो घटना हुई, उससे महादेवभाई के सब मित्र और साथी हिल उठे थे, हैरान रहे गये थे।

वह सम्मेलन पुरी जिले में, यानी जगन्नाथपुरी के पास ही होनेवाला था। यह जानकर उस साल कस्तूरबा, दुर्गाबहन, लक्ष्मीदास आसर और उनकी पत्नी वेलाबहन, खेर साहब की माताजी, आदि लोग सम्मेलन में आये थे। सम्मेलन बहुत अच्छा रहा। उसमें उपस्थिति अच्छी थी ही। परन्तु गांधीजी की उपस्थिति के कारण दूर–दूर से आये हुए लोगों की जो भीड़ होती थी, वह भी असाधारण थी। दर्शनार्थियों के जमा होने के लिए एक मैदान अलग रखा गया था, जिसके एक छोर पर छोटा–सा मंच तैयार किया गया था। रोज भोर होते–होते मैदान दर्शनार्थियों से भर जाता था। रोज एक बार सुबह और एक बार शाम को गांधीजी को, दूसरा काम छुड़ाकर मंच पर लाया जाता था। लोग यों तो व्यवस्थित रहते थे, परन्तु गांधीजी के आने के बाद स्वयंसेवक किसी को खड़ा नहीं होने देते थे। हजारों की भीड़ शान्त बैठी रहती थी। गांधीजी मंच पर बैठकर सबको नमस्कार करते थे, तो लोग भी नमस्कार करते थे। कोई–कोई हाथ जोड़ कर बैठे रहते थे। प्रवचन की तो बात ही क्या, दो शब्दों का उद्‌बोधन तक गांधीजी नहीं करते थे। न लोग 'गांधीजी की जय' का परिचित नारा ही लगाते थे। थोड़ी देर बैठकर गांधीजी अपनी कुटिया में चले जाते थे, तब लोग चुपचाप उठ कर अपने घरों की ओर जाते थे। फिर से शाम होने से दो–तीन घंटों पहले भीड़ जमने लगती थी, और सुबह का क्रम दोहराया जाता था। कुछ बोले बिना, मात्र दर्शन से एक दूसरे को सिर्फ निहारते हुए कोई अजीब–आन्तरिक पुष्टि प्राप्त कर लेने वाले ये लोग थे और यह महात्मा थे। उड़ीसा की ग्रामीण जनता की यह नीरव भक्ति देखने वालों को चकित कर देती थी।

सम्मेलन के कार्यकर्ताओं के सामने तो गांधीजी प्रवचन करते ही थे। कभी–कभी आम जनता को भी सम्बोधित करते थे। उसमें एक दिन खादी ग्रामोद्योग की प्रदर्शनी के उद्‌घाटन में गांधीजी ने हरिजनों के मन्दिर प्रवेश पर विशेष जोर रखा था। कहा था :

'जगन्नाथ का मन्दिर तो भारतवर्ष में सबसे ज्यादा विख्यात मन्दिर है। क्योंकि वहाँ मानव–मानव के बीच, मानव के ही बनाये भेदभाव मिट गये हैं, ऐसा माना जाता है। ब्राह्मण और हरिजन एक ही लाईन में भगवान के दर्शन के लिए खड़े रहते थे, इतना ही नहीं, प्रसाद तक एक दूसरे के हाथ से लेकर खाते थे। पर उसकी यह प्रतिष्ठा आज नहीं रही है। क्योंकि आज हरिजनों को उस महामन्दिर में आने नहीं दिया जाता है। मैंने सोचा, जब तक जगन्नाथ की नजर के सामने इन भेदों को माना जाता है, तब तक जगन्नाथ मेरा नाथ नहीं है। वह उनका नाथ है जो इसके नाम का अनुचित फायदा उठाते हैं, जो हरिजनों को बहिष्कृत रखते हैं। यह जगत का नाथ हर्गिज नहीं है। मेरी इच्छा है कि उस मन्दिर की पुरानी प्रतिष्ठा फिर से जीवन्त बनायी जाये। उस इच्छा को पूरी करने में आप सबको मुझे मदद करनी है। जगन्नाथ मन्दिर के द्वार जब तक हरिजनों के लिए बन्द हैं, वे मेरे लिए भी बन्द ही हैं।'

इसके बाद की करुणकथा महादेवभाई के शब्दों में ही देखें। 10 अप्रैल, 1938 के हरिजन बंधु में उन्होंने अग्रलेख में लिखा :

'कथा करुण और वैयक्तिक है। गांधी सेवा संघ के वार्षिक अधिवेशन के लिए मेरी पत्नी शायद ही जाती है। इस बार पुरी जाने के हेतु से आयी थी, ऐसा मुझे पता चला। गांधीजी ने पहले ही दिन मुझसे कहा था कि उसे पुरी भेजने की व्यवस्था मुझे करनी चाहिये और लोग भी जानेवाले थे ही। मुझे पुरी कुछ नापसंद थी, इसलिए मैं कुछ उदासीन था। पुरी जा कर मन्दिर में जाना चाहिये या नहीं, इस बात की चर्चा होनी चाहिये थी, मगर नहीं हुई। गांधीजी ने तो प्रदर्शनी के उद्‌घाटन में ही कहा था कि वह मन्दिर जब तक हरिजनों के लिए नहीं है, तब तक जगन्नाथ जगत के नाथ नहीं हैं, सिर्फ मन्दिर की छाया में पेट भरनेवाले 'पंडों' के नाथ हैं इन सार्वजनिक वचनों (जो मेरी पत्नी सहित सबने सुने थे) के बाद, पुरी जानेवालों को विशेष सलाह देने की जरूरत मुझे नहीं लगी। हाँ, मुझे कुछ डर जरूर था कि फिर भी मेरी पत्नी मन्दिर में जायेगी। उसने कभी अस्पृश्यता को अपनाया नहीं है। हरिजनों की यथाशक्ति सेवा करती है। दस वर्ष से उसने घर में हरिजनों को प्रवेश दिया है। अब अगर मन्दिर प्रवेश में उसे श्रद्धा हो तो उस श्रद्धा को मैं क्यों हिलाऊँ ? ऐसी भी मेरी वृत्ति थी। जब गांधीजी ने बार-बार सबको पुरी भेजने की व्यवस्था करने को कहा, तब मैंने सोचा कि अपनी अपार अहिंसा से प्रकट होने वाली उदारता के कारण गांधीजी ने सोचा होगा कि जिसे मन्दिर में जाना हो, भले जाये। उन्हीं गांधीजी ने जुलू बगावत के समय गोरे सैनिकों को अपने ही हाथ से शराब दी ही थी न? उन्हीं गांधीजी ने अपने टेबल पर भोजन लेने वाले गोरों को मांस परोसा ही था न? इसके साथ-साथ एक धारणा यह भी थी कि मणिलाल गांधी साथ हैं, तो मन्दिर में न जाने के उनके निर्णय को सब मान लेंगे। कस्तूरबा मन्दिर में जायेगी ऐसा मुझे भय नहीं था। और वे न गयीं, तो और महिलाएँ भी नहीं जायेंगी ऐसा भी मैं मानता था। ऐसे मिश्रित भाव मेरे मन में थे। सब पुरी गये। मेरी पत्नी मन्दिर में गयी और दो तीन बहनें गयीं और बा भी गयीं। मणिलालभाई बीमार हो गये और संघ से कुछ अलग हो गये मन्दिर प्रवेश के विषय में उनका मार्गदर्शन करने के लिए साथ नहीं रह पाये। संघ में से कुछ लोग बाहर रहे। मेरा छोटा बेटा भी उन बाहर रहनेवालों में था। उसने पंडों का सामना किया, 'हिन्दू' में 'हरिजन' भी शामिल है ऐसा समझाता रहा और दृढ़ मन से अन्दर नहीं गया।'

'सोमवार शाम को सब लौटे, तब गांधीजी को पूरी बात का पता चला। पहले तो वे मुसकाये। कहने लगे, 'महादेव, हम तीनों को तो (हरिजन प्रवृति से) अलग ही हो जाना पड़ेगा।' परन्तु उनकी मुस्कान तीव्र वेदना को ही ढक रही थी। उनकी वेदना बढ़ रही थी। रात को उन्हें नींद नहीं आयी। और सुबह रक्तचाप इतना बढ़ गया था कि सबको चिन्ता हो गई। मुझे बुलाया, दुर्गा को बुलाया, बा को भी बुलाया। सबसे सवाल किये। उनकी मन:स्थिति जानने के कारण मैं थोड़ा-सा समझाने लगा। परन्तु उनके दिल की व्याकुलता तनिक भी कम नहीं हुई-बढ़ती ही रही। कहने लगे, 'यह प्रकरण दुखद बन रहा है। महादेव, तुमने भारी गफलत की। तुमने अपने आपसे अन्याय किया, मुझसे अन्याय किया, दुर्गा से अन्याय किया। तुम्हारा धर्म था कि इन लोगों को दुबारा सारा इतिहास बताते। पुरी में मेरा क्या हाल हुआ था, वह कहना चाहिये था, सनातनी मेरा कैसे बुरा हाल करना चाहते थे, यह भी बताना चाहिये था। मन्दिर हरिजनों के लिए जब-तक न खुले, तब तक उसका त्याग करने की मेरी प्रतिज्ञा और समाज सुधारकों को मेरी दी हुई सलाह, ये सब बातें बतानी चाहिए थीं। वह सुनने के

बाद भी अगर वह जाना चाहती, तो मेरे पास ला सकते थे। अगर मेरा भी न माना होता, तो उन्हें मन्दिर में जाने दिया होता। जबरदस्ती का तो कोई सवाल ही न था।'

'गांधीजी की सेहत ऐसी नहीं थी कि मैं उनसे चर्चा करूँ। शायद चर्चा से उनकी व्याकुलता बढ़ जाती-हालाँकि आज मुझे ऐसा दिखता है कि चर्चा होती तो उनके मन का उद्वेग कुछ कम होता और हम दोनों ने जिस यातना का अनुभव किया, वह कम हो जाती। पुरी जाने का आग्रह गांधीजी ने मुझे भी किया था। मैंने स्पष्ट कहा था कि मुझे पुरी के बारे में कोई उत्साह नहीं है। उस समय गांधीजी ने कहा होता कि 'उत्साह नहीं तो क्या हुआ ? तुम्हें मन्दिर में थोड़े ही जाना है ? यह काम तो हरिजनों की ओर से प्रचार के लिए करना है,' तो सारी यातना से मुक्ति मिल जाती परन्तु जो अवश्यंभावी था उसे जगन्नाथ भी कैसे मिथ्या कर सकते थे ?

'गांधीजी का दुख मैं समझ गया। शाम को उससे भी ज्यादा दुख अनुभव हुआ। दूसरे दिन सुबह मैंने गांधी सेवा संघ के सामने अपनी वेदना व्यक्त की। अपनी शरम का बयान किया। गांधीजी ने शायद सेवा संघ के सदस्यों से कुछ न कहने का इरादा रखा होगा। परन्तु प्रार्थना के समय मैंने अपनी ओर से इस विषय में बात की, इसलिए उन्होंने भी ता. 30 को अपनी वेदना संघ के सामने रखी :

'महादेव का और मेरा निकट सम्बन्ध आप सब जानते हैं। उसने ही आपको अपनी बात आज सुबह बतायी, तब मुझे लगा कि मैं भी आपको अपनी बात सुनाऊँ। 'जो किस्सा बन गया, उसके आधार पर मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि आप कोई भी रचनात्मक कार्य करें-चाहे वह चर्खे का हो, या ग्रामोद्योग हो या अस्पृश्यता निवारण-सब कार्य सत्य और अहिंसा के प्रयोग कहाँ तक हो सकते हैं, यह बताने के लिए हैं। सत्य और अहिंसा के प्रयोग के द्वारा स्वराज तक पहुँचने के साधन रचनात्मक कार्य हैं। इसमें अस्पृश्यता निवारण अहिंसा का तीव्र स्वरूप है। अगर अस्पृश्यता नहीं हट सकती है, तो बेहतर है कि हिन्दू धर्म ही मिट जाये। मेरी यह प्रार्थना हमेशा रही है। सब अहिंसाधर्मियों की यह प्रार्थना होनी चाहिये। इसी बात को खयाल में रखकर मैंने सालभर हरिजन यात्रा की। उस सारी यात्रा का केन्द्र था हरिजन मन्दिर प्रवेश। हरिजन मन्दिर प्रवेश चाहते हैं या नहीं यह सवाल नहीं है-हालाँकि त्रावनकोर ने दिखाया है कि वे चाहते तो हैं ही। पर जो भी हो, हमारे लिए तो वह धर्म बना है। इसलिए मैं गला फाड़ कर कहता रहा कि जिस मन्दिर में हरिजन को प्रवेश न हो, वहाँ हम नहीं जा सकते हैं। फिर भी ऐसे ही मन्दिर में मेरी पत्नी गयी और जिन्हें मैंने अपनी बेटियाँ माना हैं वे महिलाएँ भी गयीं, यह मुझसे कैसे सहन हो सकता था ? जब मैंने सुना कि आश्रम की बहनें भी मन्दिर में गयीं, तो मैं निस्तेज बन गया। मेरा रक्तचाप बहुत ज्यादा निकला। परन्तु उस यंत्र से कहीं ज्यादा मेरा मन जानता है कि मुझ पर क्या बीत रही है। मुझे जो सदमा पहुँचा है उससे दिमाग की नस टूट जायेगी तो किसी को आश्चर्य नहीं होना चाहिये। गीता की अनासक्ति में विश्वास रखता हूँ, फिर भी ऐसी बातों का असर मुझ पर न पड़े ऐसा मैं नहीं चाहता हूँ। अनासक्ति का वर्णन तो पूर्ण पुरुष की स्थिति का वर्णन है। हम जैसे अगर ऐसी परिस्थिति में विचलित नहीं होते हैं, तो मूढ़ बन सकते हैं। हम तो सात्त्विकता तक पहुँचना चाहते हैं और सात्त्विकता प्राप्त करने के लिए दूसरे का दुख या दूसरे का अधर्म देख कर सदमा पहुँचे यह आवश्यक बनता है। जो तीन बहनें गयीं उनका दोष कम था। मेरा दोष ज्यादा था, और मुझसे भी ज्यादा दोष महादेव का। वह मानता था कि मैं इन बहनों की श्रद्धा को नहीं हिलाना चाहूँगा। परन्तु उसे मेरा दुख समझना चाहिये। उनके कार्य के सामाजिक परिणामों का विचार करना चाहिये। इन बहनों के क़दम से मैं निस्तेज बन गया। मन्दिर में न गयी होतीं तो मैं पाँच गज ऊँचा उठा होता। पर इस क़दम से तो नीचे गिरा हूँ। जिस शक्ति से मैं काम करता हूँ उस शक्ति का ह्रास हुआ महसूस होता है। उन लोगों का तो अज्ञान ही था इसमें कोई शक नहीं है। परन्तु उन्हें अज्ञानी रहने देनेवाले कौन ? हम ही न? हमारा धर्म है कि अहिंसा से, प्रेम से उन्हें समझाएँ। उनके अज्ञान को दूर न करने में अहिंसा नहीं है, हिंसा है, धर्म नहीं, अधर्म है।

'आज हरिजन भी मानते हैं कि हम उनसे छलना कर रहे हैं। क्यों न मानेंगे ? उनको जहाँ प्रवेश न हो, ऐसे स्थानों का हम उपयोग करते रहें, मन्दिरों में जाते रहें, तो वे कैसे यक़ीन करेंगे कि हमने उन्हें अपनाया है? उनको तभी विश्वास दिला सकेंगे, जब हमारे माँ-बाप, पति-पत्नी,

रिश्तेदार सबने अस्पृश्यता सम्पूर्ण रूप से छोड़ दी हो।'

पहले उद्धृत किये लेख में ही आगे चलकर महादेवभाई कहते हैं :

'अपनी दशा का क्या वर्णन करूँ? मैं इस प्रवचन से ठंडा होने की बजाय और भी गरम हुआ। मुझे लगा कि अगर अस्पृश्यता जैसे विषय में मेरी ऐसी गम्भीर गलतफहमी हो, तो गांधीजी के विचार औरों को समझाने वाला मैं कौन? अगर बापू को, चाहे अनजाने में भी, इतना त्रस्त मैंने किया, तो मैं दूसरों को कैसे रोक सकता हूँ? दूसरी ओर से मुझे ऐसा भी लग रहा था कि गांधीजी का क्लेश बहुत अधिक है। अपने को निस्तेज बना हुआ वे क्यों मानें? सूरज के चारों ओर बादल छा जायें, उससे सूरज थोड़े ही निस्तेज होता है? फिर भी मुझे ऐसा तो लगा ही कि 'चल जीव, तेरा स्थान बापू के पास नहीं है।' मैंने सारी रात जाग कर काटी और सुबह चिट्ठी लिख कर बापू से प्रार्थना की कि मुझे विदा दे दें। उससे उनको और भी दुख पहुँचा।'

गांधीजी से विदा माँगती हुई चिट्ठी का गांधीजी ने बहुत ही तेज उत्तर दिया : 'सुबह-सुबह यह क्या भेंट मुझे देते हो ? अगर एक गलती फौरन नहीं सुधारी जाती है, तो लगातार भूल होती रहती है। परन्तु, मैं हजारों गलतियाँ सहन करूँगा, तुम्हारा त्याग नहीं कर पाऊँगा। भक्तों के हाथ मरना अच्छा है, अभक्तों के हाथ बचना भी मरने के समान है। इसलिए तुम्हारे जाने का तो कोई सवाल ही नहीं है।

'अब तुम्हारी गलतियों का हिसाब करें।

'दुर्गा या वेलाबहन को मैं दोषी मानता ही नहीं हूँ। बा ने तो प्रायश्चित्त कर लिया-अनशन करके नहीं, अति सरलता से अपने दोष को मेरे सामने स्वीकार करके। पचपन साल के पवित्र सम्बन्ध कल उसने पवित्रतर बनाये।

'और तुम? दुर्गा के प्रति अंधप्रेम या अपनी लापरवाही के कारण तुमने उसे अधर्म के मार्ग पर जाने दिया। फिर जब मुझे दुख हुआ तब बिना विचार किये, अनशन किया। अविचार या कुविचार का निवारण अनशने से नहीं, सुविचार से होता है। जब मैंने अनशन की बात सुनी, तब तुम्हें सतर्क किया, फिर भी तुमने अनशन नहीं छोड़ा। तुम्हें सलाह दी कि अनशन छोड़ कर कुछ विचार करो, वह भी तुमने नहीं किया। कल मैंने तुमसे अतिशय प्रेम से पूछा कि 'महादेव, मेरा कहना समझते हो न?' तब तुम्हारा जवाब उचित नहीं था। आचरण उससे भी अनुचित। अगर मेरा कल का कथन तुम्हारे दिल में चुभ गया होता, तो तुम आज संघ लेकर पुरी गये होते और तुमने पुरी को हिला दिया होता। मेरा उत्साह भी कम था कि मुझे यह बात पहले नहीं सूझी। तुमने अगर अपना धर्म स्पष्ट समझा होता तो मैं तुम्हें एक दिन की छुट्टी दे देता, और जो भी तुम्हारे साथ आने को तैयार होता तो उसे तुम्हारे साथ भेज देता। आज भी अगर ऐसा हो सके तो करना ठीक रहेगा।

'तुम्हारा कवित्व तुम्हें कई बार अँधेरे में रखता है। तुम्हारे पत्र में कायरता के सिवा कुछ नहीं है। तुम अगर मेरा त्याग करोगे, तो प्यारेलाल रहेगा क्या? प्यारेलाल जायेगा तो सुशीला रहेगी क्या? उसकी असाधारण बुद्धि का मैं क्या करूँ? कभी-कभी मुझे रंज होता है कि मेरे पास उसकी बुद्धि को कहीं जंग न लग जाये। परन्तु तुम्हें यह क्यों नहीं सूझता कि तुम्हारा त्याग करने में उन सबका भी त्याग सहज ही हो जायेगा? सब चले जायेंगे। लीलावती तो पागल हो ही जायेगी। फिर भी अगर यह बात मेरी किस्मत में होगी, तो वह भी सह लूँगा। परन्तु तुम्हें, या उन किसी को, कम-से-कम मैं तो नहीं भगाऊँगा। अगर कोई भागा भी तो उसे रोकने की मुझमें ताक़त कहाँ? इस प्रकरण में तुम अपने अन्तर में काव्य उत्पन्न करो। गलती दिखे तो सुधार लो, गलती न समझ में आये तो मुझसे समझ लो, मेरी भूल दिखे तो मुझे समझाओ। यह समय न रोने का है, न अनशन का। तुम पढ़ना कम करो। विचार ज्यादा करो। जो हुआ है, गहराई से देखो, सुशीला की-प्यारेलाल की बुद्धि का अपने लिए उपयोग करो, अपने ऊपर से भार कम करो। लीलावती से भी काम लेते जाओ। इस क़िस्से से मुझे महसूस होता है कि तुम बाह्य कार्यों के बोझ में दब जाते हो, और विचार कम करते हो। इसलिए अर्थघटन भी कुछ कम ही करते हो।'

इस पत्र से गांधीजी की कठोरता का दर्शन अच्छी तरह होता है, तो कोमलता भी कम नहीं है। जाने-अनजाने में गांधीजी ने एक ऐसी दलील दी है, जो महादेव के लिए ब्रह्मास्त्र बन सके। उन्होंने कहा, 'महादेव के जाने से डॉ. सुशीला भी चली जायेगी।' जब गांधीजी का स्वास्थ्य इतना नाजुक हो तब परिवार की डॉक्टर, डॉ. सुशीला चली जायें, यह महादेवभाई कैसे सह सकते थे ?

महादेवभाई ने गांधीजी से चिट्ठी लिखकर उनका साथ छोड़ने की इजाजत माँगी, उसके बाद तुरन्त ही उन्होंने दुर्गाबहन और नारायण से भी यह बात की। कहने लगे, 'बाबला, हम दीहेण जायेंगे। मैं खेती करूँगा और तुझे पढ़ाऊँगा।' बाबला ने जोर से इन्कार करते हुए कहा, 'जाना है तो आप जाइये, मैं तो यहीं रहूँगा।' दुर्गाबहन ने भी गांधीजी का साथ छोड़ने की बात का हरगिज समर्थन नहीं किया। जिसका हमने पहले जिक्र किया उसी अग्रलेख में महादेवभाई ने यह भी लिखा है कि कौन-सी वैचारिक भूमिका से उन्हें समाधान प्राप्त हुआ। लिखते हैं: 'गांधीजी के बचन उस समय तो बहुत कठोर लगे। मैं बहुत दुखी हो गया था। एक अंग्रेजी पुस्तक में कहा है:

संत संग हो स्वर्ग में रहना, बड़े भाग्य की बात ।
संत संग पृथ्वी पर जीना, है दुष्कर वह बात ।।

यह मुक्तक मुझे बार-बार याद आता था। और मैं परेशान हो रहा था। बार-बार मुझे लग रहा था कि क्या यह सब थोड़ी-सी गलतफहमी से निष्पन्न नहीं हुआ है? शिवजी के विषपान की तरह बड़े-बड़े दोषों को पी जानेवाले बापू एक बुद्धिदोष के कारण क्यों इतने विह्वल हो उठते हैं? ऐसे राई का पहाड़ क्यों किया जा रहा है? भगवान न करें, इसमें से कुछ अमंगल परिणाम आया तो जगत में मैं क्या मुँह दिखाऊँगा? बा क्या मुँह दिखायेंगी? दुर्गा क्या मुँह दिखायेगी?

'ये मेरी उस समय की भावनायें थीं। आज स्वस्थ होकर सोचता हूँ तब लगता है कि बापू की परीक्षा करने वाला मैं कौन? मुझे जो राई लगे, वह उन्हें अगर पहाड़ लगता हो तो क्या? जिस व्यक्ति ने पचास वर्ष तक तंद्रारहित स्थिति में रह कर धर्माचरण किया हो, उसे धर्म की ज्यादा समझ होगी, या राग-द्वेष से भरे हुए मुझे? और उनके साथ रूठना क्या? उनके पास से निकल कर मुझे जाना भी कहाँ है? उन्हें सन्त पद देकर, स्वर्ग के देवता बना बैठने में न्याय है क्या? वे तो अपने को सन्त मानते भी नहीं। अरे, अपने को महात्मा तक नहीं मानते हैं, हमारे जैसे सीधे-सादे मानव ही तो अपने को समझते हैं और इसीलिए उनके साथ रहा जा सकता है। अगर कभी उनका ताप उग्र बन गया तो उससे हम कैसे तंग आ सकते हैं? तंग आकर भागना उचित है, या उस ताप में खाक होने की प्रार्थना उचित है? 'अधिक स्वस्थ मन से विचार करने पर महसूस होता है कि उनके जैसा उग्र सुधारवादी और कौन-सा दृष्टिबिन्दु रख सकता है? उन्होंने हमें कठोर घाव मारे यह सही है-वचन से उन्होंने हमें घायल किया उससे ज़्यादा खुद टूट जाने के क़रीब आकर घायल हुए-पर इन व्रणों से कुछ जागृति भी तो हममें आयी न? गांधी सेवा संघ के अधिवेशन में यों भी अहिंसा की गूढ़ता समझने के प्रयास हो रहे थे-वैसा ही वातावरण बना था। उसमें इस नये प्रयोग से बिजली की भाँति नया प्रकाश फैला। जगत की दृष्टि से नगण्य, परन्तु अपनी दृष्टि से जो बात शुद्ध धर्म रूप बापू को लगी, उसके लिए प्राण तक कुरबान करने की तैयारी बापू ने की है, यह बात सबने फिर एक बार महसूस की। सेवाधर्म तो गहन है ही, परन्तु हरिजनों की सेवा का धर्म उससे भी अधिक गहन है यह भी सबने देखा। उन्होंने अपने आपको संतप्त करके जो ज्योति लगायी, उसकी चिंगारी सबको मिली।'

आज से पच्चीस वर्ष पहले के डेलांग का यह क़िस्सा इस लेखक ने अपनी स्मरण पुस्तक-संत सेवतां सुकृत बाधे में लिखा, तब उसने एक ही टिप्पणी की थी: 'काका के स्वर्गवास के बाद श्री झवेरचंद मेघाणी ने उनको श्रद्धांजलि का लेख लिखा। उसका शीर्षक था 'अग्निकुंड में खिला गुलाब'। वह शीर्षक इस किस्से के लिए शब्दश: उचित सिद्ध होता है।'

संदर्भ

1. गांधीजी नो अक्षर देह-66 पृ 413-414
2. महादेव देसाई हरिजन बंधु-10 अप्रैल, 1938 पृ. 36-37 का सारांश।
3. महादेव देसाई-हरिजन बंधु-10 अप्रैल, 1938 पृ. 37
4. गांधीजी नो अक्षर देह-66 पृ 450-451
5. गांधीजी नो अक्षर देह-पृ 37-38
6. नारावण देसाई- संत सेवतां सुकृत बाधे (दूसरा संस्करण)-पृ.-61

पर्यावरण-विमर्श

‘एन्थ्रोपोसिन’: क्या ‘मानव युग’ आ चुका है?

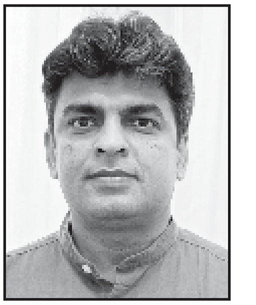

कुशाग्र राजेंद्र

मानव कृषि के विकास के साथ अपने आप को धीरे-धीरे पृथ्वी पर सबसे कामयाब जीव के रूप में स्थापित करने में सफल हुआ है। इस दौरान अपनी बुद्धिमत्ता के बल पर जिस तरह से हमने इस ग्रह पर कब्जा किया है, वह हमारे वर्चस्व के विकृत स्वरुप को दिखाता है, पर इसके लिए समूचे पृथ्वी तंत्र जिसमें जलवायु, जंगल, जमीन, समुद्र, हिमनद, नदी, जैव विविधता यहाँ तक वायुमंडल के ओजोन लेयर शामिल है, भारी कीमत चुका रहे है। चहु ओर मानवीय कार्यकलाप और मानव निर्मित वस्तुएँ दिखाई दे रहे है, जिनमें स्थानीय स्तर के प्रदूषण से लेकर वैश्विक स्तर तक के जलवायु परिवर्तन और बड़े पैमाने पर जीवों का विलुप्त होना प्रमुख हैं। पिछले छह-आठ दशकों में हमने धरती के बुनियादी ताने-बाने के साथ इस कदर छेड़छाड़ की है कि अब वैज्ञानिक भी तकनीकी साक्ष्य तलाशने लगे है कि कही हम अपने ही बनाए एक नए भू-वैज्ञानिक युग एंथ्रोपोसीन या मानव युग में प्रवेश तो नहीं कर चुके हैं?

एंथ्रोपोसीन की तकनीकी समझ के लिए हमें पृथ्वी पर जीवन के क्रमिक विकास और पृथ्वी पर गुजर चुके कालखंड को समझना होगा। हमारी पृथ्वी कम से कम 4.6 अरब साल पुरानी है। इस दौरान करोड़ों-लाखों-हजारों साल के कई विशिष्ट काल खंड बीत चुके हैं, जिसकी पहचान चट्टानों में दर्ज उस वक्त घटित खास घटना या बने चट्टानों या चट्टानों की परतो में दबे खास किस्म के जीवाश्म के अध्ययन के आधार पर चट्टानों का उम्र निर्धारित कर की जाती है। पृथ्वी के उत्पति से अब तक के विकास के काल खंड को भूवैज्ञानिक स्वरुप में क्रमशः इयोन, महाकल्प (इरा), कल्प (पीरिएड), युग (एपॉच) और काल (ऐज) में व्यवस्थित करते हैं। यानि एक इयोन में एक से अधिक महाकल्प, अनेकों कल्प और अनेकानेक युग और काल होते है। दरअसल पृथ्वी के क्रमिक विकास में समय की इन इकाइयों का सम्बन्ध चट्टानों के परत दर परत विकास से भी जुड़ा होता है जिसे स्ट्रेटीग्राफी कहते हैं। यानि अगर हम किसी एक काल की बात करे तो पृथ्वी पर अधिकांश जगह उस काल की एक ही प्रकार के जीवाश्म या चट्टानें मिलेंगी।

एंथ्रोपोसीन की तकनीकी समझ के लिए हमें पृथ्वी पर जीवन के क्रमिक विकास और पृथ्वी पर गुजर चुके कालखंड को समझना होगा। हमारी पृथ्वी कम से कम 4.6 अरब साल पुरानी है। इस दौरान करोड़ों-लाखों-हजारों साल के कई विशिष्ट काल खंड बीत चुके हैं, जिसकी पहचान चट्टानों में दर्ज उस वक्त घटित खास घटना या बने चट्टानों या चट्टानों की परतो में दबे खास किस्म के जीवाश्म के अध्ययन के आधार पर चट्टानों का उम्र निर्धारित कर की जाती है।

पृथ्वी पर अब तक तीन इयोन हेड्यिन (जीवन विहीन पृथ्वी, आधा अरब साल लम्बा), अर्कियन (जीवन की शुरुआत का समय, डेढ़ अरब साल लम्बा) और प्रोटेरोजोइक (कुछ खास प्रकार के आदिम जीव; लगभग दो अरब साल लम्बा) बीत चुका है और चौथा फेनरोजोइक (सबसे ज्यादा जीवन के विविधता वाला) पिछले लगभग 54 करोड़ सालों से चल रहा है। आज से 54 करोड़ साल पहले जैसे ही प्रोटेरिओजोइक से फेनरोजोइक इयोन में बदलाव हुआ उस दौर के चट्टानों में अचानक से अनेको किस्म के जीवाश्म पाए जाने लगे, क्योंकि फेनरोजोइक की शुरुआत में जीवन के लिए अनुकूल परिस्थितियों और वायुमंडल में ऑक्सीजन की प्रचुर मात्रा में होने के कारण जैव विविधता अचानक से बहुत बढ़ गयी थी। वैसे ही जैसे ट्रायेसिक कल्प तक ही डायनोसर के जीवाश्म मिलते हैं, जो इस कल्प की पहचान है। पेलियोजीन कल्प की खासियत है स्तनधारी जीवाश्म है। इस प्रकार हर कल खंड की अपनी एक विशिष्ट पहचान होती है और उसी आधार पर उसका प्रसार निर्धारित कर जिस जगह पर उस घटना या चट्टान के बारे में पहली बार खोजा गया होता है उसी आधार पर कल्प या युग का नामकरण किया जाता है।

आधुनिक काल में मानव जनित हो रहे स्थानीय से लेकर वैश्विक स्तर पर हो रहे बदलाव को देखते हुए, मानव युग यानि 'एन्थ्रोपोसिन' शब्द का उपयोग अस्सी के दशक से ही वैज्ञानिक इयूजिन स्ट्रोमर अनौपचारिक स्तर पर करना शुरू कर चुके थे। पर इसकी सैन्धान्तिक अवधारणा सबसे पहले 1999 में ओजोन परत की खोज से जुड़े डच रसायन विज्ञानी पॉल क्रुतजन,और अमेरिकी जीव विज्ञानी यूजीन पी. स्टोर्मर ने सामने रखा। उन दोनों ने अपने एक लेख 'मानवजाति का भूविज्ञान' में मनुष्य द्वारा ग्रहीय स्तर पर हो रहे बदलाव जिसमे जलवायु परिवर्तन, जंगली आग, जैव विविधता का ह्रास, प्लास्टिक कचड़ा आदि को परिभाषित कर मौजूदा मानव आधारित कालखंड को वर्तमान चल रहे होलोसिन युग से अलग करने की वकालत की। मौजूदा वक्त पृथ्वी के जीवन का होलोसिन युग चल रहा है जो क्वाटरनरी कल्प के तीन युगों में आखिरी युग है। वही क्वाटरनरी कल्प सिनोजोइक महाकल्प और फेनरोजोइक इयोन का हिस्सा है। लगभग 11.7 हजार साल पहले अंतिम हिमयुग की समाप्ति से होलोसिन युग की शुरुआत को निर्धारित किया जाता है, उस दौर में तापमान बढ़ने से कृषि के विकास को सहूलियत मिली और मनुष्य जानवर से धीरे-धीरे मानव बनने लगा। निवर्तमान समय होलोसिन युग के आखिरी ''मेघलायण काल'' का चल रहा है जिसकी शुरुवात विन्दु 4200 साल पहले को मानते है जब समूचा विश्व लगभग दो सदियों तक भीषण सुखा और सर्दी से जूझता रहा। उन दो सौ सालों का असर व्यापक रूप से शुरुआती मानव सभ्यता के इतिहास में दर्ज है जिसमे मिस्र, ग्रीस, मेसोपोटामिया और सिन्धु घाटी सभ्यता का अवसान शामिल है।

भू-वैज्ञानिकों की एक विशेषज्ञ समिति 'एंथ्रोपोसीन वर्किंग ग्रुप' (एडब्ल्यूजी) जो 2009 से ही मानव युग के साक्ष्य पर काम कर रही थी ने पिछले मार्च में एक नए युग एन्थ्रोपोसिन की शुरुआत की आधिकारिक घोषणा को खारिज कर दिया। हालाकि इसी समिति ने 2016 में ही सुझाया था कि होलोसिन से अलग एक मानव प्रभावित एंथ्रोपोसीन युग का प्रारंभ 1950 के आसपास माना जाए, जब परमाणु बमों के परीक्षणों की होड़ के चलते पूरी पृथ्वी रेडियोधर्मी विकिरण से बुरी तरह घिर गई थी। पृथ्वी पर मनुष्य द्वारा किए गए बड़े स्तर के आमूलचुल बदलावों के बावजूद एन्थ्रोपोसिन युग की शुरुआत नहीं माना गया। पृथ्वी के भूगर्भिय इतिहास और समय गणना के माहिर 'एन्थ्रोपोसिन वर्किंग ग्रुप' के 18 में से 12 वैज्ञानिकों ने एक दर्जन अलग-अलग प्रकार के प्राकृतिक स्थलों और वहाँ के चट्टानों के अध्ययन के बाद इस बात को खारिज कर दिया कि जीवाश्म ईंधन का बड़े पैमाने पर इस्तेमाल, हाइड्रोजन बम से निकला नाभकीय विकिरण, प्लास्टिक कचरा और जैव-विविधता का ह्रास के बाद भी ''एन्थ्रोपोसिन युग'' के खास लक्षण पृथ्वी के सतही चट्टानों में स्तरित हो चुके हैं। पृथ्वी के सबसे आधुनिक और वर्तमान 'क्वा़टरनरी कल्प' के भूगर्भिय घटनाक्रम को क्रमबद्ध करने वाली 'सबकमीशन ऑन क्वा़टरनरी स्ट्रेटीग्राफी' का स्पष्ट कहना है कि निवर्तमान होलोसिन युग के स्थान पर एन्थ्रोपोसिन यानी मानव युग के शुरुआत की घोषणा अभी तक के तय भू-विज्ञान के मानकों पर सटीक नहीं बैठता।

किसी भी भू-वैज्ञानिक काल खंड की आधिकारिक मान्यता के लिए चट्टानों में स्तरित उस काल के महत्वपूर्ण साक्ष्य की जरुरत होती है, जिसके आधार पर उसका नामकरण किया जाता है। जैसे अभी होलोसिन युग का 'मेघलायण काल' चल रहा है, जिसकी शुरुआत 4200 साल पहले आये दो सदी तक चले विश्वव्यापी भयंकर सूखे और सर्दी से मानी गयी। इस कालक्रम के निर्धारण के लिए जरुरी भू-गर्भिये साक्ष्य सबसे पहले भारत के मेघालय राज्य के माव्म्लुह गुफा में स्टैलकटाइट और स्टैलकमाइट चट्टानों के परतो में दर्ज मिले और उसी आधार पर इसे मेघलायण काल नाम भी दिया गया। एन्थ्रोपोसिन युग के फैसले के पहले मेघलायण काल पर सहमती एक जटिल समस्या थी जिसे हाल ही में आधिकारिक पुष्टि मिली। भू कालखंड के निर्धारण के लिए जरुरी भू-साक्ष्य में मुख्य रूप से झील और समुद्र की तली, ग्लेशियर में जमी बर्फ, मूँगा की परतदार चट्टानें, चुना मिटटी के गुफा के पानी के वास्पीकरण से बने स्टैलकटाइट और स्टैलकमाइट, नदी का डेल्टा और एस्तुअरी आदि का अध्ययन सहायक होता है।

होलोसिन युग के खातमे और एन्थ्रोपोसिन युग की शुरुआत की आधिकारिक घोषणा के लिए सबसे बड़ी चुनौती इस सवाल के उतर में छिपी है कि क्या मानव ने पृथ्वी प्रणाली को इस स्तर तक बदल दिया है कि इसे चट्टान के परतो में प्रतिबिम्बित किया जा सकता हैं? इसका उतर खोजने के लिए कम से कम बारह ऐसे स्थान चुने गए जहाँ से मानव जनित बदलाव को चट्टानों में सुरक्षित होते सबसे अच्छे से परखा जा सके। मानव छेड़ छाड़ से दूर स्कॉटलैंड की क्लाइड एस्चुअरी में जमा कीचड़ की परते, न्यूयॉर्क का फ्रेश किल्स लैंडफिल जहा 1948 से कूड़ा डाला जा रहा है, कनाडा की क्रॉफर्ड झील की तलहटी में जमा हो रही मिटटी, तीन सौ साल पुराने पेरिस शहर की नालियों में जमता रासायनिक अवसाद, कैरेबियन सागर की छिछले पानी में मूँगा की परतदार चट्टाने और यहाँ तक कि मनुष्य के पहुँच के बाद की पूर्वी अंटार्कटिका में जमी बर्फ ये कुछ स्थान जांचे परखे गए ताकि पचास के दशक के बाद हुए मानव जनित वैश्विक स्तर के बदलाव को इन परतो में देखा जा सके। इन सभी स्थानों में वैश्विक स्तर के बदलाव को कुछ खास मार्कर जैसे वायुमंडल में बढ़ते कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा, प्लास्टिक, और जैव कचड़ो से बने प्लास्टीग्लोमरेट चट्टान, हाइड्रोजन बम से निकले रेडियोधर्मी प्लुटोनियम, केसियम-137, स्ट्रोन्सियम-90 और वायुमंडल में बढ़े कार्बन-14, कोयले को जलाने से बने स्फेरोइडल कार्बोनेसीयस पार्टिकल की उपस्थिति के रूप में पहचाना जा सकता है। यहाँ तक नुक्लियर विस्फोट के बाद कार्बन-14 की बढ़ी हुई मात्रा 1950 के दशक के बाद जन्मे मनुष्यों में भी पाई जा रही है।

'एंथ्रोपोसीन वर्किंग ग्रुप' के तजा फैसलों से ये तो स्पष्ट है की फ्रांस के जुरा पर्वत में मिले एक खास किस्म के एमोनाईट प्सिलोसरस के जीवाश्म जिसके नाम पर जुरासिक कल्प का नाम पड़ा, वहा उस दौर के निशान जिस तरीके से दर्ज होंगे वैसे शायद औद्योगिक क्रांति के मात्र 200 सालो में और खास कर पिछले 70 सालों में ना बन पाए हो।, पर इतना तो निश्चित है कि अब तक मानव जनित बड़े स्तर के बदलाव के कारण भले चट्टनों में परतें ना बन पाई हो पर रासायनिक या जैविक निशान तो जरूर बन गए होंगे, एंथ्रोपोसीन ने कुछ लकीरें तो जरूर उकेर दी होंगी। पर आखिरकार मानव जनित वैश्विक स्तर पर हो रहे बड़े स्तर के बदलाव के अनेको साक्ष्य के बाद भी एन्थ्रोपोसिन युग के आधिकारिक शुरुआत को मान्यता नहीं मिल पाई। एन्थ्रोपोसिन वोर्किंग ग्रुप' का निर्णय फिलहाल 'एन्थ्रोपोसिन युग के प्रस्ताव का अनुमोदन नहीं कर पाया है, साथ-साथ ये भी स्पष्ट है कि भूवैज्ञानिक समय स्केल पर ऐंथ्रोपोसीन युग को निर्धारित भूवैज्ञानिक शब्दावली और शर्तो पर अभी खरा उतरना बाकी रह गया है, भले ही नया युग एन्थ्रोपोसिन नृविज्ञानी, कलाकारों, और आर्थिक-सामाजिक सन्दर्भ में पूर्णतः स्वीकार कर लिया गया हो। इसका ये कतई ये भी मतलब नहीं कि मानव जनित वैश्विक प्रभाव को किसी भी लिहाज से कमतर आका जाये।

(लेखक पृथ्वी और पर्यावरण विज्ञान एमिटी यूनिवर्सिटी हरियाणा से संबद्ध)

जल संरक्षण व संग्रहण
(मानव सभ्यता को बचाए रखने के लिए जरूरी)

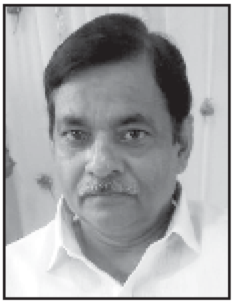

मनोज कुमार झा

हमारा देश का कृषि लगभग पूरी तरह वर्षा जल पर निर्भर है। देश की जनसंख्या का बड़ा हिस्सा खेती पर आश्रित है। अब भी अर्थव्यवस्था की रीढ़ खेती की पैदावार ही है। इस चक्र के संतुलित और समुचित रूप से गतिशील रहने के लिए जरूरी है कि मॉनसून की कृपा बनी रहे। इस वर्ष बारिश औसत होने की संभावना है। देश स्वाभाविक रूप से निश्‍िंचत होगा। यदि मॉनसून औसत से कम रहा तो पैदावार भी कम होगी। यह अर्थव्यवस्था को भी चरमरा सकती है। इसलिए यह जरूरी है कि भविष्य के लिए जलस्रोतों के बेहतर प्रबंध के प्रयास किये जाए।

मौसम वैज्ञानिक हमें बताता है कि इस बार गर्मी औसत से अधिक पड़ेगी। यदि हमने पूरे देश में अपने जलस्रोतों को बढ़ा लिया तो, हम गर्मी को नियंत्रण में रख सकते हैं। पूरी दुनिया में धरती के तापमान बढ़ने से हमारे सामने विकट संकट असमय आ धमकता है। पूरी दुनिया को चाहिए कि धरती का तापमान कम-से-कम बढ़े तो उसके लिए हमें जलस्रोतों का निर्माण बड़े पैमाने पर करना होगा। यदि हमने इस काम को अभी से नहीं किया तो आने वाले वर्षों में कठिन परिस्थिति में फंस सकते हैं। इसलिए सरकार को चाहिए कि अभी से यह आकलन करना प्रारंभ कर दे कि बरसात के दिनों में कितना पानी जमा किया जा सकता है। एक मोटे अनुमान के तहत यह पाया गया कि देश भर में औसत बारिस 341 घंटे होती है। इस बारिस के पानी को इस्तेमाल में लाये जाने के दृटिकोण से देखा जाए तो साल भर में सिर्फ 100 घंटों की मूसलधार बारिश का ही हम लाभ उठा पाते हैं। हमें चाहिए कि पूरी बारिश के पानी को सही तरीके से एकत्र कर सकें। यदि ऐसा मुमकिन हो जाए, तो जल भंडारण बढ़ जाएगा। इसका परिणाम भी हमें एक दो वर्ष में दिखने लगेगी।

यहां मैं आपको जयपुर जिले के एक गांव लापोडिया के बारे में बताना चाहता हूं। इस गांव के लगभग सभी परिवार 1980 आते-आते निर्वासित होकर जयपुर तथा अन्य शहरों में पहुंच चुका था। फिर शहर पहुंचे दो युवकों को अपने गांव के सभी लोगों को के विस्थापन का कारण अपने बड़ों से पूछा उन्हें पता चला कि वर्षा कम होने के कारण खेती न के बराबर हो रही थी। लोगों को दो वक्त का रोटी भी जुटाना मुश्किल होने लगा। तब

मौसम वैज्ञानिक हमें बताता है कि इस बार गर्मी औसत से अधिक पड़ेगी। यदि हमने पूरे देश में अपने जलस्रोतों को बढ़ा लिया तो, हम गर्मी को नियंत्रण में रख सकते हैं। पूरी दुनिया में धरती के तापमान बढ़ने से हमारे सामने विकट संकट असमय आ धमकता है। पूरी दुनिया को चाहिए कि धरती का तापमान कम-से-कम बढ़े तो उसके लिए हमें जलस्रोतों का निर्माण बड़े पैमाने पर करना होगा।

गांव के परिवारों ने पलायन कर गये। यह नवयुवक अपने हम उम्र मित्रों को लेकर बरसात के दिनों में गांव पहुंचा। तेज बारिस हो रही थी गांव के तरफ जाते हुए इन्होंने देखा कि बारिस का पानी बड़ी तेजी से गांव के तरफ से निकलकर भागी जा रही है। इन पांच नौजवानों से गांव में रहकर वर्षा जल को रोकने के प्रयास में लग गया। देखते ही देखते गांव के अन्य लोग भी उनके साथ बांध बनाने के काम में मदद देने आने लगे। पहले वर्ष में एक बांध बना उसमें भरपूर वर्षा जल जमा हो गया। पांच छह माह में ही जमा पानी के आसपास हरियाली और पेड़ पौधे अपने आप उगने लगे। हरी-हरी सुंदर घास डेम के चारों तरफ दिखने लगे।

फिर धीरे-धीरे गांव के छोटे किसान वापस गांव आने लगे डेम के चारों तरफ के किसान वापस आकर खेती करने लगे। गाय और भैंस पालने लगे। आज स्थिति यह है कि गांव के सभी किसान वापस आकर खेती करने लगे हैं और मवेशी पालने लगे हैं। लापोडिया से 15 हजार लीटर दूध रोज जयपुर पहुँचने लगा। किसान खुशहाल रहने लगे हैं।

दूसरा महाप्रयोग जखनी, बुंदेलखंड में हुआ है। देश के राट्रपति स्वयं जखनी जाकर ग्रामीणों को सम्मानिक कर चुके हैं। गांव में चारों तरफ तालाब बनाकर एक उदाहरण प्रस्तुत किया है देश के सामने। इसी तरह भीखमपुरा, अलवर राजस्थान ने भी पानी की समस्या से लगभग निजात पा लिया है। एक मोटे अनुमान के मुताबिक भारत में 12-18 शताब्दी तक लगभग 9 लाख तालाब थे। अंग्रेजों ने हमारे तालाबों को भरना शुरू किया और आज हम लगभग 6 लाख तालाब भर चुके हैं। इसमें मुख्य किरदार जमीन माफिया, सरकार, और जिनके जमीन पर तालाब बने थे वे स्वयं भी भरकर जमीन बेचकर लाखों कमा चुके हैं। परंपरागत जल संरक्षण की अब कोई बात ही नहीं करता। आधुनिक युग में यानी आज जो तालाब बन रहे हैं उनकी संख्या बहुत ही नगण्य हैं।

1733 ई. में मिथिला में भयंकर सूखे के कारण अकाल पड़ा। लोगों के भूखे मरने की नौबत आ चुकी थी। तब मिथिला की एक रानी ने घोषणा की की प्रत्येक दिन एक नये तालाब के जल से पूजा करके ही वे अन्न जल ग्रहण करेंगी। राजा ने अपने पूरे राज्य में सूचना फैला दी। परिणाम यह हुआ कि रोज एक तालाब बनने लगे।

तालाब खुदाई का काम रात भर चलता। मजदूर तो दिन में भी काम करते लेकिन संभ्रांत लोग शर्म के मारे दिन में काम करने नहीं जाते। रात के अंधेरे में वे तालाब के खुदाई के काम करते और सुबह होने से पहले कार्यस्थल पर चावल, दाल, गेहूं, मक्का, बाजरा आदि फसलों का अलग-अलग ढेर में से स्वयं अपनी मजदूरी अनाज के रूप में लेकर अपने घर चले जाते। राजा ने लोगों को बचाने के लिए यह नायाब तरीका ढूंढ निकाला।

दूसरी घटना समाज में प्रसव कराने वाली दायी मां की है। जिसने अकाल के समय अपने सारे धन-सम्पत्ति तालाब खुदाई में लगा दिया। जो आज भी दरभंगा शहर में चमैनियां पोखर के नाम से प्रसिद्ध है। यह तालाब इतना बड़ा है कि झील होने का भ्रम पैदा करता है। आज धीरे-धीरे उसे भी जमीन माफिया भरते जा रहे हैं।

यदि यही कार्य हम भारत के प्रत्येक गांव में कर गुजरें तो आप परिणाम के बारे में सोच भी नहीं सकते हैं कि किस तरह से गांव देश के आर्थिक विकास में एक मजबूत भागीदार बन गया। यह समृद्धि स्थायी होगी। प्रत्येक गांव में तालाब, आहर पैन, चाल, खाल, बाबड़ी, छोटे-छोटे अरदन डैम का निर्माण यदि हमने कर लिया तो गांव खुशहाल होगा तो देश अपने-आप खुशहाल हो जाएगा। बिडंबना यह है कि जिस तरह से हम कल-कारखानों के पीछे भारत रहे हैं वह अधिक दिन टिकने वाला नहीं। यदि हमने आने वाले वर्षों में बर्षा जल को पकड़ लिए तो देश का कायाकल्प हो सकता है।

भारत के हर गांव में प्रतिवर्ष 3.75 अरब लीटर पानी एकत्र किया जा सकता है। गांव के लोगों की पेयजल व पशुओं से जुड़ी जरूरतों समेत सिंचाई के लिए इतना पानी पर्याप्त हो सकता है। सरकार और समाज को अभी से यह आकलन शुरू कर देना चाहिए कि बरसात के दिनों में कितना पानी जमा किया जा सकता है। यदि हमने यह काम 10-15 वर्षों में पूरा कर लिया तो भविष्य में आने वाले संकट से हम बच सकते हैं।

संपर्क:
मो. 09911332742

महात्मा गांधी और पर्यावरण दर्शन

डॉ नन्दकिशोर साह

गांधीजी भारत की आजादी के प्रति जितने चिंतित थे, उससे कहीं ज्यादा विश्व पर्यावरण के प्रति चिंतित दिखाई पड़ते थे क्योंकि गांधीजी का चिंतन 'वसुधैव कुटुंबकम' की भावना में ही था। उन्होंने विश्व भर में लगातार हो रही वैज्ञानिक खोजों के कारण पैदा हो रहे उत्पादों और सेवाओं को मानवता के लिए घातक बताया था। उन्होंने 1918 में राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन को संबोधित करते हुए चेतावनी दी थी कि विकास और औद्योगिकता में पश्चिम देशों का पीछा करना मनावता और पृथ्वी के लिए खतरा पैदा करना है। आज मानव का विकास पर्यावरण के दोहन के मूल पर हो रहा है। आगे हम विकास की ओर दौड़ रहे हैं, पीछे से विनाश दौड़ा आ रहा है। आदिकाल से मनुष्य और पर्यावरण का अन्योन्याश्रय संबंध रहा है। वर्तमान समय में सबसे चिंताजनक समस्याओं में से एक पर्यावरण की समस्या है। यह समस्या मनुष्य प्रकृति से प्राकृतिक संसाधनों के अनर्गल दोहन से उत्पन्न हुआ है। पशु-पक्षी, जीव-जंतु, पेड़ पौधे, नदी-तलाब, खेत-खलिहान आदि से हमारे समाज का निर्माण हुआ है। मनुष्य अपनी सुविधा संपन्न जीवन जीने के लिए इन सभी का दोहन करता है। पर्यावरण के क्षय के कारण स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं भी उत्पन्न हो रही है। बेतहाशा प्रकृति के शोषण का दुष्परिणाम भी ग्लोबल वार्मिंग, तेजाबी वर्षा, वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, भूस्खलन, मृदा प्रदूषण, रासायनिक प्रदूषण, समुद्री तूफान आदि के रूप में सामने आने लगा है। जंगलों के विनाश से भूमि का कटाव हो रहा है। भूमिगत जल का स्तर नीचे जा रहा है। वर्षा व मौसम का चक्र बिगड़ गया है। जंगलों पर निर्भर रहने वाले करोड़ों लोगों की जिंदगी दुसर होती जा रही है और वे उजड़ रहे हैं।

गांधीजी ने कहा था कि एक ऐसा समय आएगा, जब अपनी जरूरतों को कई गुना बढ़ाने की अंधी दौड़ में लगे लोग, अपने किए को देखेंगे और कहेंगे कि हमने ये क्या किया? उपभोक्तावादी तथा विलासी जीवन संस्कृति व दोषपूर्ण विकास नीति के कारण पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधनों का जैसे जंगल, जल स्रोत, खनिज संपदा आदि समाप्त एवं प्रदूषित हो रहे हैं। सबसे ज्यादा नुकसान जंगलों को हुआ है। विश्व के अधिकांश पहाड़ नंगे हो गए हैं और प्राकृतिक वन समाप्त हो रहे हैं। आबादी बढ़ने के साथ जंगलों में कुछ कमी आना तो स्वभाविक था, पर जंगलों का अधिकांश विनाश कागज,

आज मानव का विकास पर्यावरण के दोहन के मूल पर हो रहा है। आगे हम विकास की ओर दौड़ रहे हैं, पीछे से विनाश दौड़ा आ रहा है। आदिकाल से मनुष्य और पर्यावरण का अन्योन्याश्रय संबंध रहा है। वर्तमान समय में सबसे चिंताजनक समस्याओं में से एक पर्यावरण की समस्या है। यह समस्या मनुष्य प्रकृति से प्राकृतिक संसाधनों के अनर्गल दोहन से उत्पन्न हुआ है।

प्लाईवुड, कार्डबोर्ड आदि के कारखानों, विलासी जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति तथा भ्रष्टाचार के कारण हुआ।

प्रकृति हमारे पालक–पर्यावरण और पारिस्थितिकी को लेकर गांधी का मानना था कि प्रकृति पालक के रूप में देखी जानी चाहिए, न कि हमारी विलासिता का हिस्सा होना चाहिए। उसके विपरीत हम प्रकृति, पृथ्वी, नदी व वनों का प्रायोग मात्र अपनी विलासिता के लिए कर रहे है। परिणामस्वरूप आज दुनिया भर में जलवायु परिवर्तन व ग्लोबल वार्मिंग जैसे बड़े मुददे हमारे सामने है, जिसके दुष्परिणाम आज हम किसी–न–किसी रूप में झेल रहे है। हम इन सब दुष्परिणामों को देखने के बाद भी प्रकृति को समझने में असफल रहे। स्वच्छ समाज उनकी कल्पना का हिस्सा था। देश के विभिन्न जगहों पर मौजूद कूड़े के पहाड़ निकट भविष्य के प्रमुख संकट है। गांधीजी ने उसी समय यह कहा था कि स्वच्छता से स्वास्थ्य व चरित्र का निर्माण होता है, जो आज के परिप्रेक्ष्य में सटीक बैठता है।

गांधीजी प्रकृति द्वारा प्रदत संसाधनों को ईश्वर का सबसे अनुपम उपहार मानते थे। प्राचीन सभ्यताएं प्राकृतिक पर्यावरण के दुरुपयोग के कारण ढह चुकी है। संसार में मनुष्य ने अवसर मिलने पर प्रकृति को बेरहमी से लूटा, छीना व छिन्न–भिन्न किया। विज्ञान व मशीन के द्वारा वह एक समय के लिए व्यापक लाभ प्राप्त कर सकेगा परंतु अंततः उदास ही रहेगा। अगर हमें शारीरिक रूप से स्वस्थ और नैतिक रूप से सभ्य प्रजाति के रूप में बने रहना है तो हमें प्रकृति के संतुलन का अध्ययन करना होगा।

प्रकृति के नियम को समझें– गांधीजी का दर्शन था कि आवश्यकता हो तब भी लालच मत करो, आराम हो तो थोड़ा हो और वह विलासता न बन जाए। धरती के पास सभी की जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त संसाधन है किंतु किसी की लालच के लिए नहीं। गांधीजी प्रकृति द्वारा प्रदत संसाधनों को ईश्वर का सबसे अनुपम उपहार मानते थे। प्राचीन सभ्यताएं प्राकृतिक पर्यावरण के दुरुपयोग के कारण ढह चुकी है। संसार में मनुष्य ने अवसर मिलने पर प्रकृति को बेरहमी से लूटा, छीना व छिन्न–भिन्न किया। विज्ञान व मशीन के द्वारा वह एक समय के लिए व्यापक लाभ प्राप्त कर सकेगा परंतु अंततः उदास ही रहेगा। अगर हमें शारीरिक रूप से स्वस्थ और नैतिक रूप से सभ्य प्रजाति के रूप में बने रहना है तो हमें प्रकृति के संतुलन का अध्ययन करना होगा। प्रकृति के नियमों के मुताबिक अपनी जिंदगी विकसित करनी होगी। गांधीजी कहते थे कि इसे आने वाली पीढ़ियों के लिए सृजित किया जाना चाहिए। जब तक प्रकृति में संतुलन है, तब तक परिस्थिति सही है। प्रकृति अपने नियमों के तहत निरंतर कार्य करती है, लेकिन लोग नियमित रूप से उनका उल्लंघन करते हैं। प्रकृति की गोद में बैठ कर विकास करेंगे और प्रकृति के नियमों से छेड़छाड़ करेंगे तो दंड के भागीदार हम ही होंगे।

स्वच्छ पर्यावरण तो सभी को चाहिए–आज प्रत्येक आदमी को स्वच्छ परिवेश, स्वच्छ गलियां, सड़कें और स्वच्छ पर्यावरण तो चाहिए परंतु साफ करने वाला भी कोई और होना चाहिए। प्रत्येक मनुष्य पर्यावरण को लेकर चिंतित तो है, पर पर्यावरण को बचाने में सक्रिय सहभागी नहीं है। पर्यावरण शब्द का प्रचलन तो नया है, पर इससे जुड़ी चिंता या चेतना नई नहीं है। पर्यावरण हवा, पानी, पर्वत, नदी, जंगल, वनस्पति, पशु–पक्षी आदि के समन्वित रूप से है। यह सब सदियों से प्रकृति प्रेम की रूप में हमारे चिंतन, संस्कार में मौजूद रहे हैं। साफ वातावरण फ्री में नहीं मिलेगी। हमें प्रकृति वातावरण के स्वच्छ बनाने के लिए निवेश करना होगा। इससे सरकार की सहमति एवं जनसाधारण की भागीदारी होनी जरूरी है। पर्यावरण को पूर्वजों से जुड़ना होगा। पेड़ फल भी देगा। छाया भी देगा और लकड़ी भी। पेड़ लगाने से रोजगार और उत्पादकता में वृद्धि होगी। भारत ने दुनिया को प्रकृति से प्रेम करना सिखाया है। आज हम ही उदासीन हो गए हैं।

कूड़ा-कचरा को पृथ्वी सहन नहीं कर पा रही–आधुनिक मशीनी युग में तकनीक एवं विज्ञान उत्पीड़न एवं दोहन के उपकरण बन गए। जबकि मानव तकनीक एवं विज्ञान के बिना नहीं रह सकता है। सूचना तकनीक के मौजूदा दौर में दुनिया ई कचरे के ढेर में तब्दील होता जा रहा

है, जो पर्यावरण को लंबे समय तक प्रदूषित करने वाला है। विनाश के बिना कहीं भी औद्योगिकीकरण संभव नहीं हो सकता है। औद्योगीकरण ने प्रकृति के साथ मानव के सौहार्दपूर्ण संबंध को नष्ट कर दिया है। आज अपार्टमेंट कल्चर में हम इलेक्ट्रॉनिक सामान खरीदते चलते चले जाते हैं। इसके कई कारण है। यथा नए मॉडल का बाजार में आ जाना या फिर ऑफर मिलना। क्योंकि वेस्टीज को खपाने में इतनी दिक्कते आ रही हैं। पृथ्वी सहन नहीं कर पा रही है। विकसित देशों का मानना है कि तीसरी दुनिया के लोग पृथ्वी पर भार के समान है।

पर्यावरण प्रदूषण के प्रभाव–मानव अपने परिवार समाज तथा पर्यावरण से भी जो भी ग्रहण करता है, वह ऋण रूप में ग्रहण करें। आज पूरे विश्व का पर्यावरण प्रदूषित हो चुका है। प्रकृति का प्रकोप भूकंप, महामारी, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, पादप ग्रह प्रभाव, जैवविविधता, खिसकते रेगिस्तान और सिकुड़ते वन के रूप में प्रकट हो रहा है। देश की राजधानी सहित कई भारतीय शहरों में मलेरिया, चिकुनगुनिया, डेंगू और खतरनाक बीमारियां गंदगी की वजह से फैलती है। हाल के वर्षों में कोरोना महामारी का दंश देश और दुनिया झेल चुकी है। दुनिया ने विकास की गति के जिस रफ्तार को पकड़ा है। उस रफ्तार से पीछे आना संभव नहीं है। आज जो पर्यावरण प्रदूषण की समस्या विकराल रूप धारण करती जा रही है।

धरती के पास सभी की जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त साधन– गांधी का प्रसिद्ध वक्तव्य धरती के पास सभी की जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त साधन है। किंतु किसी के लालच के लिए नहीं। सम कालीन पर्यावरणीय आंदोलनों के लिए नारा बन गया है। वनस्पति के बिना इस पृथ्वी पर जीवधारी एक क्षण के लिए भी नहीं रह सकते हैं। आज हमने अपने को अनावश्यक वस्तुओं का भंडार बना रखा है। परिणामतः अनेक अवांछित बीमारी यथा–स्वाइन फ्लू, कैंसर, मधुमेह, किडनी की बीमारियां, कोरोना जैसी बीमारियां मानव जीवन को प्रभावित करने लगी है। गांधी ने कहा है कि आहार में उतनी ही चीजें लेनी चाहिए जो कि प्राकृतिक पदार्थों के अधिक उपयोग से इन सारी बीमारियों से बचा जा सकता है और इसे विज्ञान भी बखूबी मानने लगे हैं।

प्रकृति ने नि:शुल्क पर्याप्त हवा और पानी दिया– गांधी जी लिखते हैं कि हमारी जरूरत के हिसाब से प्रकृति ने नि:शुल्क पर्याप्त प्रकाश, हवा और पानी दिया है, इसके बिना जिन्दगी सम्भव नहीं है, लेकिन आधुनिक सभ्यता ने इसकी कीमत निर्धारित कर दिया। लोक कल्याणकारी राज्य को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि सबसे गरीब और कमजोर व्यक्ति का चेहरा हमारे नियोजन और विकास के केंद्र में बना रहे। क्योंकि स्वतंत्र भारत का गांधीवादी दृष्टिकोण ग्रामीण पुनरुद्धार पर केंद्रित था।

सूचना तकनीक के मौजूदा दौर में दुनिया ई कचरे के ढेर में तब्दील होता जा रहा है, जो पर्यावरण को लंबे समय तक प्रदूषित करने वाला है। विनाश के बिना कहीं भी औद्योगिकीकरण संभव नहीं हो सकता है। औद्योगीकरण ने प्रकृति के साथ मानव के सौहार्दपूर्ण संबंध को नष्ट कर दिया है। आज अपार्टमेंट कल्चर में हम इलेक्ट्रॉनिक सामान खरीदते चलते चले जाते हैं। इसके कई कारण है। यथा नए मॉडल का बाजार में आ जाना या फिर ऑफर मिलना। क्योंकि वेस्टीज को खपाने में इतनी दिक्कते आ रही हैं।

पर्यावरण को ठेस न पहुंचाएँ – महात्मा गांधीजी यह मानते थे कि अन्य मनुष्यों एवं प्रकृति को कम से कम हानि पहुंचा कर सामाजिक परिवर्तन लाया जा सकता है। जबकि गांधीजी ने प्रत्यक्ष पर्यावरण पर किसी पुस्तक की रचना नहीं किया लेकिन अपने दैनिक व्यवहार एवं हिंद स्वराज में उनके पर्यावरण व प्रास्थितिकी संबंधी विचार दृष्टिगोचर होते है। गांधी के लिए स्वच्छता बहुत ही महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दा था। गांधीजी का मानना था कि हमारी जीवन पद्धति ऐसी हो कि पर्यावरण को कम–से–कम ठेस पहुंचे। गांधी के द्वारा बताएं उद्योग शिल्प और आवश्यकताओं पर नियंत्रण की नीति को अपनाने की जरूरत है। गांधी के ग्राम उद्योग का विचार आधुनिक परिवेश में पर्यावरण प्रदूषण को

रोकने के लिए प्रासंगिक है।दुनिया के सभी देश धन का घमंड छोड़ पूरी धून के साथ मानव निर्मित पर्यावरण के सुधार में इतनी ईमानदारी, समझदारी और प्रतिबद्धता के साथ जुट जाए ताकि कुदरत के घरों में भी बचे और हमारे आर्थिक सामाजिक व निजी खुशियां भी। कुदरत से जितना और जैसे ले उसे कम-से-कम उतना और वैसे ही लौटाए।

भारतीय संस्कृति में एक वृक्ष कई पुत्रों के बराबर- भारतीय संस्कृति के अनुसार वृक्षारोपण को पवित्र धर्म मानते हुए एक पौधे को कई पुत्रों के बराबर माना है और उनके नष्ट करने को पाप कहा गया है। वह भारतीय संस्कृति के मूल में रही है। आज पर्यावरण बचाने के नाम पर बाघ, शेर, हाथी आदि जानवरों, नदियों, पक्षियों, वनों आदि को बचाने के लिए विश्वव्यापी स्वर उठ रहें हैं।भारत मेंप्राचीन काल से पर्यावरण की तत्वों को धार्मिक कलेवर में समेत कर उनके संरक्षण एवं संवर्धन को एक सुनिश्चित आधार प्रदान किया गया है।

महिलाएं पर्यावरण संरक्षण के प्रतिप्राचीन काल से ही जागरूक- सामाजिक प्रथाओं और रीति-रिवाजों को देखें तो यह पता चलता है कि प्राचीन काल से ही महिलाएं पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक रही हैं। जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण आज भी महिलाओं द्वारा पर्व-त्योहार के अवसर पर पूजा अर्चना में अनेक वृक्षों यथा-पीपल, तुलसी, अमला, बेर, नीम आदि वृक्षोंएवं विभिन्न पशु तथा गाय, बैल, चूहा, घोड़ा, शेर, बंदर, उल्लू आदि को सम्मिलित करना एवं उनकी पूजा-अर्चना के माध्यम से संरक्षण प्रदान करना देखने को मिल जाता है।जंगलों के विनाश के विरुद्ध सफल आंदोलन के रूप में पूरी दुनिया में चिपको आंदोलन सराह जा चुका है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि इस आंदोलन का संचालन पहाड़ी व ग्रामीण क्षेत्रों की रहने वाली अनपढ़ महिलाएं थी।

ग्लोबल वार्मिंग प्रमुख वैश्विक समस्या- ग्लोबल वार्मिंग वर्तमान समय की प्रमुख वैश्विक पर्यावरणीय समस्या है। यह एक ऐसा विषय है कि इस पर जितना सर्वेक्षण और पुनर्वालोकन करें, कम ही होगा। आज ग्लोबल वार्मिंग अंतरराष्ट्रीय स्तर पर राजनीतिज्ञों, पर्यावरणविदों, सामाजिक कार्यकर्ताओं एवं वैज्ञानिकों की चिंता का विषय बना हुआ है। ग्लोबल वार्मिंग से पृथ्वी ही नहीं बल्कि पूरे ब्रह्मांड की स्थिति और गति में परिवर्तन होने लगा है। इनके कारण भारत के प्राकृतिक वातावरण में अत्यधिक मानवीय परिवर्तन हो रहा है। पृथ्वी के बढ़ते तापमान के कारण जीव-जंतुओं की आदतों में भी बदलाव आ रहा है। इसका असर पूरे जैविक चक्र पर पड़ रहा है। पक्षियों के अंडे सेने और पशुओं के गर्भ धारण करने का प्राकृतिक समय पीछे खिसकता जा रहा है। कई प्रजातियां विलुप्त होने के कगार पर है। संवैधानिक रूप से प्रतिबंध

के बावजूद जंगली जीव की संख्या कम हो रही है।

जनसंख्या में भारी बढ़ोत्तरी से प्राकृतिक संसाधनों पर काफी दबाव पड़ा– गत सौ वर्ष में मनुष्य की जनसंख्या में भारी बढ़ोत्तरी हुई है। इसके कारण अन्न, जल, घर, बिजली, सड़क, वाह न और अन्य वस्तुओं की माँग में भी वृद्धि हुई है। परिणाम स्वरूप हमारे प्राकृतिक संसाधनों पर काफी दबाव पड़ रहा है। परिणाम स्वरूप वायु, जल तथा भूमि प्रदूषण बढ़ता जा रहा है। जनसंख्या दबाव के कारण आज गांव का पानी भी पीने योग्य नहीं रहा। जहां रहने के लिए जंगल साफ किए गए हैं, वहीं नदियों तथा सरोवरों के तटों पर लोगों ने आवासीय परिसर बना लिए हैं। जनसंख्या वृद्धि ने कृषि क्षेत्र पर भी दबाव बढ़ाया है। वृक्ष जल के सबसे बड़े संरक्षक हैं। बड़ी मात्रा में उसकी कटाई से जल के स्तर पर भी असर पड़ा है। सभी बड़े–छोटे शहरों के पास नदियां सर्वाधिक प्रदूषित है। वायु प्रदूषण, गरीब कचरे का प्रबंधन, बढ़ रही पानी की कमी, गिरते भूजल लेबल, जल प्रदूषण, संरक्षण और वनों की गुणवत्ता, जैव विविधता के नुकसान, और भूमि का क्षरण प्रमुख पर्यावरणीय मुद्दों में से कुछ भारत की प्रमुख समस्या है।

जनसंख्या वृद्धि के कारण तथा नई औद्योगिक परियोजनाओं के लिए जंगलों को काटा जा रहा है। औद्योगिकीकरण की वर्तमान प्रक्रिया के पूर्व भी कृषि योग्य भूमि का क्षेत्रफल बढ़ाने के लिए सदियों से वनों को काटा जाता रहा है। लेकिन अब यह कटाव खतरनाक स्तर पर पहुंच गई है। इससे साबित होता है कि इंसान प्रकृति पर किसी भी तरह से निर्भर था, उसे नकारात्मक रूप में प्रभावित करने वाली है। तापमान में परिवर्तन से मौसम में अवांछनीय बदलाव यथा– मॉनसून का समय पर न आना, असमय बारिश, बेतहाशा गर्मी पड़ना आदि देखने को मिल रहे हैं।

अगर जनसंख्या दबाव को नियंत्रित तथा पर्यावरण को संरक्षित नही किया गया तो दीर्घकालीन समय में कुछ ऐसे रोग उत्पन्न हो सकते हैं, जिसका इलाज ही संभव न हो। ऐसे में पृथ्वी के प्राणियों के लिए अत्यंत दुखदायी होगा। अतः पृथ्वी को बचाने के लिए जो भी उपाय हमें अपनाना पड़े उसे त्वरित निर्णय लेकर करनी चाहिए।बढ़ती जनसंख्या सभी समस्याओं की जड़ है। प्रभावपूर्ण नीति लानी होगी। कीगार्ड वृक्षों की रक्षा करने के लिए लगाएं। साधनों का प्रबंधन ठीक करें। सामूहिक भागीदारी से पर्यावरण को स्वच्छ और संरक्षित करना होगा।

पृथ्वी की प्राकृतिक संपत्ति को बचना जरुरी– जीवन को बचाये रखने के लिए पृथ्वी की प्राकृतिक संपत्ति को बनाये रखना बहुत जरुरी है। इस पृथ्वी पर सबसे बुद्धिमान कृति इंसान है। धरती पर स्वाश्वत जीवन के खतरा को कुछ छोटे उपायों को अपनाकर कम किया जा सकता है, जैसे पेड़–पौधे लगाना, वनों की कटाई को रोकना, वायु प्रदूषण को रोकने के लिये वाहनों के इस्तेमाल को कम करना, बिजली के गैर–जरुरी इस्तेमाल को घटाने के द्वारा ऊर्जा संरक्षण को बढ़ाना। यही छोटे कदम बड़े कदम बन सकते हैं। अगर इसे पूरे विश्वभर के द्वारा एक साथ अनुसरण किया जाये।

दुनिया को ग्लोबल वार्मिंग से बचाने के लिए हमें कम उपयोग, ज्यादा साझेदारी और सरल जीवन को अपनाना होगा। सामूहिक प्रयास करने होंगे। समय रहते नहीं चेते तो अज्ञात बीमारी का महामारी के रूप में फैलना सम्भव है। भारत अगर महात्मा गांधी के पर्यावरणीय वैज्ञानिक सोच को अपना कर रास्ता स्वयं बनाए तो स्वयं विनाश से बचेगा ही, दुनिया का आदर्श–आत्मक मॉडल भी बन सकेगा। आदमी धरती से बंधा है, वह तभी तक जीवित रहेगा, जब तक यह बंधन कायम है।

संपर्क:

मो. 9934797610

पर्यावरण-विमर्श

सामूहिक जन भागीदारी से पर्यावरण संरक्षण

अशोक चौधरी

जलवायु परिवर्तन के गंभीर संकट का प्रभाव आम जन जीवन में प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है। घटते वन, विलुप्त हो रही वन्य जीवों की प्रजातियां, निरंतर बढ़ रहा धारती का ताप, ग्लेशियरों का पिघलना व समुद्री जल स्तर का बढ़ना इत्यादि उदारहण भयावह स्थिति को दर्शाते हैं। ये समस्याऐं ज्यादा पुरानी नहीं है, पिछले करीब 30-40 सालों में ये गंभीर संकट पैदा हुआ है। इससे मानव प्रजाति भी अछूति नही रही है, उसे भी तरह-तरह की कोरोना जैसी महामारियों का सामना करना पड़ रहा है। इनके समाधान हेतु विश्व से स्थानीय स्तर तक प्रयास किए जा रहे है, तरह-तरह के कार्यक्रम, योजनाऐं बनाई जा रही है किन्तु आम जन की सहभागिता नहीं मिल पाती है। लोगों में यह आम धारणा है कि ये तो सरकार या किसी एनजीओं का कार्यक्रम है इससे हमें क्या लाभ होगा। इस धारणा को बदलने से ही विश्वव्यापी जलवायु परिवर्तन के संकट का समाधान खोजा जा सकता है।

हमारी भारतीय संस्कृति में सामाजिक, धार्मिक पद्धतियां इस प्रकार की रही हैं कि जिससे पर्यावरण संरक्षण को भी बल मिलता था। कुछ रीति रिवाज इस प्रकार के थे जिनके वैज्ञानिक आधार भी हैं और जिन्हें जीवन में क्रियान्वित कर हम पर्यावरण संरक्षण में भागीदार बन सकते हैं।

सामूहिक श्रमदानः महात्मा गांधी के आश्रम का नियम था कि सभी आश्रमवासी मिलकर आश्रम परिसर की सफाई करते, उन्होंने झाड़ू को क्रांति का सुदर्शन चक्र माना था। 2014 में स्वच्छ भारत अभियान का शुभारंभ प्रधाानमंत्री ने किया और इस अभियान ने जन आंदोलन का रूप ले लिया पहले लोगों को बाहर सार्वजनिक स्थलों पर सफाई करने में शर्म, झिझक महसूस होती थी लेकिन स्वच्छ भारत अभियान के बाद सफाई का विचार हर घर, ऑफिस एवं जन-जन तक पहुंचा और इससे सकारात्मक प्रभाव पड़ा।

श्रमदानः महात्मा गांधी के आश्रम का नियम था कि सभी आश्रमवासी मिलकर आश्रम परिसर की सफाई करते, उन्होंने झाड़ू को क्रांति का सुदर्शन चक्र माना था। 2014 में स्वच्छ भारत अभियान का शुभारंभ प्रधानमंत्री ने किया और इस अभियान ने जन आंदोलन का रूप ले

लोगों में यह आम धारणा है कि ये तो सरकार या किसी एनजीओं का कार्यक्रम है इससे हमें क्या लाभ होगा। इस धारणा को बदलने से ही विश्वव्यापी जलवायु परिवर्तन के संकट का समाधान खोजा जा सकता है। हमारी भारतीय संस्कृति में सामाजिक, धार्मिक पद्धतियां इस प्रकार की रही हैं कि जिससे पर्यावरण संरक्षण को भी बल मिलता था। कुछ रीति रिवाज इस प्रकार के थे जिनके वैज्ञानिक आधार भी हैं...

लिया पहले लोगों को बाहर सार्वजनिक स्थलों पर सफाई करने में शर्म, झिझक महसूस होती थी लेकिन स्वच्छ भारत अभियान के बाद सफाई का विचार हर घर, ऑफिस एवं जन-जन तक पहुंचा और इससे सकारात्मक प्रभाव पड़ा।

गांव में लोग नियमित रूप से सार्वजनिक स्थलों पर सामूहिक श्रमदान के कार्य करते हैं, सामूहिक भोजन करते हैं इससे सार्वजनिक स्थल साफ होते हैं व प्रदूषण कम होता है। अवकाश के दिनों में शहरों में भी इस प्रकार के आयोजन हो जिससे युवा पीढ़ी को जोड़ा जाए ताकि उनमें पर्यावरण संरक्षण के रचनात्मक गुणों का विकास हो व हमारे परिवेश को भी साफ किया जा सके।

पारंपरिक जल स्रोतों का संरक्षण: पेयजल संकट का सामना हर गांव, शहर को करना पड़ रहा है यह स्थिति तब है जब जलदाय विभाग द्वारा नियमित जल आपूर्ति की जा रही है अधिकांश क्षेत्रों का भूजल स्तर बहुत नीचे चला गया है ऐसी स्थिति में हमारे पारंपरिक जल स्रोतों का संरक्षण करना बहुत जरूरी है भारत में विशेष रूप से राजस्थान में कुएं, तालाब, बावड़ियों खड़ीन की वृहद परंपरा रही है सैकड़ो वर्षो पहले बने यह जल स्रोत आज भी मौजूद है लेकिन इनमें से काफी देखरेख के अभाव में दुर्दशा के शिकार हो रहे हैं सामूहिक जन भागीदारी से इनका संरक्षण किया जाए ताकि इनमें उपलब्ध जल से पेयजल आपूर्ति की जा सके। इन जल स्रोतों को अतिक्रमण, कचरे से मुक्त कराया जाए। भारत में दीपदान का बहुत महत्व माना जाता है लोग कई आयोजनों पर जल स्रोतों में दीपदान करते हैं। इन जल स्रोतों को समय-समय पर श्रमदान पर साफ रखें। हमारे यह पारंपरिक जल स्रोत न केवल पेयजल की आपूर्ति बल्कि पर्यटन को भी आकर्षित करते हैं। राजस्थान की चांद बावड़ी (दौसा)बाटाडू का कुआं व गड़ीसर(जैसलमेर) पदम तालाब (रणथंभोर) जेत्था बेरा व तुरजी का झालरा (जोधपुर) इत्यादि विश्व प्रसिद्ध है। इसके अतिरिक्त हर गांव में तालाबों की श्रृंखला है जिनको संरक्षण कर जल प्रदाय की स्थिति में लाया जा सकता है। इनमें संग्रहित वर्षा जल से भूजल स्तर में भी सुधार होगा।

कचरे का निस्तारण: हर बड़े शहर की म्युनसिपाल्टी के सामने कचरे के निस्तारण की गंभीर समस्या रहती है भारत में लोग सारा कचरा इकट्ठा कर देते हैं फिर वह कचरा जब डंपिंग स्टेशन में पहुंचता है तो उसको अलग करना टेढ़ी खीर हो जाती है। घरों, प्रतिष्ठानों से ही सूखा, गीला व हानिकारक कचरा अलग कर दिया जाए ताकि हमारे डंपिंग स्टेशनों पर लोड ना बढ़े। इंदौर एवं अन्य शहरों में इस कचरे का प्रबंधन कर इसे खाद, मिथैन गैस व बिजली बनाई जा रही है।

अपशिष्ट जल का निस्तारण: शहरों में घरों, औद्योगिक प्रतिष्ठानों से निकले अपशिष्ट, मैले पानी से हमारी नदियां प्रदूषित हो रही है इस अपशिष्ट पानी में मरकरी, क्रोमियम, निकल, लेड, आर्सेनिक जैसे हानिकारक तत्वों की मात्रा रहती है सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट्स में भी ट्रीटमेंट होने के बाद यह तत्व मौजूद रहते हैं शहर के बाहरी क्षेत्रों में इस रसायन युक्त दूषित मैले पानी से सब्जियां, फलों की खेती होती है और यह सब्जियां-फल शहर में आते हैं इन सब्जियों में मौजूद दूषित रसायनों से लोगों को हिपेटाइटिस ए, हिपेटाइटिस बी, डायरिया, पीलिया व टाइफाइड सहित गंभीर बीमारियां हो सकती है आजकल सब्जियों और फलों के माध्यम से माइक्रो प्लास्टिक हमारे शरीर में पहुंच रहा है।

> ***भारत में विशेष रूप से राजस्थान में कुएं, तालाब, बावड़ियों, खड़ीन की वृहद परंपरा रही है सैकड़ो वर्षो पहले बने यह जल स्रोत आज भी मौजूद हैं। लेकिन इनमें से काफी देखरेख के अभाव में दुर्दशा के शिकार हो रहे हैं। सामूहिक जन भागीदारी से इनका संरक्षण किया जाए। ताकि इनमें उपलब्ध जल से पेयजल आपूर्ति की जा सके इन जल स्रोतों को अतिक्रमण, कचरे से मुक्त कराया जाए। भारत में दीपदान का बहुत महत्व माना जाता है। लोग कई आयोजनों पर जल स्रोतों में दीपदान करते हैं...***

पर्यावरण संरक्षण कार्यक्रमों का सूत्रपातः ग्लासगो में कॉप 26 में प्रधानमंत्री द्वारा मिशन लाइफ की अवधारणा पेश की गई एवं भारत में संयुक्त राष्ट्र के महासचिव एंटोनियो गुटेरेस व प्रधानमंत्री द्वारा स्टैचू ऑफ यूनिटी से इसे लागू किया गया। इस मिशन लाइफ कार्यक्रम के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण में भागीदार बनते हुए जैव विविधता संरक्षण कार्यो को प्रोत्साहित कर स्थाई जीवन शैली का आग्रह किया गया। इसमें जल, ऊर्जा की बचत, ठोस कचरा व ई-कचरा, प्लास्टिक, स्वस्थ जीवन शैली, खाद्य प्रणालियों इत्यादि बिंदुओं के अंतर्गत कई सुझाव दिए गए जो आचरण योग्य थे व उनके क्रियान्वयन से लोगों को लाभ भी मिला। मिशन लाइफ जैसे कार्यक्रम न केवल सरकारी कार्यक्रमों से जनता को जोड़ते हैं बल्कि लोगों की रचनात्मकता व उनकी रुचि को बढ़ाते हैं और पर्यावरण संरक्षण का कार्य कर रहे लोगों को प्रोत्साहन भी प्रदान करते हैं।

आज हर बड़े शहर और कस्बे में सुबह शाम ट्रैफिक जाम की स्थिति देखी जा सकती है इन वाहनों से निकलने वाला हानिकारक धुआं हमारे स्वास्थ्य, पर्यावरण को नुकसान पहुंचता है इसके समाधान हेतु सार्वजनिक परिवहन के साधनों जैसे मेट्रो, बस, टेंपो इत्यादि का प्रयोग करें। कम दूरी के लिए साइकिल से जाएं। जिम में ट्रेडमिल की बजाय किसी पार्क में पैदल घूमें। इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा दे ताकि हमारे पर्यावरण संरक्षण के कार्यों को बल मिले और पेट्रोल डीजल की खपत कम करके कार्बन के उत्सर्जन को घटाया जा सके।

प्लास्टिक का विकल्पः प्लास्टिक से बने सामानों का हमारे जीवन में महत्वपूर्ण योगदान है परंतु प्लास्टिक से होने वाले प्रदूषण के कारण हमारा स्वास्थ्य, पर्यावरण खतरे में है। हमें प्लास्टिक से बने उत्पादों के बजाय लकड़ी, मिटी, बांस से बने उत्पादों को प्राथमिकता देनी होगी। सिंगल यूज प्लास्टिक के स्थान पर कपड़े, जूट के थैले काम में लें। प्लास्टिक के बर्तनों के स्थान पर स्टील, कांच के बने बर्तनों का उपयोग करें जो लंबे समय तक टिकाऊ रूप से चलते हैं।

सार्वजनिक परिवहन व साइकलिंगः हर व्यक्ति दैनिक जीवन में पेट्रोल, डीजल और गैस से चलने वाले दोपहिया, चार पहिया वाहनों का प्रयोग करता हैं लेकिन पेट्रोल, डीजल जैसे संसाधान सीमित है। आज हर बड़े शहर और कस्बे में सुबह शाम ट्रैफिक जाम की स्थिति देखी जा सकती है इन वाहनों से निकलने वाला हानिकारक धुआं हमारे स्वास्थ्य, पर्यावरण को नुकसान पहुंचाता है इसके समाधान हेतु सार्वजनिक परिवहन के साधनों जैसे मेट्रो, बस, टेंपो इत्यादि का प्रयोग करें। कम दूरी के लिए साइकिल से जाएं। जिम में ट्रेडमिल की बजाय किसी पार्क में पैदल घूमें। इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा दें ताकि हमारे पर्यावरण संरक्षण के कार्यों को बल मिले और पेट्रोल डीजल की खपत कम करके कार्बन के उत्सर्जन को घटाया जा सके।

पर्यावरण का संरक्षण हम सभी की जिम्मेदारी है, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति एक पर्यावरण अनुकूल आदत को अपनाएं। सरकारी, गैर सरकारी संस्थाओं के रचनात्मक कार्यक्रमों में भाग लें। जो लोग किसी संस्था, क्लब से जुड़े हैं वह अपने क्लब, संस्था के माधयम से अपने-अपने क्षेत्र में पौधारोपण, श्रमदान, जन जागरूकता की गोष्टियां आयोजित कर जनमानस में जागृति फैलाएं।

संपर्कः गांधी शांति प्रतिष्ठान केन्द्र, गांधी भवन, रेजीडेन्सी रोड, जोधपुर- 342011, राजस्थान

मो.: 9462323453

गांधी जी की रामराज्य की अवधारणा

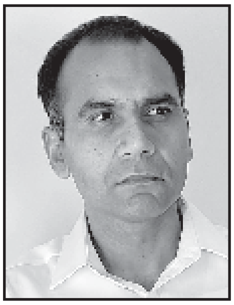

प्रो. रसाल सिंह

महात्मा गांधी भारतवर्ष की विशाल सांस्कृतिक परंपरा के अध्येता, विचारक एवं कुशल समाज शिल्पी थे। इन्होंने न केवल भारतवर्ष की स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व किया अपितु विश्व पटल पर उन समस्त लोगों का नेतृत्व किया जो किसी न किसी कारणों से नस्लवाद, उपनिवेशवाद, जाति-प्रथा जैसे शोषणों के शिकार थे। उन्होंने आजीवन सत्य, अहिंसा, शांति, ईमानदारी तथा पवित्रता का पक्ष लिया और करुणा को अपने जीवन से संबद्ध कर समस्त संसार को अपने अधिकारों के प्रति न केवल सचेत किया अपितु उनके साथ कदम से कदम मिला कर भी चलते रहे। वे इतिहास, समाज और संस्कृति से प्रेरणा लेकर निरंतर सामाजिक उत्थान में संलग्न रहे। वे समाज में सबसे उपेक्षित जनता के आत्मविश्वास को गढ़ते गए और इस प्रकार उन्होंने इतिहास की दिशा और गति को अपने लक्ष्यों के अनुरूप मोड़ने का कार्य किया। उनकी रामराज्य की अवधारणा अत्यंत विस्तृत है। उन्होंने अपने जीवन के आरंभिक काल में ही इसका संकल्प ले लिया था कि संसार में धर्म का शासन हो अर्थात् शासन व्यवस्था धर्म से संचालित हो। उनके लिए धर्म केवल ऊपरी तौर पर पढ़ लेने अथवा उसका आचरण कर लेने की चीज नहीं थी अपितु वे इसे अपनी जीवन शैली का अभिन्न अंग बनाने की सलाह देते रहे। मंजर अली सोख्ता अपनी पुस्तक 'महात्मा गांधी की विरासत' में लिखते हैं- "दुनिया की हर पुस्तक बताती है कि धर्म केवल जानने ही की चीज नहीं है बल्कि जिंदगी के हर काम में, हर समय और हर हालत में बरतने की चीज है। बापू ने इसे ही अपने जीवन का बुनियादी असूल बना रक्खा था। इस रास्ते पर चलने में उन्हें तरह-तरह के अनुभव होते रहते थे, जिनसे वह आप भी फायदा उठाते थे और दूसरों को भी फायदा पहुँचाते थे। यही उनकी जिंदगी का मिशन था।"[1]

'सर्वधर्म समभाव' तथा 'वसुधैव कुटुम्बकम्' जैसे मूल्यों को आत्मसात कर गांधी जी ने सत्याग्रह का प्रयोग किया जो अत्यंत सफल रहा। इन्हीं मूल्यों को परखने के उपरांत गांधी जी ने आजादी के समय रामराज्य की स्थापना का स्वप्न देखा था। उनका राम-राज्य भगवान श्रीराम के न्याय एवं समानता पूर्ण शासन तंत्र से प्रभावित था, जो दैहिक, दैविक भौतिक

महात्मा गांधी भारतवर्ष की विशाल सांस्कृतिक परंपरा के अध्येता, विचारक एवं कुशल समाज शिल्पी थे। इन्होंने न केवल भारतवर्ष की स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व किया अपितु विश्व पटल पर उन समस्त लोगों का नेतृत्व किया जो किसी न किसी कारणों से नस्लवाद, उपनिवेशवाद, जाति-प्रथा जैसे शोषणों के शिकार थे। उन्होंने आजीवन सत्य, अहिंसा, शांति, ईमानदारी तथा पवित्रता का पक्ष लिया...

[1] सोख्ता, मंसूर अली, महात्मा गांधी की विरासत, सेक्रेटरी हिंदुस्तान कल्चर सोसाइटी, बाई का बाग, इलाहाबाद, सं. 1949, पृष्ठ 6

तापों में भी अपनी शीतलता प्रदान करते हैं-

"दैहिक दैविक भौतिक तापा। रामराज नहिं काहुहि व्यापा।"[2]

कहने का आशय यह है कि गांधी जी ने आजाद भारत को भगवान राम के शासन के समान मूल्यों और आदर्शों पर आधारित होने की बात की। उनका विचार था कि जिस प्रकार भगवान राम के शासन में सभी लोग एक-दूसरे से प्रेम करते हैं, किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं रखते, ठीक इसी प्रकार भारतवर्ष की शासन पद्धति इसी मूल्यों पर आधारित होनी चाहिए। दुर्भाग्य से आजादी के लगभग 50 वर्षों के बीतने के उपरांत हम गांधीवादी मूल्यों और आदर्शों को ठीक से आत्मसात नहीं कर सके थे लेकिन 2014 से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत ने पुनः अपनी शासन पद्धति को गांधीवादी मूल्यों और विचारों के अनुरूप ढालने का सफल प्रयास किया है। गांधी जी ने जिस रामराज्य की बात की है, उसकी व्याख्या करते हुए वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने भी माना कि भगवान राम की शासन-पद्धति के 4 प्रमुख स्तम्भ थे- सम्मानपूर्ण जीवनयापन करना, सभी नागरिकों के साथ एक-समान व्यवहार करना, कमजोर वर्ग एवं व्यक्तियों की सुरक्षा की गारंटी तथा धर्म अर्थात् राष्ट्र के प्रति अपने कर्त्तव्यों को भली-भांति पूरा करना। इन चारों स्तम्भों के आलोक में यदि हम वर्तमान केंद्र सरकार की शासन-पद्धति को देखते हैं तो स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है कि अनु. 370 को समाप्त करके सरकार ने भारतवासियों के गौरव और सम्मान की रक्षा की है। इसी प्रकार विकसित भारत के संकल्प को पूरा करने के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य तथा रोजगार के साधनों की उपलब्धता को आमजन तक सुलभ कराने का प्रयास किया है। शिक्षा के क्षेत्र में देखा जाए तो नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सफलतापूर्वक कार्यान्वयन के द्वारा भारत सरकार ने औपनिवेशिक शिक्षा व्यवस्था की जगह राष्ट्र की उन्नति में सहयोग प्रदान करने वाली नीतियों को कार्यान्वित किया है। कहना न होगा कि महात्मा गांधी ने भी शिक्षा व्यवस्था और शिक्षा नीति में उन सभी पहलुओं को शामिल करने की बात की थी, जो बालक के जीवन के संपूर्ण पक्षों को सुधार सके अर्थात् इससे शरीर, मन और आत्मा का भी सर्वांगीण विकास हो सके। हिंद स्वराज में अपने विचार व्यक्त करते हुए गांधी जी मानते हैं कि शिक्षा व्यवस्था भारतीय परिवेश और भाषा के अनुकूल होनी चाहिए। उसे आयातित भाषा और सोच के द्वारा आगे नहीं बढ़ाया जा सकता- "आपको समझना चाहिए कि अंग्रेजी शिक्षा लेकर हमने अपने राष्ट्र को गुलाम बनाया है। अंग्रेजी शिक्षा से दंभ, राग, जुल्म वगैरा बढ़े हैं। अंग्रेजी शिक्षा पाए हुए लोगों ने प्रजा को ठगने में, उसे परेशान करने में कुछ भी उठा नहीं रखा है। अब अगर हम अंग्रेजी शिक्षा पाये हुए लोग उसके लिए कुछ करते हैं, तो उसका हम पर जो कर्ज चढ़ा हुआ है उसका कुछ हिस्सा ही हम अदा करते हैं।"[3]

स्पष्ट है कि महात्मा गांधी देश की उन्नति के लिए निज भाषा और निज सभ्यता को अपनाने की बात करते हैं। उल्लेखनीय है कि विदेशी भाषा और सभ्यता कभी भी भारत की उन्नति के विषय में सकारात्मक नहीं रही है। फिर भी आजादी के इतने वर्षों के बाद भी हम औपनिवेशिक शिक्षा व्यवस्था को ढो रहे थे, जिसका परिष्कार अत्यंत आवश्यक था। कहना न होगा कि पाश्चात्य सभ्यता भौतिकवादी सभ्यता का पर्याय है। इसके विपरीत भारतीय सभ्यता और सांस्कृतिक मूल्य भारत को आध्यात्मिकता का बल प्रदान करते हैं। गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी भौतिक सुखों की अपेक्षा आध्यात्मिक सुखों पर बल दिया है। बापू भी इससे प्रभावित थे।

"एही तन कर फल बिषय न भाई। स्वर्गउ स्वल्प अंत दुखदाई।"[4]

पाश्चात्य सभ्यता The greatest good for the greatest number अर्थात् अधिकतम व्यक्तियों के अधिकतम सुख की बात करती है। इसके विपरीत भारतीय सभ्यता ने 'वसुधैव कुटुम्बकम्' जैसे मूल्यों को आत्मसात

[2]तुलसीदास, गोस्वामी, श्रीरामचरितमानस, उत्तरकाण्ड, 20/1

[3]गांधी, महात्मा, हिंद स्वराज, शिक्षा भारती, दिल्ली, सं. 2014, पृष्ठ 68

[4] गोस्वामी, तुलसीदास, श्रीरामचरितमानस, उत्तरकाण्ड, 43/1

कर समस्त जगत् के सुख और दुःख को अपना सुख-दुःख मानकर उनके साथ साहचर्यपूर्ण जीवन-यापन की शिक्षा प्रदान करती है। यही कारण है कि हम 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामया' को अपना आदर्श मानते हैं। गांधी जी के राम-राज का मुख्य लक्ष्य ही यही है जहाँ कोई दीन-हीन, निर्बल न रहे अपितु समाज प्रत्येक व्यक्ति को बराबर का हक प्रदान करे। समाज से दुःख और दरिद्रता का नाश हो। अवगत हो कि गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्रीरामचरितमानस में रामराज्य का जो वर्णन प्रस्तुत किया है, वहाँ सभी प्राणी एक-दूसरे के साथ सद्भावपूर्ण जीवन तो जीते ही हैं, साथ ही साथ अपने मूल धर्म का भी पालन करते हैं-

"सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती।"[5]

इन आदर्शों को स्वीकार करने के उपरांत ही महात्मा गांधी ने आजीवन नस्लवाद, संप्रदायवाद व जातिवाद जैसी कुप्रथाओं का न केवल विरोध किया अपितु समाज को भी अपने मूल्यों एवं विचारों से अवगत कराया। उन्होंने स्पष्ट रूप से पाश्चात्य और भारतीय सभ्यता के मध्य की विभाजक रेखा की पहचान की और उसे व्यक्त भी किया- "हिंदुस्तान की सभ्यता का झुकाव नीति को मजबूत करने की ओर है, पश्चिम की सभ्यता का झुकाव अनीति को मजबूत करने की ओर है। इसलिए मैंने उसे हानिकारक कहा है। पश्चिम की सभ्यता निरीश्वरवादी है, हिंदुस्तान की सभ्यता ईश्वर को मानने वाली है।"[6]

इसके अतिरिक्त पाश्चात्य सभ्यता मशीनीकरण पर विशेष बल देती है। इसके विपरीत भारतीय सभ्यता मशीनीकरण का विरोध नहीं करती लेकिन उसका अन्धानुकरण कभी नहीं करती क्योंकि मशीनें कभी भी मानवता को पछाड़ नहीं सकती। शारीरिक श्रम भी अत्यंत आवश्यक है अन्यथा आदमी मशीनों का दास बन कर रह जाएगा। गांधी जी इंद्रियों पर नियंत्रण की बात भी करते हैं, जिसका सीधा अर्थ इंद्रियों का सही उपयोग है। हिंद स्वराज में वे कहते हैं-

"मनुष्य की वृत्तियाँ चंचल हैं। उसका मन बेकार की दौड़धूप किया करता है। उसका शरीर जैसे-जैसे ज्यादा दिया जाय वैसे-वैसे ज्यादा माँगता है। ज्यादा लेकर भी वह सुखी नहीं होता। भोग भोगने से भोग की इच्छा बढ़ जाती है। इसलिए हमारे पुरखों ने भोग की हद बाँध दी। बहुत सोच-समझकर उन्होंने देखा कि सुख-दुःख तो मन के कारण हैं। अमीर अपनी अमीरी की वजह से सुखी नहीं है, गरीब अपनी गरीबी के कारण दुखी नहीं है। अमीर दुखी देखने में आता है और गरीब सुखी देखने में आता है। करोड़ों लोग तो गरीब ही रहेंगे। ऐसा देख कर उन्होंने भोग की वासना छुड़वाई। हजारों साल पहले जैसी हमारी शिक्षा थी वही चलती आई। हमने नाशकारक होड़ को समाज में जगह नहीं दी; सब अपना-अपना धंधा करते रहे। उसमें उन्होंने दस्तूर के मुताबिक दाम लिए। ऐसा नहीं था कि हमें यंत्र वगैरा की खोज करना ही नहीं आता था। लेकिन हमारे

[5]वही, उत्तरकाण्ड 20/1

[6] गांधी, महात्मा, हिंद स्वराज, शिक्षा भारती, दिल्ली, सं. 2014, पृष्ठ 47

पूर्वजों ने देखा कि लोग अगर यंत्र वगैरा के झंझट में पड़ेंगे, तो गुलाम बनेंगे और अपनी नीति को छोड़ देंगे। उन्होंने सोच समझकर कहा कि हमें अपने हाथ-पैरों से जो काम हो सके वही करना चाहिए। हाथ-पैरों का इस्तेमाल करने में ही सच्चा सुख है, उसी में तन्दुरुस्ती है।"[7]

आर्थिक दृष्टि से विचार किया जाए तो स्पष्ट है कि मशीनों के कारण उद्योग-धंधों में तेजी आयी है, लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि हम लघु एवं कुटीर उद्योगों पर ध्यान न दें। गांधी जी ने सदैव लघु एवं कुटीर उद्योगों को बचाने का प्रयास किया। उन्होंने आदर्श, शोषण मुक्त तथा मानवतावादी दृष्टि से आमजन की आकांक्षाओं एवं जरूरतों का भी भरपूर ध्यान रखा और नीति निर्माण में इसका उपयोग करने की भी सलाह दी। उनके विचारों की स्पष्ट छाया भारतीय संविधान के नीति निदेशक तत्त्वों में दिखाई देती है। "निदेशक तत्त्वों का लक्ष्य है इन आदर्शों को प्राप्त करना यथा, एक सच्चे कल्याणकारी राज्य की स्थापना हो और अन्य बातों के साथ-साथ, आर्थिक शोषण और भारी असमानताओं तथा अन्यायों के अंत की व्यवस्था हो तथा राज्य पर न्यायसंगत सामाजिक व्यवस्था सुनिश्चित करने का भार डाला जाए।"[8] इन तत्त्वों का मुख्य उद्देश्य सामाजिक क्रांति के लिए मार्ग प्रशस्त करना है, जिससे सरकारी योजनाओं का लाभ समाज के सबसे निचले पायदान पर खड़े व्यक्ति को भी मिल सके।

भारत सरकार ने 'मेक इन इंडिया', 'स्टार्ट अप इंडिया' जैसे योजनाओं के द्वारा व्यक्तिगत कुशलताओं को मांजने का अवसर तो प्रदान किया ही है, साथ ही साथ आर्थिक दृष्टि से कमजोर लोगों के लिए आर्थिक सहायता की पहल की और उनके उद्योगों के विकास को गति प्रदान करने का कार्य किया है। इसके अतिरिक्त 'फसल बीमा योजना' तथा 'किसान योजना' के द्वारा छोटे और सीमांत किसानों की फसलों की सुरक्षा की गारंटी ...

भारत सरकार ने 'मेक इन इंडिया', 'स्टार्ट अप इंडिया' जैसे योजनाओं के द्वारा व्यक्तिगत कुशलताओं को मांजने का अवसर तो प्रदान किया ही है, साथ ही साथ आर्थिक दृष्टि से कमजोर लोगों के लिए आर्थिक सहायता की पहल की और उनके उद्योगों के विकास को गति प्रदान करने का कार्य किया है। इसके अतिरिक्त 'फसल बीमा योजना' तथा 'किसान योजना' के द्वारा छोटे और सीमांत किसानों की फसलों की सुरक्षा की गारंटी एवं किसान भाइयों को प्रति वर्ष 6000 रुपये की आर्थिक सहायता दे कर उनके भार को कम करने का भी प्रयास किया है। 'सांसद आदर्श ग्राम योजना' के अंतर्गत प्रत्येक सांसद को अपने संसदीय क्षेत्र में वर्ष 2014 तक एक गाँव, 2019 तक तीन गाँव तथा 2024 तक पाँच गाँवों को लेकर उन्हें आदर्श गाँव के रूप में विकसित करना था। इसके परिणामस्वरूप विकास के पथ को गाँवों तक सीधे पहुँचाया गया। इससे पंचायती शासन तंत्र में भी सुधार होगा। गांधी जी का स्पष्ट विचार था कि जब तक भारत के गाँव विकसित नहीं होंगे भारत विकसित राष्ट्र नहीं बन सकेगा क्योंकि भारत के अधिकांश लोग अभी भी गाँवों में बसते हैं। जब तक उनकी जीवन शैली एवं कार्य पद्धति में सुधार नहीं होगा, जब तक विकसित भारत का सपना अधूरा ही प्रतीत होगा। उदाहरण के लिए स्वच्छ भारत की तस्वीर तभी सुंदर होगी, जब प्रत्येक घरों में शौचालय की सुविधा उपलब्ध हो और लोग खुले में शौच करने से बचें। गांधी जयंती के दिन ही वर्तमान केंद्र सरकार ने 'स्वच्छ भारत मिशन कार्यक्रम' का शुभारंभ किया, जिसका उद्देश्य खुले में शौच की कु-प्रथा को समाप्त करना, पेयजल को भी शुद्धता के साथ जन-जन तक पहुँचाना था।

वर्ष 2014 में ही भारत सरकार ने हरियाणा राज्य से 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' योजना का शंखनाद किया, जिसका लक्ष्य समाज में बेटी और बेटा को लेकर बने पूर्वाग्रहों का पटाक्षेप करना तो था ही साथ ही साथ

---

[7] वही, पृष्ठ 45

[8]काश्यप, सुभाष, हमारा संविधान, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, दूसरा सं. 2004, पृष्ठ 124

लिंगानुपात, कुशलता तथा महिला व बाल विकास कार्यक्रमों को भी गति प्रदान करना था। गांधी जी का भी मानना था कि प्रारंभिक स्तर पर बच्चों को उनके मातृभाषा में शिक्षा देना चाहिए। शिक्षा का उद्देश्य केवल साक्षर होना नहीं है अपितु शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति का सर्वांगीण विकास संभव होता है। हिंद स्वराज में गांधी जी कहते हैं– “मैंने अक्षर–ज्ञान को (हर हाल में) बुरा नहीं कहा है। मैंने तो इतना ही कहा है कि उस ज्ञान की हमें मूर्ति की तरह पूजा नहीं करनी चाहिए। वह हमारी कामधेनु नहीं है। वह अपनी जगह पर शोभा दे सकता है और वह जगह यह है जब मैंने और आपने अपने इन्द्रियों को वश में कर लिया हो, जब हमने नीति की नींव मजबूत कर ली हो, तब अगर हमें अक्षर–ज्ञान पाने की इच्छा हो, तो उसे पाकर हम अच्छा उपयोग कर सकते हैं। वह शिक्षा आभूषण के रूप में अच्छी लग सकती है। लेकिन अक्षर–ज्ञान का अगर आभूषण के तौर पर ही उपयोग हो, तो ऐसी शिक्षा को लाजिमी करने की हमें जरूरत नहीं। हमारे पुराने स्कूल ही काफी हैं। वहाँ नीति को पहला स्थान दिया जाता है। वह सच्ची प्राथमिक शिक्षा है। उस पर हम जो इमारत खड़ी करेंगे वह टिक सकेगी।”[9]

नयी शिक्षा नीति का उद्देश्य भी यही है कि बालक का सर्वांगीण विकास हो सके तथा उसकी योग्यतानुसार कौशल प्रशिक्षण दे कर उसे आत्मनिर्भर बनाया जा सके। इसके अतिरिक्त इस शिक्षा नीति में भारत की प्राचीनतम भाषा संस्कृत का भी परिचय करा कर भारतवर्ष की सांस्कृतिक विरासत को संजोने का कार्य किया जा रहा है। इसके साथ ही साथ संस्कृत भाषा तथा अन्य देशी भाषाओं को भी संरक्षित करने का कार्य वर्तमान केंद्र सरकार के द्वारा संभव हो पा रहा है। इससे गांधी जी के स्वप्न मूर्त रूप लेते हुए दिखाई दे रहे हैं तथा उनकी रामराज्य की अवधारणा अत्यधिक स्पष्ट आकार ग्रहण करने लगी है।

गांधी जी का रामराज्य का स्वप्न तब तक अधूरा दिखाई देगा, जब तक भारतवर्ष सुशासन प्रणाली को पूरी तरह से न अपना ले। इसके लिए यह आवश्यक है कि सरकार की जो भी नीतियाँ और कानून हैं, वे सभी पूरे भारतवासियों के लिए एक ही होना चाहिए। एक राष्ट्र के भीतर दो तरह के नीति नियंता कभी नहीं हो सकते। यही कारण है कि अनु. 370 को निरस्त करके वर्तमान सरकार ने जम्मू और कश्मीर को शेष भारत से सीधे जोड़ दिया अर्थात् अब वहाँ का शासन तंत्र भारत के अन्य राज्यों की ही तरह सामान्य हो गए हैं। राष्ट्र विरोधी गतिविधियों को पूरी तरह समाप्त करके सुशासन को स्थापित किया गया है। इसके अतिरिक्त सुशासन प्रणाली को मजबूत करने के उद्देश्य से सरकार ने तमाम पोर्टलों को ऑनलाइन कर दिया है, जहाँ व्यक्ति अपनी समस्याओं का निदान पा सकता है, सुझाव दे सकता है तथा अपनी काम की जानकारी को भी आसानी से प्राप्त कर सकता है। जन–शिकायतों के लिए जनसुनवाई जैसे महत्त्वपूर्ण पोर्टलों के द्वारा व्यक्ति सीधे प्रशासन तक अपनी बात पहुँचा सकता तथा निदान से संतुष्ट न रहने पर फीडबैक में अपनी असंतुष्टी भी प्रकट कर सकता है। ऐसा करने पर वह पुन: उच्चाधिकारी के संपर्क में आता है और त्वरित निदान प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार हम देख सकते हैं कि तकनीकी के ही कुशल प्रयोग के द्वारा सरकार और जनता के मध्य की खाई पटने लगी है और जनता अपनी भागीदारी को बढ़ा करके लोकतंत्र को मजबूती प्रदान कर रही है। कहने का तात्पर्य यह है कि जिस शासन तंत्र से जनता संतुष्ट नहीं

शिक्षा का उद्देश्य केवल साक्षर होना नहीं है अपितु शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति का सर्वांगीण विकास संभव होता है। हिंद स्वराज में गांधी जी कहते हैं- “मैंने अक्षर-ज्ञान को (हर हाल में) बुरा नहीं कहा है। मैंने तो इतना ही कहा है कि उस ज्ञान की हमें मूर्ति की तरह पूजा नहीं करनी चाहिए। वह हमारी कामधेनु नहीं है। वह अपनी जगह पर शोभा दे सकता है और वह जगह यह है जब मैंने और आपने अपने इन्द्रियों को वश में कर लिया हो, जब हमने नीति की नींव मजबूत कर ली हो...

[9]गांधी, महात्मा, हिंद स्वराज, शिक्षा भारती, दिल्ली, सं. 2014, पृष्ठ 67

होती है, वह आगामी चुनाव में अपने प्रतिनिधि को बदल सकती है। अन्य शब्दों में कहें तो सरकार का यह लक्ष्य होता है कि जनता की भलाई करे और जनता से निरंतर संवाद स्थापित करे, तभी वह जन–कल्याण की दिशा में कदम उठा सकती है। गांधी जी ने भी सरकार को जन–कल्याणकारी नीतियों को अपनाने का सलाह दिया था। उनका अटल विश्वास था कि जो सरकार जनता की आकांक्षाओं पर खरी नहीं उतरेगी, जनता उसका अवश्य प्रतिरोध करेगी। लोकतांत्रिक व्यवस्था में प्रधानमंत्री को जिम्मेदारी अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो जाती है। यही कारण है कि रामराज्य की स्थापना के लिए जनता और उसके प्रतिनिधियों के मध्य दूरी नहीं बढ़नी चाहिए, अन्यथा–

भारतीय संस्कृति मानव को व्यक्ति और समाज के रूप में अलग–अलग नहीं बाँटती है और न ही मानव को केवल भौतिक इकाई मानती है अपितु "भारतीय परंपरा मानव को एकात्म मानती है। एकात्म, यानी जिसको बाँटा नहीं जा सकता।

जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी। सो नृप अबसि नरक अधिकारी।[10]

वास्तव में प्रभावी, पारदर्शी और जवाबदेह शासनतंत्र के बिना वास्तविक लोकतंत्र की स्थापना संभव नहीं है। महात्मा गांधी जी के इन विचारों को आज के समय के साथ मिलाकर देखने पर स्पष्ट पता चलता है कि वर्तमान सरकार भारतवर्ष की सांस्कृतिक एकात्मकता के लक्ष्य को लेकर तो चल ही रही है साथ ही साथ इसमें अलगाव और सांप्रदायिकता की जगह अनेकता में एकता के स्वर एवं सामाजिक सौहार्द के स्पष्ट झाँकी दिखाई दे रही है। अन्य शब्दों में कहें तो भारतवर्ष की महान सांस्कृतिक विरासत हमें अनेकता में भी एकता के सूत्र से बाँधती है। हमारे यहाँ विचारों में मतभेद हो सकते है, लेकिन राष्ट्र और समाज के प्रति हमारा दृष्टिकोण एकदम साफ एवं स्थिर दिखाई देता है। गांधी जी की ही भांति पं. दीनदयाल उपाध्याय जी ने भी अपने एकात्म मानववाद की स्थापना में भारतीय संस्कृति की एकात्मकता को रेखांकित करते हैं। उनका मानना है कि भारतीय संस्कृति मानव को व्यक्ति और समाज के रूप में अलग–अलग नहीं बाँटती है और न ही मानव को केवल भौतिक इकाई मानती है अपितु "भारतीय परंपरा मानव को एकात्म मानती है। एकात्म, यानी जिसको बाँटा नहीं जा सकता। न बाँटी जा सकने वाली इकाई को एकात्म कहते हैं। समाज और व्यक्ति इस प्रकार जुड़े हुए हैं, उन्हें अलग–अलग नहीं किया जा सकता। मानव व्यक्ति के रूप में समाज का अभिन्न अंग होता है। व्यक्ति परिवार के बिना नहीं रह सकता। परिवार अपने ग्राम, शहर या मोहल्ले के बिना नहीं रह सकता। ग्राम शहर से भी आगे देश व दुनिया की इकाइयाँ हैं। व्यक्ति इन सभी सामुदायिकताओं का हिस्सा है, इनसे स्वतंत्र नहीं है। एकात्म मानव का सुख व्यक्ति व समाज में बँटा हुआ नहीं वरन् एकात्म होता है।"[11]

गांधी जी की चिंता थी कि हम ईश्वर से विमुख होते जा रहे हैं, वह चिंता भी धीरे–धीरे कम होती दिखाई पड़ रही है। मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्रीराम अपने पूर्ण वैभव के साथ अयोध्या में विराजमान हो चुके हैं। इससे सरकार ने आम आदमी की आस्था को संबल प्रदान किया है। प्रभु श्रीराम पतितों के दु:खों का नाश करके समतामूलक समाज की स्थापना करने वाले हैं। यही कारण है कि गांधी जी निरंतर उनका स्मरण करते थे–

'रघुपति राघव राजा राम। पतित पावन सीताराम।'

गांधी जी का विश्वास था कि जिस प्रकार भगवान राम के राज्याभिषेक के उपरांत सभी दीन–दुखियों के संताप समाप्त हो गए, सभी लोग खुशी से झूमने लगे, ठीक इसी प्रकार कल्याणकारी शासन तंत्र में जनता भी अपने प्रतिनिधियों के प्रति अगाध स्नेह और प्रेम को प्रकट करती है–

"राम राज बैठै त्रैलोका। हरषित भए गए सब सोका।"[12]

तुलसी के समय में लोकतंत्र, समाजवाद, साम्यवाद जैसी आधुनिक शासन पद्धति और विचार–सूत्र विकसित नहीं हुए थे, फिर भी तुलसीदास जी ने रामराज्य के माध्यम

---

[10]गोस्वामी, तुलसीदास, श्रीरामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड, 70/3

[11] उपाध्याय, दीनदयाल, एकात्म मानववाद, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2022, पृष्ठ 65

[12]वही, उत्तरकाण्ड, 19(ग)/4

लोक-कल्याणकारी शासन तंत्र के विचार-सूत्र को आगे बढ़ाया है। उनके यहाँ सभी को न्याय मिलता है, सभी बराबर हैं। कोई छोटा नहीं है और न ही कोई बड़ा है अपितु जिस प्रकार लोकतांत्रिक शासन पद्धति में जनता सर्वोपरि होती है और उसके प्रतिनिधि के लिए जनता का सुख-दुःख उसका अपना सुख-दुःख होता है, ठीक इसी प्रकार राम भी अपने नगरवासियों के सुख-दुःख की चिंता करते हैं। उन्हें भी उनका नगर और उसके लोग अत्यंत प्रिय लगते हैं-

"अवधपुरी सम प्रिय नहिं सोऊ। यह प्रसंग जानइ कोउ कोउ।

अति प्रिय मोहि इहाँ के बासी। मम धामदा पुरी सुख रासी।।"[13]

इसके विपरीत अंग्रेजी राज को गांधी जी कल्याणकारी नहीं मानते। इसके पीछे जो तर्क उन्होंने दिया है, उसमें सबसे महत्त्वपूर्ण तर्क यही है कि अंग्रेज भारतीयों की खून-पसीने की मेहनत को लूट रहे हैं और भारतीय संसाधनों का दोहन करके उससे यूरोप में उद्योगों का विकास कर रहे हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि गांधी जी का भी मानना था कि शासक को जनता के हित में ही कार्य करने चाहिए। उसके मेहनत का पारिश्रमिक उसे अवश्य मिलना चाहिए। वे स्पष्ट रूप से मानते हैं कि अंग्रेजों के "राज-कारोबार से देश कंगाल होता जा रहा है। वे हर साल देश से धन ले जाते हैं। वे अपनी ही चमड़ी के लोगों को बड़े ओहदे देते हैं, हमें सिर्फ गुलामी में रखते हैं, हमारे साथ बेअदबी का बरताव करते हैं और हमारी जरा भी परवाह नहीं करते।" इसके विपरीत आधुनिक लोकतांत्रिक शासन पद्धति में भी कुछ-कुछ बुराइयाँ हैं। जैसे कभी-कभी सत्तालोलुप शासक यदि सत्तासीन हो जाता है और जनता के हित में फैसले न लेकर केवल अपने ही हित की बात सोचता है तो फिर जनता को वास्तविक स्वराज प्राप्त नहीं हो पाता। 25 जून 1975 को तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने भी लोकतांत्रिक शासन पद्धति की जगह तानाशाही शासन तंत्र को स्थापित किया था, जिसका पुरजोर विरोध जनता ने किया। आज वर्तमान भारत की सरकार को देखते हैं तो वह अपेक्षाकृत अत्यधिक स्थिर, जन-कल्याणकारी तथा वैचारिक रूप से मजबूत दिखाई पड़ती है। आज भारत मानवता के सबसे बड़े पक्षधर के रूप में अपनी छवि को बना लिया है। कोरोना जैसी वैश्विक बीमारी में तथा भूकम्प आदि आपदाओं में भारतीय सेना और वैज्ञानिक लोग जो तत्परता दिखा रहे हैं, निश्चय ही यह सुशासन की ओर संकेत करता है।

सारांश यह है कि महात्मा गांधी के रामराज्य के विचार को धीरे-धीरे कार्यान्वित करके आज भारत विकसित भारत की ओर तेजी से आगे बढ़ रहा है। इसमें प्राणियों के मध्य किसी भी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं है। यहाँ मानव के साथ-साथ पर्यावरण की भी गहरी चिंता दिखाई देती है। यही कारण है कि भारत मानवता के बनिस्पत विकसित भारत की ओर नहीं अपितु मानवीय मूल्यों और विचारों को लेकर ही भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए दृढ़-संकल्पित है। भारत अपने कार्बन उत्सर्जन को कम करके निरंतर विश्व को संदेश दे रहा है कि इस वसुधा को बचाने के लिए हमें कठोर निर्णय लेने पड़ेंगे। यही कारण है कि भारत अपने कार्बन उत्सर्जन को कम करके अगले वर्ष तक कार्बन क्रेडिट योजना के कार्यान्वयन की भूमिका तैयार कर रहा है। इसके अतिरिक्त सौर ऊर्जा जैसे विकल्पों के द्वारा शून्य कार्बन उत्सर्जन की सीमा का स्पर्श करके वैश्विक तपन जैसी समस्याओं के निदान में निरंतर लगा हुआ है। महात्मा गांधी जी ने भी अपने रामराज्य की संकल्पना में शासन तंत्र को जनोन्मुखी बनने की सलाह दी थी। यही कारण है कि भारत आज उनके आदर्शों पर चल कर शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण तथा राष्ट्र की एकता और अखण्डता को सुदृढ़ करके विकास की सीढ़ी चढ़ रहा है। सांस्कृतिक पुनर्जागरण के इस दौर में हम अपनी सांस्कृतिक विरासत को तो सहेज ही रहे हैं साथ ही साथ सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिरता के कारण विकास के पथ पर तीव्र गति से बढ़ रहे हैं।

(लेखक दिल्ली विश्वविद्यालय के किरोड़मल कॉलेज में प्रोफेसर हैं)

संपर्कः मो. 8800886847

[13] वही, उत्तरकाण्ड, 3(ग)/ 2 और 4

साहित्य में गांधी-प्रभाव स्पष्ट है

सुमन बाजपेयी

बीसवीं शताब्दी में भारतीय राजनीति के क्षेत्र में सबसे प्रभावकारी नेता के रूप में मोहनदास करमचंद गांधी का उदय हुआ। भारतभूमि को स्वतंत्रता दिलाकर स्वराज्य स्थापित करने की मनीषा से इस व्यक्ति ने अपना सम्पूर्ण जीवन ही राष्ट्र को समर्पित कर दिया था। महात्मा गांधी राजनेता थे, साहित्यकार नहीं, लेकिन भारत के लगभग सभी साहित्यकार, सन 1920 से 1940 तक प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से उनसे प्रभावित हुए। उनमें से कई गांधी जी के संपर्क में आए। कई ने उनके रचनात्मक कार्यक्रम में 'राष्ट्रीय भाषा' सूत्र से यह वाक्य अपनाया था, 'अगर हमें अपने देश की आत्मा से सच्चा प्रेम है, तो हमें कम-से-कम उतने महीने हिंदुस्तानी सीखने में लगाने ही चाहिए जितने वर्ष हमने अंग्रेजी सीखने में बिताए हैं।'

भारत की लगभग सभी भाषाओं के साहित्य पर गांधी के मानवतावादी वैचारिक चिंतन का गहरा असर दिखाई देता है। विशेषत: हिंदी साहित्य और साहित्यकार गांधी दर्शन से सर्वाधिक प्रभावित हुए।

गांधी जी ने अपने विचारों, अपने व्यक्तित्व, अपनी भाषा, अपने कार्यक्रमों, विशेषकर अपने भाषणों एवं लेखन के सशक्त माध्यम से देशवासियों में मूलत:, लेखकों, साहित्यकारों, पत्रकारों के मानस में सत्य-अहिंसा, प्रेम-एकता, शांति-सद्भावना के बीज रोपे।गांधी जी की प्रेरणा से हिंदी भारतीय साहित्य में बोलचाल की सरल-सहज भाषा, कहानी और कविता का माध्यम बनी। पहले जो संस्कृत और बोझिल पंडिताऊ भाषा लिखी जाती थी, वह एक तरह से समाप्त ही हो गई। हिन्दी साहित्यकारों के साथ-साथ, दक्षिण भारत के साहित्यकारों में भी गांधी जी के भाषण का अद्वितीय प्रभाव रहा।

स्वतंत्रता पूर्व व बाद के साहित्यकारों की लेखनी में गांधी

प्रेमचंद जी गोरखपुर में 1923 में गांधी जी का भाषण सुनकर इस तरह प्रभावित हुए कि उन्होंने 23 बरस की अपनी सरकारी नौकरी छोड़ दी और हिंदी साहित्य जगत में उपन्यास सम्राट बने। राष्ट्र कवि मैथिली शरण गुप्त ने भी, गांधी जी के भाषा से प्रभावित होकर, 'उपेक्षिता उर्मिला' को लेकर 'साकेत' की रचना के बारे में गांधी जी से पत्र व्यवहार किए।

महात्मा गांधी जी का कथन था कि 'समाज के वंचित, दलित-शोषित, दरिद्रनारायण की सेवा करो।' यही कारण है कि कई काव्य

गांधी जी ने अपने विचारों, अपने व्यक्तित्व, अपनी भाषा, अपने कार्यक्रमों, विशेषकर अपने भाषणों एवं लेखन के सशक्त माध्यम से देशवासियों में मूलत:, लेखकों, साहित्यकारों, पत्रकारों के मानस में सत्य-अहिंसा, प्रेम-एकता, शांति-सद्भावना के बीज रोपे। गांधी जी की प्रेरणा से हिंदी भारतीय साहित्य में बोलचाल की सरल-सहज भाषा, कहानी और कविता का माध्यम बनी। पहले जो संस्कृत और बोझिल पंडिताऊ भाषा लिखी जाती थी, वह एक तरह से समाप्त ही हो गई।

और उपन्यास अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों पर लिखे गए। सन बीस से लेकर चालीस के बीच पचासों उपन्यास इस दिशा में अग्रसर हुए। मैथिलीशरण गुप्त के 'किसान' और 'अछूत' खंडकाव्य, रवीन्द्रनाथ की 'चांडालिका', शरतचंद्र चटर्जी का 'पल्ली समाज' इसी कोटी के हैं। गांधी जी ने सेवा, संयम एवं अहिंसा का जो पाठ पढ़ाया था, उसी को आधार बनाकर सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने व्यंग्य नाटक 'बकरी' लिखा। नरेंद्र कोहली का 'शंबूक की हत्या' भी इसी कोटि का है।

गांधी जी का कहना था, 'गांवों की ओर चलो।' विकेंद्रीकरण के इस नारे का ही प्रभाव था कि हिन्दी में 'देहाती दुनिया', 'गोदान' और 'मैला आंचल' तक, ग्राम और ग्रामीण जीवन, कहानियों और उपन्यासों का विषय बना। महात्मा गांधी जी के सिद्धांतों का प्रभाव केवल राष्ट्रीय आंदोलन पर ही नहीं, विश्व शांति के लिए अहिंसा का प्रेरणा देने में भी था। इस विषय को लेकर कई काव्य हिन्दी में लिखे गए। प्रायः हर हिन्दी भाषा-भाषी प्रदेशों में राष्ट्रीय आंदोलन के नेताओं और प्रेमियों ने आत्मकथाएं लिखी हैं। जिसमें गांधी जी की देश को एक सूत्र में बांध रखने की चाह के दर्शन मिलते हैं। राजेंद्र प्रसाद हों या जयप्रकाश नारायण, द्वारिका प्रसाद हों या सेठ गोविन्द दास, सभी में 'एक जगत' और 'मानव-मानव सब हैं समान' की भावना ही मिलती है। गांधी जी के जिन भाषा विषयक विचारों से भारतवासी प्रभावित हुए, उनमें उन लेखों का स्थान प्रमुख था, जो 'यंग इंडिया', 'हरिजन सेवक', 'हरिजन बंधु' आदि में प्रकाशित हुए थे। इसके अतिरिक्त गांधी जी के द्वारा लिखी गई 'इंडियन होमरूल', और 'हिन्दी स्वराज जैसी पुस्तकों और तत्कालीन विभिन्न व्यक्तियों के नाम पर लिखे गए पत्रों आदि से भी प्रभावित हुए थे। हिन्दी साहित्यकारों के साथ-साथ, दक्षिण भारत के साहित्यकारों में भी गांधी जी के भाषण का अद्वितीय प्रभाव रहा।

महात्मा गांधी ने स्वाधीनता आंदोलन के लिए एक राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी को प्राथमिकता दी। गांधी जी ने अपने जीवन में जो संघर्ष किए उनका प्रभाव भारत के स्वाधीनता आंदोलनों व समकालीन साहित्य पर भी पड़ा।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद कई साहित्यकारों ने कहानियों, उपन्यासों और नाटकों के माध्यम से गांधी-दर्शन से संबंधित विभिन्न विचार व्यक्त किए। साहित्यकारों ने अपनी ओर से समाज हित के लिए बहुत कुछ करने के प्रयास किए और इस दिशा में काफी हद तक वे सफल हुए।

महात्मा गांधी जी, महान साहित्यकार नहीं थे, लेकिन भारत के लगभग सभी साहित्यकार, सन भारतीय साहित्य की युवा पीढ़ी हमेशा से गांधी दर्शन से प्रभावित रही है। उस समय के साहित्य पर गांधी दर्शन का स्पष्ट प्रभाव था। मैथिलीशरण गुप्त की भारत भारती, प्रेमचंद की रंगभूमि, माखनलाल चतुर्वेदी की पुष्प की अभिलाषा, रामधारी सिंह दिनकर की मेरे नगपति मेरे विशाल, सुभद्रा कुमारी चौहान की झांसी की रानी आदि साहित्यिक रचनाएं गांधी दर्शन से ही प्रेरित रही हैं।

आधुनिक हिन्दी साहित्य पर गांधी का प्रभाव पूरी परिशुद्धता के साथ व्याप्त है। महात्मा गांधी ने भारत भूमि की स्वाधीनता के लिए अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। वे जनमानस में सत्य, अहिंसा, प्रेम, एकता, शांति, सद्भाव, सर्वधर्म सम्भाव, समानता एवं मानवता की भावना जागृत करने के लिए सतत् संघर्षशील रहे। गांधीजी के आदर्शों का प्रभाव जहाँ हिन्दी के कथा साहित्य पर संपूर्णता में व्याप्त हुआ है, वहीं कविता साहित्य भी इससे अछूता नहीं रहा।

महात्मा गांधी ने स्वाधीनता आंदोलन के लिए एक राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी को प्राथमिकता दी। गांधी जी ने अपने जीवन में जो संघर्ष किए उनका प्रभाव भारत के स्वाधीनता आंदोलनों व समकालीन साहित्य पर भी पड़ा।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद कई साहित्यकारों ने कहानियों, उपन्यासों और नाटकों के माध्यम से गांधी-दर्शन से संबंधित विभिन्न विचार व्यक्त किए। साहित्यकारों ने अपनी ओर से समाज हित के लिए बहुत कुछ करने के प्रयास किए और इस दिशा में काफी हद तक वे सफल हुए।

गांधी जी के आदर्श और मूल्य साहित्य में

हिन्दी साहित्य पर महात्मा गांधी के प्रभाव को स्पष्ट एवं व्यापक रूप में देखा जा सकता है, इस बात को नकारा नहीं जा सकता है। उनके चिंतन–दर्शन, राष्ट्र नवनिर्माण एवं स्वराज की कल्पना को हिन्दी साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं का विषय बनाया। साहित्य समाज का दर्पण होता है और समाज में हो रही घटनाओं का समकालीन एवं उसके बाद के साहित्य पर प्रभाव पड़ना अनिवार्य हो जाता है। गांधीजी तो अपने–आप में एक शांति के आंदोलनकर्ता थे एवं तत्कालीन राष्ट्रीय आंदोलन की घटनाओं के शांति के प्रणेता थे। अत: उनके द्वारा किए गए कार्यों को हिन्दी साहित्यकारों ने साहित्य में स्थान दिया एवं उनके मूल्यों एवं आदर्शों को साहित्य की प्रत्येक धारा में अभिव्यक्त किया। गांधीजी के मूल्यों एवं आदर्शों का हिन्दी साहित्य में तत्वधारिता रूप में अपनाना समीचीन प्रतीत होता है।

सत्य महात्मा गांधी के जीवन दर्शन का ध्रुवतारा है। महात्मा गांधी के इस विचार का प्रभाव जैनेंद्र की 'वे तीन' शीर्षक कहानी में देखा जा सकता है। गांधीजी के विचारों के प्रभाव को उनकी कहानियां 'फांसी', 'वातायन', 'एक रात', 'पाजेब' आदि में देखा जा सकता है और साथ ही उपन्यास 'सुनीता' में भी देखा जा सकता है। महात्मा गांधी का मत था कि शुद्ध सत्य की ओर अग्रसर होने के लिए मनुष्य को अपनी अंतरात्मा की आवाज को समझना चाहिए जिससे हमारा जीवन शुद्ध हो और हम पूर्ण शाश्वत सत्य को समझें। सत्य का चित्रण विष्णु प्रभाकर ने अपने कहानी संग्रह 'मेरी प्रिय कहानियां' में किया है। वासुदेव आठले की कहानी 'मानवता की भेंट' में गांधीवादी दार्शनिक चरित्र देखने को मिलता है। स्वरूप कुमार बख्शी की 'कौड़ियों का नाच' शीर्षक कहानी में महात्मा गांधी के सत्य तत्व की प्रतिष्ठा का प्रयास किया गया है। महात्मा गांधी ने सत्य को सर्वश्रेष्ठ धर्म बताया और अहिंसा को परम कर्तव्य। उनका कहना था कि सत्य की तरह अहिंसा भी सर्वशक्तिमान और असीम है, ईश्वर के समानार्थक है। गांधी के इन विचारों का सम्यक निर्वाह विनोदशंकर व्यास की 'स्वराज कब मिलेगा?' शीर्षक कहानी में असहयोग आंदोलन वर्णन के प्रसंग में होता है। अहिंसा की अनिवार्यता आनंदप्रकाश जैन की 'देवताओं की चिंता' कहानी में दृष्टिगोचर होती है।

सत्य महात्मा गांधी के जीवन दर्शन का ध्रुवतारा है। महात्मा गांधी के इस विचार का प्रभाव जैनेंद्र की 'वे तीन' शीर्षक कहानी में देखा जा सकता है। गांधीजी के विचारों के प्रभाव को उनकी कहानियां 'फांसी', 'वातायन', 'एक रात', 'पाजेब' आदि में देखा जा सकता है और साथ ही उपन्यास 'सुनीता' में भी देखा जा सकता है। महात्मा गांधी का मत था कि शुद्ध सत्य की ओर अग्रसर होने के लिए मनुष्य को अपनी अंतरात्मा की आवाज को समझना चाहिए जिससे हमारा जीवन शुद्ध हो और हम पूर्ण शाश्वत सत्य को समझें।

पारसनाथ सरस्वती ने अपनी कहानी 'अहिंसा विजय' में कहा है कि शत्रुता को कभी लड़ाई और हिंसा के द्वारा नहीं जीता जा सकता। इसका शमन मात्र प्रेम आचरण द्वारा ही संभव है।

धर्म के विषय में गांधीजी का कहना था कि धर्म जीवन का परम ध्येय है, आत्मदर्शन है, सभी धर्मों का सामंजस्य है, सबकी भलाई के लिए प्रयत्नशील है एवं देशप्रेम को ही अपना कर्तव्य मानता है। गांधी के इन विचारों का प्रतिबिम्ब विष्णु प्रभाकर की कहानी 'उस दिन' की पात्र मंजू के माध्यम से देख सकते है। मंजू सांप्रदायिकता एवं तनावपूर्ण बर्बर वातावरण में एक मुस्लिम बालक को अपने घर में शरण देकर मानवीय धर्म का पालन करती है। गांधीजी के मानवीय धर्म का उत्कृष्ट उदाहरण हमें राधेलाल विजधावने 'अतृत' की कहानी 'एक सूत्र' में प्राप्त होती है।

गांधीजी ने अपने पत्र 'हरिजन' में ईश्वर को जीवन की शक्ति माना है और वही शक्ति हमारा जीवन है। स्वरूप कुमार बख्शी के 'निर्झर कन्या' कहानी संग्रह की दो कहानियों 'बुलबुल' और 'जीवन की सात समस्याएं' के किंचित अंश महात्मा गांधी की उक्त धारणा की पुष्टि करते हैं। 'जीवन की सात समस्याएँ' कहानी में पर्णकुटी निवासिनी आध्यात्मिक शक्ति संपन्न महिला के पास एक

व्यक्ति जीवन की सात समस्याओं के समाधान के लिए जाता है और महिला के प्रबोधन से युवक अंततः समझ जाता है कि वास्तविक रोग कैंसर नहीं, मन की तृष्णा ही कैंसर है और उसकी औषधि प्रभु की कृपा है।

गांधीजी की शांति रूपी विचारधारा का प्रभाव अमृतलाल नागर की 'एटमबम' कहानी और आनंदप्रकाश जैन की 'मूंछ का बाल' कहानी में देखने को मिलता है। इनके अपरिग्रह का प्रभाव वर्तमानयुग के कहानीकार दामोदर सदन की कहानी 'मेजर श्रीनाथ का वसीयत' एवं नवनीत मिश्र की 'छाया मत छूना' कहानी में मिलता है।

गांधीजी ने अस्पृश्यता का अंत करना चाहते थे। इनके हरिजन उद्धार का प्रभाव लक्ष्मीनारायण की 'आनेवाला कल' शीर्षक कहानी में मिलता है। प्रेमचंद ने गोदान में दलितों का वर्णन दमितपात्र के रूप में नहीं किया है– सिलिया का बाप ठाकुर झिंगुरी सिंह से कहता है कि 'झगड़ा कुछ नहीं है ठाकुर, आज हम मातादीन को चमार बनाकर छोड़ेंगे या उनका और अपना रक्त एक कर देंगे।'

स्त्री जाति की प्रगति और स्वतंत्रता की राह में गांधीजी दहेज का एक बहुत बड़ा रोड़ा मानते थे। सोमा वीरा ने गांधीजी के स्वर में स्वर मिलाकर 'अधूरी गांठ' और 'राख की पुड़िया' में दहेज की कुप्रथा की तीव्र भर्त्सना की है। रामेश्वरी चकोरी ने अपनी 'आंखों का कौतुक' शीर्षक कहानी में भारतीय नारी के लिए दहेज की विवशता का वर्णन किया है। प्रेमचंद के 'निर्मला' उपन्यास में भी दहेज पीड़ित महिला का जीवन दर्शाया गया है। 'सेवासदन' में सामाजिक घृणित वेश्यावृत्ति की समस्या को उजागर किया गया है। इलाचंद्र जोशी, उपेंद्रनाथ अश्क, विनोद शंकर व्यास और विष्णु प्रभाकर ने भी अपनी कहानियों में वेश्या समस्या से संबंधित चित्र खींचे हैं। गांधीजी का सामाजिक प्रभाव अमृतराय और फणीश्वर नाथ रेणु ऊपर भी दृष्टिगोचर होता है। रेणुजी का 'नित्य लीला' और 'ताबे एकला चलो रे' में नारी के प्रति समाज का हीनबोध उद्घाटित होता है।

कथाकार अमरकांत का प्रसिद्ध उपन्यास है 'इन्हीं हथियारों से'। यह उपन्यास 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन को अपनी कथा का केंद्र बनाता है और इसका लोकेल बलिया, उत्तर प्रदेश का है। भारत छोडो आंदोलन के दौरान,

भारत में पहली स्वतंत्र सरकार बलिया जिला में ही कायम हुई थी। अमरकांत उसी आंदोलन को केंद्र में रखते हैं। उपन्यास गांधी के चरखा आंदोलन के घर-घर गाये जाने वाले गीत : 'कबो टूटे न चरखा के तार/चरखवा चालू रहे। एहि चरखा से लेबों सुराज/चरखवा चालू रहे, को चित्रितकरता है। यहाँ चरखा दरअसल यंत्र का प्रतीक नहीं है वह साम्राज्यवाद से लड़ने का एक निजी देशी हथियार है। उपन्यास में सुरंजन शास्त्री और सदाशय व्रत दोनों गांधीवादी चरित्र हैं।

गांधीजी के आदर्शों का प्रभाव जहां हिन्दी के कथा साहित्य पर संपूर्णता में व्याप्त हुआ है, वहीं कविता

साहित्य भी इससे अछूता नहीं रहा है। मैथिलीशरण गुप्त ने अपनी काव्य-रचना 'भारत-भारती' में गांधी के आदर्शों को स्थापित करते हुए कहा है-

श्री गोखले, गांधी-सदृश नेता महामतिमान हैं,
वक्ता विजय घोषक हमारे श्री सरेन्द्र समान हैं।

सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता में भी गांधीजी के असहयोग आंदोलन एवं धर्मनिरपेक्ष समाज के निर्माण की कल्पना का प्रभाव सर्वत्र देखने को मिलते हैं-

मेरा मंदिर, मेरी मस्जिद, काबा-काशी यह मेरी,
पूजा पाठ, ध्यान जप-तप है घट-घट वासी यह मेरी।
कृष्णचंद्र की क्रीड़ाओं का अपने आंगन में देखो।
कौशल्या के मातृ मोद को अपने ही मन में देखो।
प्रभु ईसा की क्षमाशीलता, नबी मुहम्मद का विश्वास
जीव दया जिन पर गौतम की आओ देखो इसके पास।

गुजरात जो बापू की जन्मभूमि तो था ही साथ ही जिसे उनकी कर्मभूमि होने का भी गौरव प्राप्त है, वहां गांधी जी गुजराती कवियों रचनाकारों के लिए रचनात्मक भूमिका निभाते रहे। गांधी जी ने अपनी रचनाधर्मिता का बखूबी निर्वहन किया। उनके व्यक्तित्व की तेजस्विता विचार और कार्य के समरूप ने उनके गद्य को रचनात्मकता की असाधारण ऊंचाई तक पहुंचा दिया। गांधी जी के विचारों का गुजराती भाषा के लेखकों पर गहरा प्रभाव पड़ा।

उड़िया साहित्य पर भी सन् 1921 के असहयोग आंदोलन का बखूबी प्रभाव पड़ा। गोपबंधुदास उड़ीसा में अपनी कविताओं द्वारा राष्ट्र जागरण का बिगुल बजा रहे थे। गांधी जी के असहयोग आंदोलन और नमक सत्याग्रह ने उड़ीसा के युवा कवियों में जोश भर दिया था। 'स्वाधीनता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है' को मूलमंत्र मानकर कुंतला कुमारी, लक्ष्मी कांत, पद्म चरण, कृष्ण चंद्र आदि कवियों ने राष्ट्र भक्ति की कविताओं का सृजन किया।

देखा जाए तो आधुनिक हिन्दी साहित्य पर गांधीजी का प्रभाव पूरी परिशुद्धता के साथ व्याप्त है। उनके विचारों को हिन्दी साहित्य के अधिकांश साहित्यकारों ने अपनाया और उनको अपनी रचना का विषय बनाया।

सत्य के प्रयोग

लोग आज भी जब गांधीजी की जीवनी श्सत्य के साथ मेरे प्रयोगश पढ़ते हैं, उनके अंदर आत्मबल एवं ऊर्जा का संचार होता है। 'सत्य के प्रयोग' महात्मा गांधी द्वारा लिखी वह पुस्तक है, जिसे उनकी आत्मकथा का दर्जा हासिल है। यह बात बहुत लोगों को नहीं पता है कि पांच भागों में बंटी इस किताब के चौथे भाग के 18वें अध्याय में खुद गांधी जी ने उस किताब का जिक्र किया है, जिसने उन्हें गहरे तक प्रभावित किया। वह पुस्तक है जॉन रस्किन की 'अनटू दिस लास्ट।' वह एक जगह लिखते हैं--'इस पुस्तक को हाथ में लेने के बाद मैं छोड़ ही न सका। मैं जोहांसबर्ग से तब नेटाल जाने के लिए निकला था, जिसका रास्ता लगभग चौबीस घंटों का था। ट्रेन शाम को डरबन पहुंचती थी। वहां पहुंचने के बाद मुझे सारी रात नींद नहीं आई। मैंने पुस्तक में सूचित विचारों को अमल में लाने को इरादा किया।

इससे पहले मैंने रस्किन की एक भी पुस्तक नहीं पढ़ी थी। विद्याअध्ययन के समय में पाठ्यपुस्तकों के बाहर की मेरी पढ़ाई लगभग नहीं के बराबर मानी जाएगी। मेरा पुस्तकीय ज्ञान बहुत ही कम है। जो भी थोड़ी पुस्तकें मैं पढ़ पाया हूं, कहा जा सकता है कि उनमें से जिसने मेरे जीवन में तत्काल महत्त्व के रचनात्मक परिवर्तन कराए, वह 'अनटू दिस लास्ट' ही कही जा सकती है। बाद में मैंने उसका गुजराती अनुवाद किया और वह 'सर्वोदय' नाम से छपा। मेरा यह विश्वास है कि जो चीज मेरे अन्दर गहराई में छिपी पड़ी थी, रस्किन के ग्रंथरत्न में मैंने उनका प्रतिबिम्ब देखा, और इस कारण उसने मुझ पर अपना साम्राज्य जमाया और मुझसे उसमें अमल करवाया।

महात्मा गांधी की विचार पद्धति का व्यापक नाम गांधी विचारधारा है। और हिंदी साहित्य पर गांधी जी के विचारों का हमें स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है।

संपर्कः

मो. 9810795705

गांधी विचार का वर्तमान सरकार की नीतियों पर प्रभाव

संजीत कुमार

गांधी विचार सम्पूर्ण विश्व में व्यापक रूप से प्रभावी है। गांधीजी के सामाजिक और धार्मिक विचारों की प्रासंगिकता युगों-युगों तक बनी रहेगी। ये विचार हमारे लिए कवच बनकर सम्पूर्ण मानव जाति की रक्षा करते रहेंगे।

गांधीजी के दक्षिण अफ्रीका प्रवास के दौरान उनमें सत्याग्रह, प्रेम और मानवता जैसे विचार के बीज अंकुरित हुए और धीरे-धीरे यह विशालकाय वृक्ष के रूप में पूरे विश्व को शीतलता प्रदान करने लगे। पूरे विश्व में लोगों ने गांधी विचार को मन, कर्म और वचन से अपनाया, अपनाने वाले व्यक्तित्व ने भी वैचारिक अमरता प्राप्त कर ली।

भारत में आचार्य विनोबा भावे, संपूर्ण क्रांति के प्रणेता-जयप्रकाश नारायण, आचार्य जे बी कृपलानी आदि, सबने गांधी विचार के समुद्र में गोता लगाया और इतिहास में अमिट छाप छोड़ी। देश के बाहर जिसने भी गांधीवादी विचारधारा को आदर्श माना, उन सबने अपने-अपने देश में महामानव की उपाधि पाई। चाहे अमेरिका में मार्टिन लूथर किंग जूनियर हो या दक्षिण अफ्रीका के नेल्सन मंडेला। सबने माना कि किसी भी तरह के संघर्ष का समाधान अहिंसा है। इन सबके संघर्ष की उपलब्धियां स्पष्ट करती है कि बल प्रयोग के बजाय, बातचीत का परिणाम चमत्कारिक होता है। म्यामांर में भी आंग सान सू की गांधी की ही विचारधारा पर अड़िग है और व्यापक जनसमर्थन पा रही हैं।

वर्तमान परिवेश में वैश्विक पटल पर कई चुनौतियां व्याप्त हैं। कई देशों के बीच पारस्परिक संबंध बेहद बुरे दौर से गुजर रहा है। कुछ देश युद्ध का समाधान खोज रहे हैं। युद्ध में नरसंहार हो रहा है। निर्दोष लोगों की जान जा रही है। गांधी विचार हिंसा के रास्ते पर चल रहे समाज को अहिंसक रास्ते पर लाने हेतु प्रयासरत हैं। युद्ध और उससे उत्पन्न मानवता के लिए अत्यंत हानिप्रद रास्ता है। शांति, प्रेम, सद्भाव, अहिंसा ही मानवता की पोषक और रक्षक है।

देश में वर्तमान सरकार की कई योजनाओं में गांधी विचार की झलक दिखती है। यह जनकल्याण की भावना से ओत-प्रोत है। चाहे सामाजिक सुरक्षा का विषय हो, या आर्थिक नीतियां, विदेश नीति हो या राजनीतिक रणनीति, इन सभी जगहों पर गांधीवादी दर्शन और विचारधारा काफी हद

भारत में आचार्य विनोबा भावे, संपूर्ण क्रांति के प्रणेता-जयप्रकाश नारायण, आचार्य जे बी कृपलानी आदि, सबने गांधी विचार के समुद्र में गोता लगाया और इतिहास में अमिट छाप छोड़ी। देश के बाहर जिसने भी गांधीवादी विचारधारा को आदर्श माना, उन सबने अपने-अपने देश में महामानव की उपाधि पाई। चाहे अमेरिका में मार्टिन लूथर किंग जूनियर हो या दक्षिण अफ्रीका के नेल्सन मंडेला।

तक प्रभावी और प्रासंगिक है। आइए वर्तमान सरकारों की कई महत्वपूर्ण योजनाओं एवं नीतियों में गांधी दर्शन की खोज करते हैं।

सत्य और अहिंसा–सरकार की विदेश नीति में इसकी स्पष्ट झलक मिलती है। आज के वैश्विक पटल पर यूक्रेन और रूस के बीच, एवं इजराइल और हमास के बीच भीषण युद्ध चल रहा है। मानवता कराह रही है। प्रतिदिन कई निर्दोष लोग मारे जा रहे हैं। युद्ध का कोई भी परिणाम निकट भविष्य में नहीं दिख रहा है, पर इतना स्पष्ट है कि यह स्थायी नहीं है और इसका अंत होगा। शांति और बातचीत ही किसी भी युद्ध का एकमात्र विकल्प है और यही तो गांधी के भी विचार हैं।

वर्तमान सरकार की कई योजनाएं जैसे प्रधानमंत्री जन-धन योजना, प्रधानमंत्री उज्जवला योजना, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, आयुष्मान भारत योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना, कई राज्य सरकारों द्वारा चालित स्वास्थ्य योजना, आवास योजना, रोजगार योजना, पेंशन योजना का आधार सबका कल्याण, सबका उद्धार ही तो है और यही तो गांधीजी के सिद्धांतों का मूल है। कोरोना काल में भी भारत ने वैक्सीन की आपूर्ति कई गरीब देशों में की। जिससे मानवता की रक्षा हुई और बहुजन हिताय और बहुजन सुखाय की गांधीवादी विचारधारा प्रगाढ़ हुई।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के द्वारा रूस के राष्ट्रपति से मुलाकात के दौरान यह कह गए ''महामहिम वर्तमान समय युद्ध का नहीं है। आपसी बातचीत और शांतिपूर्ण समाधान ही एकमात्र रास्ता है।'' इस वक्तव्य में गांधीजी के अहिंसा के सिद्धांत की स्पष्ट झलक दिखती है। इस कथन ने संपूर्ण विश्व का ध्यान अपनी ओर खींचा था। इस प्रयास से सरकार की विदेश नीति में गांधीजी के विचारों के साक्षात दर्शन होते हैं।

सर्वोदय- सर्वोदय, सर्व और उदय शब्दों के मेल से बना है, जिसका अर्थ है–सबका उत्थान।

वर्तमान सरकार की कई योजनाएं जैसे प्रधानमंत्री जन–धन योजना, प्रधानमंत्री उज्जवला योजना, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, आयुष्मान भारत योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना, कई राज्य सरकारों द्वारा चालित स्वास्थ्य योजना, आवास योजना, रोजगार योजना, पेंशन योजना का आधार सबका कल्याण, सबका उद्धार ही तो है और यही तो गांधीजी के सिद्धांतों का मूल है। कोरोना काल में भी भारत ने वैक्सीन की आपूर्ति कई गरीब देशों में की। जिससे मानवता की रक्षा हुई और बहुजन हिताय और बहुजन सुखाय की गांधीवादी विचारधारा प्रगाढ़ हुई।

स्वदेशी–स्व का अर्थ स्वयं और देशी का अर्थ है–देश का। इसका अर्थ आत्मनिर्भरता के रूप में भी लिया जा सकता है। सरकार की आत्मनिर्भर भारत योजना, रोजगार प्रोत्साहन योजना, महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम, मेक इन इंडिया, मुद्रा योजना, डिजिटल इंडिया, स्टार्टअप इंडिया, स्टैंड अप इंडिया आदि कई योजनाएं स्वदेशी के सिद्धांत पर आधारित हैं। जिसमें देश में ही वस्तुओं के निर्माण पर जोर दिया गया है। कई क्षेत्रों में भारत आत्मनिर्भर बन रहा है। स्वदेशी तकनीक से चंद्रयान–3 के माध्यम से भारत चांद के दक्षिणी हिस्से पर सफलतापूर्वक पहुंच गया।

स्वराज–गांधीजी के लिए स्वराज का मतलब देशवासियों के लिए स्वतंत्रता है, स्वशासन है।

आज भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है और अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण आर्थिक, सामरिक, वैज्ञानिक, अंतरिक्ष आदिशक्ति के रूप में उभरा है और यहां शासन का सिद्धांत गांधीजी के शांतिपूर्ण सह अस्तित्व, विश्व बंधुत्व, सद्भाव और भाईचारे की भावना से ओत–प्रोत हैं। आज 21वीं सदी में विश्व भारत की तरफ एक उम्मीद से देख रहा है। यहां समय के साथ सशक्त होती लोकतंत्र की जड़ें पूरे विश्व के लिए आदर्श हैं।

ट्रस्टीशिप- यह गांधीजी का एक सामाजिक–आर्थिक दर्शन है, जो समानता के सिद्धांत पर आधारित है। सरकार अपनी योजनाओं के क्रियान्वयन में किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं करती और समाज के प्रत्येक वर्ग तक योजनाओं का लाभ पहुंचता है। यह सिद्धांत अमीर–गरीब, ऊंच–नीच, जात–पात, वर्ग संप्रदाय के प्रति

विभाजन से परे है।

ये योजनाएं केंद्र और राज्य सरकारों के द्वारा समाज के सभी व्यक्तियों के लिए बराबर रूप से लागू हैं। समाज के निचले तबके तक के लोगों के जीवन में आमूल-चूल बदलाव आया है। जनधन खाते से जहां सरकारी योजनाओं का लाभ सीधे उनके खाते तक पहुंच रहा है। साथ ही मुफ्त आवास योजना से उनका आशियाना रौशन हुआ है। प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना एवं जीवन ज्योति बीमा योजना से उनकी सामाजिक सुरक्षा मजबूत हुई है। नल के जल से जहां स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित हो रही है। वहीं गरीब माताओं-बहनों के लिए धुएं से निजात पाने में उज्जवला योजना वरदान साबित हो रही है। पहले जहां बीमारी से गरीबों को घर-जेवरात बेचकर इलाज करवाना होता था। आज आयुष्मान भारत योजना और कई राज्य सरकारों की भी मुफ्त चिकित्सा योजना ने जिंदगी को पूरी तरह से बदल दिया है।

देश के तकरीबन 80 करोड़ गरीब परिवारों के लिए मुफ्त राशन योजना पिछले कई वर्षों से लागू है, जिससे खाद्यान्न की उपलब्धता उन तक पहुंची है, जो कभी दो वक्त की रोटी के लिए जूझते और संघर्ष करते नजर आते थे।

देश के एक बड़े वर्ग किसानों के लिए किसान सम्मान निधि की राशि 6 हजार रूपये निरंतर लाभार्थियों तक पँहुच रही है। फसल बीमा योजना के साथ फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य को भी लगातार बढ़ाया जा रहा है। बिजली की उपलब्धता ने सिंचाई व्यवस्था को भी अच्छा किया है, जिससे उत्पादन अच्छा हुआ है। कहते हैं, भारत की आत्मा गांवों में बसती है। आधारभूत संरचना के तीव्र गति से विकास ने ग्रामीण भारत की तस्वीर बदली है। आज सभी जगह अच्छी सड़कों का जाल है, वहीं 24 घंटे बिजली की भी उपलब्धता है। आधुनिक सुख-सुविधाएं गांवों में भी दिखाई पड़ती है। इंटरनेट सेवा का गांव-गांव में विस्तार हुआ है, जिससे गांव के लोगों के जीवन-स्तर को काफी ऊपर उठाया है। बापू की प्रिय पंक्ति थी-''वैष्णव जन तो तेने कहिए, जे पीर पराई जाणे रे।'' सरकारें इसे आत्मसात कर रही है।

न्यूनतम मजदूरी दर से कामगारों का दैनिक भुगतान हो रहा है। जिससे देश के लगभग 50 करोड़ श्रमिकों को लाभ मिल रहा है। हालांकि कई कंपनियों और औद्योगिक प्रतिष्ठानों ने इस नियम से बचने के लिए अलग-अलग हथकंडे अपनाए हैं, परंतु कानून की प्रक्रिया में उनमें कइयों को दंडित करने का भी प्रावधान है।

सरकार की योजनाओं ने तकरीबन 25 करोड़ लोगों को गरीबी रेखा से बाहर निकाला है। देश के कई राज्यों में लोगों की गरीबी के स्तर में सुधार हुआ है।

बापू चाहते थे कि आम और गरीब लोगों को भी वे सभी सुविधाएं मिलनी चाहिए, जिसका प्रयोग अमीर

आदमी करते हैं। 26 मार्च 1931 को 'यंग इंडिया' में प्रकाशित अपने लेख में गांधीजी कहते है,'' पूर्ण स्वराज का अर्थ है-गरीबों का उद्धार। 10 नवंबर 1946 को हरिजन सेवा में उन्होंने लिखा,''हर व्यक्ति को अपने विकास और अपने जीवन को सफल बनाने के लिए समान अवसर मिलने चाहिए। यदि समान अवसर दिए जाएं तो हर आदमी समान रूप से अपना विकास कर सकता है। बापू की इस सोच को ऐसे समझ सकते हैं-

''शांति नहीं, तब तक जब तक सुख भाग न नर का सम हो।

नहीं किसी को बहुत अधिक हो, नहीं किसी को कम हो''।।

संयुक्त राज्य अमेरिका में मार्टिन लूथर किंग, दक्षिण अफ्रीका में नेल्सन मंडेला और म्यामांर में आंग-सान यू की जैसे लोगों के नेतृत्व में शोषित, वंचित, उत्पीड़ित समाज के लोगों को न्याय दिलाने हेतु गांधीवादी विचारधारा सफलतापूर्वक लागू हुई है, इससे बाकी देशों को भी सीख लेनी चाहिए।

स्वच्छ भारत- यह गांधीजी की ही सोच थी कि देश को स्वच्छ किया जाए, क्योंकि उन्हें ज्ञात था कि स्वच्छ भारत ही गरीबी और बीमारी से मुक्त हो पाएगा। सरकार की स्वच्छ भारत योजना का अभियान आज समस्त देशवासियों के लिए उनके जीवन का अभिन्न हिस्सा बन गया है।

खादी का उपयोग-महात्मा गांधी जी ने खादी को गांवों में स्वशासन के उपकरण की तरह देखा तो आज के परिवेश में सरकारें खादी को बढ़ावा दे रही हैं। आज 'देश के लिए खादी से फैशन के लिए खादी' एक आहवान है और पिछले कई सालों में खादी की बिक्री में 400 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई है।

आज के संदर्भ में गांधीवादी विचारधारा की प्रासंगिकता-सत्य और अहिंसा के आदर्श गांधी दर्शन का मूल मंत्र है। यह सद्‌भाव और भाईचारे की भावना से ओत-प्रोत है। कई देशों के बीच युद्ध की स्थिति है, तो कईयों के बीच जबर्दस्त तनाव है। शांति का रास्ता ही मानवता का रास्ता है, अन्यथा संपूर्ण मानव जाति का अस्तित्व खतरे में है।

संयुक्त राज्य अमेरिका में मार्टिन लूथर किंग, दक्षिण अफ्रीका में नेल्सन मंडेला और म्यामांर में आंग-सान सू की जैसे लोगों के नेतृत्व में शोषित, वंचित, उत्पीड़ित समाज के लोगों को न्याय दिलाने हेतु गांधीवादी विचारधारा सफलतापूर्वक लागू हुई है, इससे बाकी देशों को भी सीख लेनी चाहिए।

सरकार की कई महत्वपूर्ण योजनाओं पर गांधीजी के विचारों के प्रभाव ने जन-कल्याण को काफी आगे बढ़ाया है, जिससे लोगों का जीवनस्तर सुधरा है।

समाज के लोगों के बीच कटुता, द्वेष, इर्ष्या, हिंसा बढ़ी है। गांधीजी के विचारों को अपनाकर सहिष्णुता, भाईचारा और आपसी सद्‌भाव को बढ़ाकर समाज और देश निर्माण में हर व्यक्ति के द्वारा बेहतर योगदान दिया जा सकता है।

लोकतांत्रिक व्यवस्था की नींव गांधीवादी दर्शन को अपनाकर और गहरी व मजबूत हुई है।

आइये, हम सब इसे अपनाकर राष्ट्र-उत्थान में अपनी बखूबी भागीदारी सुनिश्चित करें और सत्य, अहिंसा, सर्वोदय, और स्वदेशी की राह पर चलकर स्वस्थ समाज का निर्माण करें, यही महामानव पूज्य बापू को हम सबकी तरफ से सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

इन पंक्तियों के साथ नमन-

तू कालोदधि का महास्तंभ
आत्मा के नभ का तुंगकेतु।
बापू! तू मर्त्य-अमर्त्य, स्वर्ग पृथ्वी, भू नम का महासेतु।
तेरा विराट यह रूप
कल्पना पटल, पर नहीं समाता है।
जितना कुछ कहूं मगर, कहने को
शेष बहुत रह जाता है।

संपर्कः
मो. 7974838780

लोक का आलोक : महात्मा गांधी

कृष्ण बिहारी पाठक

लोक क्या है? लोक मृदुल-सरस संवाद की भाषा है, जो निजी होकर भी किसी एक की नहीं बल्कि सबकी है। लोक, मिठास भरा स्वर है जो अकेले का नहीं, समवेत है, जिसमें सबके हर्ष - विषाद का स्पंदन है।

लोक, निर्मल - स्वच्छ, स्पर्शपूर्ण वेशभूषा है, जिसका तार- तार अनेक कर्मशील हथेलियों अंगुलियों ने सिरजा है। लोक एक प्रार्थना और मंगलाशा है जो सर्वहित, सर्वसुख में गुंजायमान है। लोक वह अजस्र आलोक है जिसे पाकर जीवन का तम श्रम तिरोहित हो जाता है। गांधी जी ने लोक को इन्हीं अर्थों में साधा था। लोक की इसी साधना के बल पर वे भारतवर्ष के अजेय नायक बनकर उभरे।

महात्मा गांधी की सर्वकालिक और सार्वजनीन स्वीकार्यता का सबसे बड़ा कारण है उनकी लोकदृष्टि और लोकसम्पृक्ति। अपने समकालीन कतिपय चेतनासंपन्न लोगों के बीच अकेले गांधी जी ही ऐसे थे जो लोक के बीच व्यावहारिक धरातल पर काम कर रहे थे। शास्त्र और सैद्धांतिकी के उपदेश से कहीं दूर गांधी ने लोक का पक्ष लिया, उसे जीकर दिखाया।

चरखा, चादर, चुनरी, खद्दर आदि गांधी जी के नित्य व्यवहार के उपादान थे जिनमें लोक जीवन की गंध बसी हुई थी। गांधी जी और उनका चरखा तो एक दूसरे से ऐसे संबद्ध थे कि गाँव देहात में इनको लेकर लोकगीत बनने लगे - 'कहीं टूटे ना चरखे का तार चरखवा चालू रहे।'

यह बहुत सांयोगिक है कि स्वयं गांधी जी ने भी अनेकश: चरखे को अंग्रेजी बाजारवाद के विरुद्ध रामबाण उपाय बताया है, स्वदेशी, स्वराज की कामना पूर्ति के लिए उसे 'कामधेनु' की संज्ञा दी है। चरखे को उन्होंने निरंतर प्रगति, स्वावलंबन, आत्मनिर्भरता और कर्मयोग के प्रतीक चिह्न के रूप में प्रतिष्ठित किया, इसका शुभ प्रभाव यह हुआ कि जनता के एक बहुत बड़े भाग में चरखा जीवन चर्या का अंग बन गया और देशभर में भावात्मकता एकता स्थापित करने लगा।

चरखे की बढ़ती लोकप्रियता अंग्रेजी सरकार के लिए चिंता का विषय बनी, कैसा अद्भुत साम्य है जैसे श्रीकृष्ण का सुदर्शन चक्र पापियों, अधर्मियों को भय और त्रास देता था वैसे ही गांधी जी का चरखा अधर्मी गोरी सरकार को त्रास देने का साधन बना। ऐसे में यदि जन मन के सुख दुख

लोक, निर्मल - स्वच्छ, स्पर्शपूर्ण वेशभूषा है, जिसका तार- तार अनेक कर्मशील हथेलियों अंगुलियों ने सिरजा है। लोक एक प्रार्थना और मंगलाशा है जो सर्वहित, सर्वसुख में गुंजायमान है। लोक वह अजस्र आलोक है जिसे पाकर जीवन का तम श्रम तिरोहित हो जाता है। गांधी जी ने लोक को इन्हीं अर्थों में साधा था।

के संगी लोक गीतों में चरखा नायक बनकर गतिमान होने लगा तो स्वाभाविक ही है। चरखे और खादी के माध्यम से स्वदेशी के अभियान में जन मन को स्वराज का दिग्दर्शन होने लगा था, इसीलिए वे बड़े भाव भरे और आशा भरे मन से गाने लगते थे – कहीं टूटे ना चरखे का तार चरखवा चालू रहे।'

गाँव गाँव में, गली गली में यही शिवकामना जन मन के कंठ और हृदय में स्पंदित थी कि चरखे का तार न टूटे अर्थात गांधी जी का संकल्प न टूटे। गांधी जी के साँसों के तारों को संभवत: निश्छल जनमानस ने चरखे के तार से जोड़ लिया था तभी तो गांधी जी के करुण मरण पर लोगों को इतना आघात लगा जैसा किसी नितांत आत्मीयजन की मृत्यु पर लगता है।

सुदूरवर्ती, दुर्गम स्थानों तक में, बिना किसी योजना या संगठन के, संचार माध्यमों के अभाव में भी भावात्मकता का प्रवाह ऐसा बना कि गाँव – गाँव में गांधी जी की तेरहवीं और ब्रह्मभोज हुए, यहाँ तक कि लोगों ने अपने सिर मुँड़वा लिए, मानो घर का मुखिया मर गया हो।

गांधी के अपरिग्रह और संयम की प्रेरक शक्ति अंतिम पंक्ति में खड़े जन के लिए रोटी, कपड़ा और मकान की चिंता थी, इसीलिए वे सब में थे, सबके थे। उनके कहने की प्रतीक्षा किसे रहती, उनका अनुकरण आम से आम लोग करते थे, वे अनशन करते तो अनेक-अनेक लोग अनशन पर बैठ जाते, वे असहयोग करते तो लोग नौकरी छोड़ देते, उनके लिए लोग सदाचरण का मार्ग अपनाते और कारावास से भी नहीं झिझकते। वे जिधर चल पड़े, कारवां बढता गया – 'चल पड़े जिधर दो डग मग में, चल पड़े कोटि पग उसी ओर।' गांधी जी के व्यक्तित्व की आभा लोक की आभा थी, उनका आलोक लोक का आलोक था।

गांधी जी लोक के बीच अपने आप को सबसे सहज अनुभव करते थे। लोक में उनकी आत्मा रची बसी थी इसीलिए वैभव के प्रकाशन, प्रदर्शन से वे सदैव दूर रहे। जिस साहस, आत्मविश्वास और वाग्मिता के साथ वे केवल धोती पहनकर ब्रिटिश साम्राज्य से आँखें मिलाकर बात कर सके वह अपनी तरह का अद्वितीय उदाहरण है। महानता और सहजता में से सदैव सहजता को उन्होंने वरेण्य माना। गुरूदेव टैगोर ने उन्हें 'महात्मा' कहा और सर्वजन ने स्वीकार किया परंतु स्वयं गांधी जी महानता के प्रति कभी सहज नहीं थे। वे लिखते हैं –

'इस महात्मा की पदवी ने मुझे बहुत कष्ट पहुँचाया है। मुझे एक क्षण भी ऐसा याद नहीं जब उसने मुझे गुदगुदाया हो।'

महान होकर या महान बनकर कहीं न कहीं सामान्य नहीं रह जाने का आशय होता है और गांधी जी सदैव सामान्य रहना चाहते, सामान्य बनना चाहते थे। महानता उनके लिए सामान्यता में बाधक और विरोधी थी इसीलिए इस पदवी से उन्हें कष्ट होता था। वे लोक की चिंता में व्यस्त मस्त रहने वाले मनीषी थे इसीलिए आचार्य विनोबा भावे ने लिखा है कि –'लोग आज भी उन्हें याद करते हैं, क्योंकि वे एक व्यक्ति नहीं रह गए थे। समस्त राष्ट्र के प्रतिनिधि बन गए थे। उनकी वाणी और चिंतन में लोकवाणी और लोक चिंतन प्रकट हुआ।'

जैसे गांधी जी लोकचिंतनरत रहे वैसे ही लोक ने भी उन्हें हर्ष पूर्ण स्वीकार्यता प्रदान की। कहने की आवश्यकता नहीं कि लोक उसे ही स्वीकार करता है जो स्वमेव लोक बनने की साध रखता हो।

दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटने पर गांधी जी के द्वारा की गई भारत परिक्रमा कोई साधारण घटना नहीं है। यह लोक के माध्यम से भारत की आत्मा से साक्षात्कार की महायात्रा सिद्ध हुई। इस यात्रा में उन्होंने लोकजीवन के संदर्भों को आत्मसात किया, लोक के स्वरूप और स्वर को जाना समझा तथा सच्चे अर्थों में लोक जीवन को अंगीकार किया।

भारत परिक्रमा के अंतर्गत ही गांधी जी ने नगर डगर की गाँव गलियों की बोली, वाणियों को सुना-समझा। लोकरीति के रस का अनुभव किया। इन्हीं बोली वाणियों को गांधी जी ने लोक से संवाद का समर्थ माध्यम बनाया। गांधी जी यदि ऐसी सामान्य भाषा का प्रचार-प्रसार चाहते थे जिसे साधारण से साधारण जन समझ सके तो इसके पीछे भी लोकसंवाद का प्रबल आग्रह ही था।

गांधी जी के इस आग्रह की प्रबल और मधुर प्रतिक्रिया लोक में भी होने लगी।लोक की भाषा अर्थात बोलियों में, लोकगीतों में गाँव नायक के रूप में प्रतिष्ठित होने लगे। विविध भाषा-भाषियों ने अपनी-अपनी बोलियों में अपने गीत - गानों में गांधी के चित्र चरित्र को ढालना उतारना प्रारंभ कर दिया। लोकभाषा, लोकभूषा और लोक संदर्भों से गांधी कितने एकरस हो गए थे इसकी गूँज अनुगूँज तत्समय के लोकगीतों में सुनी जा सकती है।

गांधी जी के दैनिंदन जीवन व्यवहार में लोकजीवन के उपादान अनिवार्यतः समाहित थे। चरखे को तो उन्होंने विदेशी सत्ता के विरुद्ध सुदर्शन चक्र बना ही लिया था उनके आवास, निवास और आश्रमों पर हाथ से अनाज पीसने की चक्की, झाड़ू आदि स्वावलंबन के उपकरण उनकी लोकसम्पृक्ति को पुष्ट करते हैं।

प्रभाकर माचवे ने अपने आलेख में बहुत सरसता और श्रद्धासिक्त मन से गांधी जी की दिनचर्या में शामिल लोकसंदर्भों को रेखांकित करते हुए श्रम स्वावलंबन और स्वदेशी के अद्‌भुत सम्मिलन का दृश्य खींचा है - 'आश्रम में कई लोग सवेरे साढ़े चार-पांच बजे तक जग जाते हैं। आश्रम में नल नहीं है, न हर झोंपड़ी में कोई बाथरूम है। इसलिए सब लोग कुएं के पास जाते हैं, वहाँ बाल्टी से पानी निकालते हैं। मुँह धोने का स्थान है जहाँ से नाली का पानी खेतों में चला जाता है।... साठ - सत्तर आश्रमवासियों की बस्ती में न कोई रसोईया था, न माली, न झाड़ूवाला। वहाँ स्त्री, पुरुष सब बराबर भाव से रहते थे।'

लोकजीवन हमेशा से सबकी समता और बराबरी के ध्येयवाक्य उच्चारण करता है। गांधी जी के जीवन संदर्भों में भी सर्वसमता और सर्वसमावेशी जीवन-दृष्टि बराबर मिलती है, यह भी गांधी जी की लोक स्वीकृति का एक बड़ा कारण है।

गांधी जी की प्रार्थना सभा को ही लीजिए, उपनिषद के मंत्र से लेकर पारसी जरथुस्त्र गाथा तक, गीता के श्लोक से लेकर कुरान की आयतों तक, रामचरित मानस के पाठ से लेकर बौद्ध मंत्रों तक और संतों की वाणी से लेकर भक्तकवियों के भजनों तक सभी मतों मान्यताओं की जीवनधारा उसमें प्रवाहित होती थी।

गांधी जी ने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि भारत विभिन्न समुदायों का बदरंगी समूह मात्र नहीं है। यह ऐसा राष्ट्र है, जहाँ लोगों की आकांक्षाएँ और आशाएँ साझे हित से प्रेरित हैं। गांधी जी ने यहाँ जिस साझे हित की बात रेखांकित की है वही तो लोक की प्रेरणा और संजीवनी है जिसके चलते सब लोग एक दूसरे के सुख दुख में दौड़कर शामिल होते हैं।

विश्व मानवयुगीन जटिलताओं को हल करने के लिए गांधी दर्शन या गांधी मार्ग को ही अनुकरणीय और उपयुक्त मानता है तो उचित ही है। गांधी दर्शन या गांधी मार्ग मूलतः लोकसम्पृक्ति, लोकहित का ही तो मार्ग है जहाँ गांधी जी ने करणीय-अकरणीय के विवेक के लिए पंक्ति के अंत में खड़े व्यक्ति के हित-अनहित का जंतर दिया है तो स्वार्थलिप्सा, भौतिकवाद और बाजारवाद से बचने के लिए संयम का। उन्होंने बलपूर्वक कहा कि संयम और अपरिग्रह को अपनाकर अपनी और दूसरों मूल आवश्यकताओं को तृप्त किया जा सकता है - 'यह धरती हरेक की मूलभूत जरूरतों को पूरा करने की क्षमता रखती है लेकिन किसी एक की भी लोलुपता या वासना की संतुष्टि नहीं कर सकती।'

सर्वहित, सर्वसुख, सर्वस्पर्शिता और सर्वसमावेशी मान्यताओं का आगार लोक ही है जिसमें जीवन-जगत की तथा मानव और प्रकृति की सभी समस्याओं के समाधान अंतर्निहित हैं। गांधी जी का जीवन दर्शन इसी लोक दृष्टि से प्रेरित प्रभावित है और यही कारण है कि कालचक्र को भेदकर आज भी उसका आलोक जगमगा रहा है।

संपर्क:
तिरूपति नगर, हिंडौन सिटी
जिला करौली, राजस्थान
पिन 322230
मो. 9887202097

डॉ. संतोष पटेल की कविताएँ

बुद्ध हैं कि ढकते नहीं

कितनी मेहनत की गई होगी इसको ढकने में
केसरिया के महास्तूप को
मानो छुपाने की पूरी कोशिश हुई
एक जीवंत इतिहास को।

दरअसल ढका नहीं गया इसे
अपने कुकृत्य को छुपाया था
उन्होंने विभिन्न मुद्राओं में बैठे बुद्ध के
मूर्तियों के सिर को किया गया क्षत विक्षत

नफरत का अंदाजा लगा सकते हो!
तोड़ दी गई ऊंगलियां धर्म चक्र मुद्रा में
बैठे बुद्ध की ध्यान मुद्रा में बैठे
बुद्ध के दोनों हाथ तोड़ कर अलग किया गया
भूमि स्पर्श मुद्रा में बैठे बुद्ध के दाहिने हाथ को
बांहों से अलग कर दिया गया
वरद मुद्रा में बैठे बुद्ध के दाहिने हाथ को तोड़े गए
फिर करण मुद्रा में बैठे बुद्ध के अंगूठे को तोड़ा गया।

कितने डर गए थे वे लोग।
वज्र मुद्रा में बैठे बुद्ध के दाहिने हाथ की मुट्ठी को
बाएं हाथ से विलग किया गया
वितर्क मुद्रा की नहीं दिखी तर्जनी और अंगूठा बुद्ध का
तोड़ डाले गए उनके हाथों को।

अंजलि, उत्तर बोधि या अभय मुद्रा में बैठे बुद्ध के
हाथों को तन से जुदा कर दिया गया
प्रत्येक मूर्ति के सिर को नहीं बख्शा गया
दिखती है घृणा तुम्हारी
बुद्ध की प्रतिमाओं से
फिर भी तुम अपनी संस्कृति को
सहिष्णु बताने में नहीं थकते।
दुनिया का सबसे ऊंचा
केसरिया का यह स्तूप
चीख चीख कर बता रहा है
इस हालत में किसने पहुंचाया इसे।
बुद्ध ने बिताया यहां मात्र एक दिन
अपने परिनिर्वाण से पहले
अशोक ने उनकी याद को जीवंत किया स्तूप में
पर किसने इसे नेस्तनाबूत किया इसे?
तब ना कोई मुगल था
ना कोई तालिबान था
ना जनरल डायर था
फिर ऐसा क्यों हुआ होगा?
कैसे और किसने बता दिया इसे
राजा बेन का किला?
देखो बुद्ध को ध्यान से यहां
कितने झंझावातों को सहा
आखिर कौन था रंगरेज
जिसने रंग दी थी उनकी मूर्ति को
जो अब तक वैसा का वैसा ही है।
कितना भी कर लो कोशिश
बुद्ध को ढकने की
बुद्ध को छिपाने की
पर बुद्ध हैं कि ढकते नहीं।

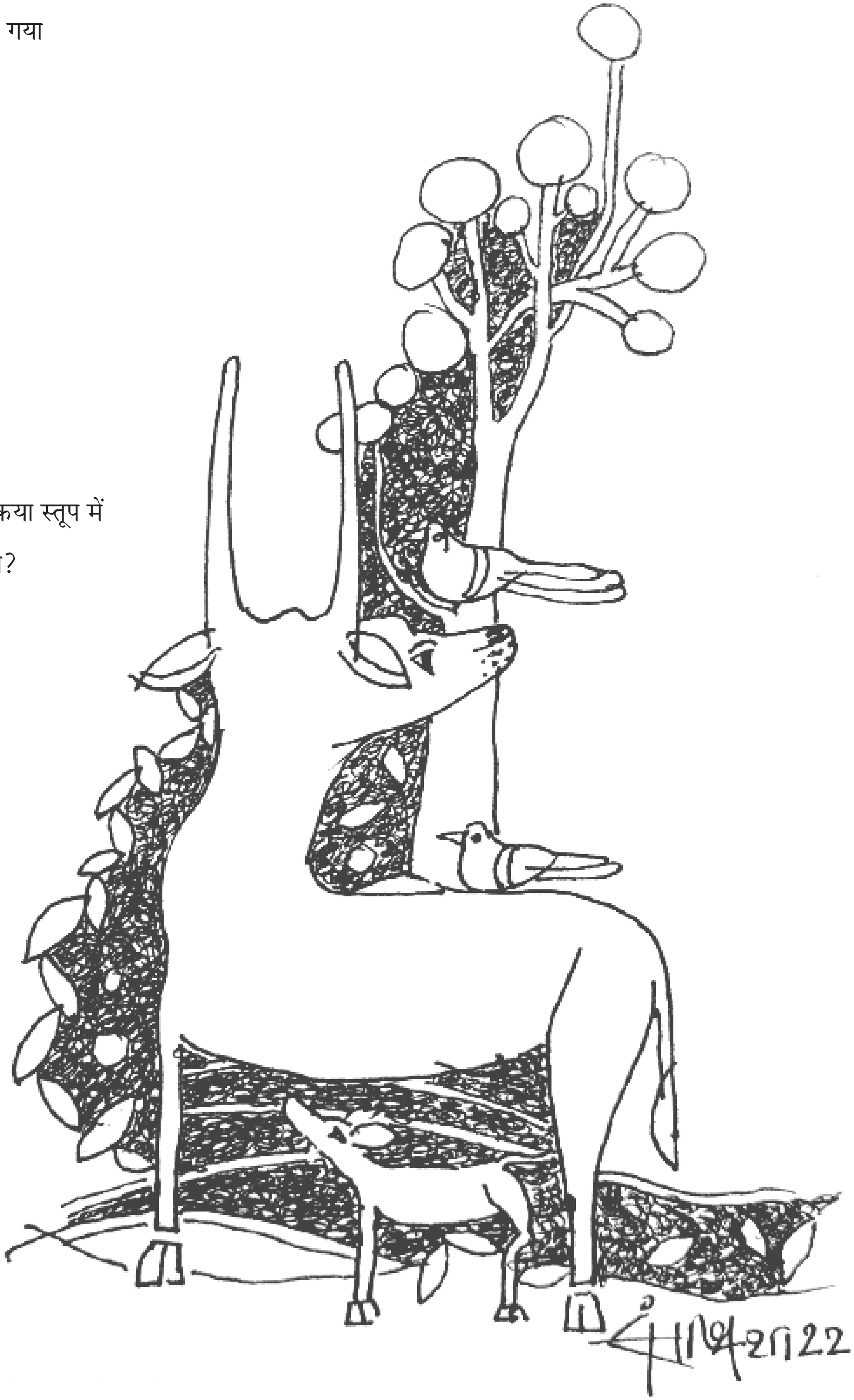

प्रतीक चिह्न

बुद्ध ने कहा
'सम्यक दृष्टि'
और हमने अपनी दृष्टि को कर दिया
भेदभाव से परिपूर्ण।

बुद्ध ने कहा
'सम्यक कर्म'
हमने यह कहा कि
जैसा कर्म करेगा
वैसा फल देगा भगवान
करते हैं हम सारे कुकर्म।

बुद्ध ने कहा
अत्त दीपो भव
हमने बुझा डाले दीपक
मन और मस्तिष्क के
संवेदना और मानवता के।

अब कहते हैं
तमसो मा ज्योतिर्गमय
अन्धकार से प्रकाश की ओर
मृत्यु से अमरता की ओर
इस तरह जारी है।
देसना और उपनिषद् में द्वंद।

बुद्ध बस हमारे लिए
नुमाइश भर रह गए
देसना उनकी पुस्तकों में
फांक रही हैं धूल

अब तो बुद्ध की वाणी की
जगह हर शिक्षालय में
उपनिषद की बातें ही बन रही हैं
प्रतीक चिह्न।

संपर्क:
RZH/ 940, जानकी द्वारिका निवास,
राजनगर पार्ट 2, गली नम्बर -15,
पालम कॉलोनी, नई दिल्ली
पिन कोड- 110077
मो. -9868152874

फोटो में गांधी

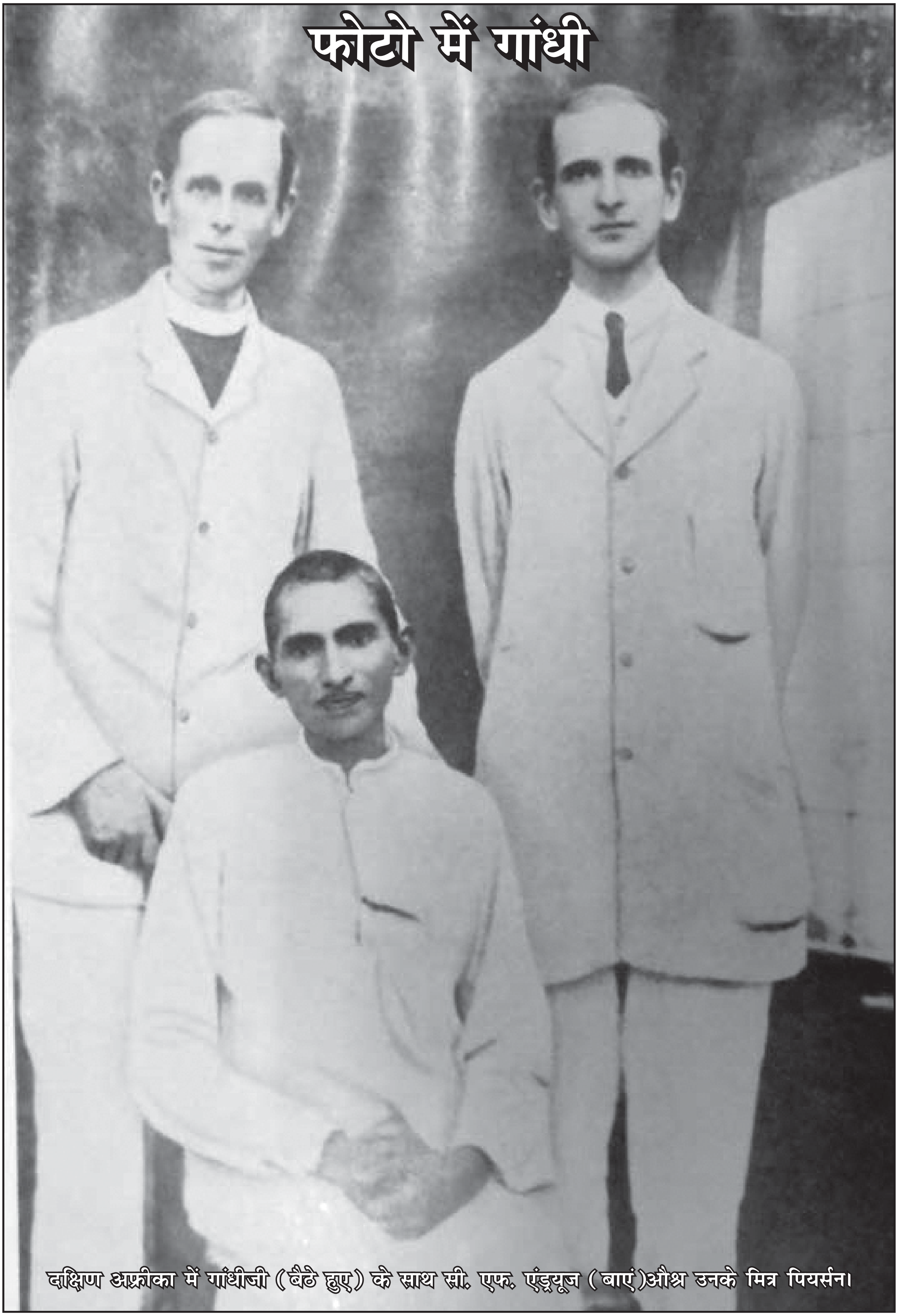

दक्षिण अफ्रीका में गांधीजी (बैठे हुए) के साथ सी. एफ. एंड्रयूज (बाएं)औश्र उनके मित्र पियर्सन।

बाल कहानी

गाँव की गुनगुन

कल्पना मनोरमा

एक गाँव में गुनगुन रहती थी। गुनगुन बहुत प्यारी बच्ची थी। उसके छोटे-छोटे सुनहरे बाल थे। गोल-गोल आँखें और गोरा रंग था। वह हँसमुख थी। सबको उसकी बातें अच्छी लगती थीं।

गुनगुन का बड़ा-सा घर था। उसके यहाँ एक गाय, दो बैल, बैलगाड़ी और एक घोड़ी थी। घोड़ी चारा के साथ भीगे चने भी खाती थी। गुनगुन को घुड़सवारी बहुत पसंद थी मगर किसी ने उसे जब नहीं सिखाई तो उसने सायकिल चलाना सीख लिया था।

उसके यहाँ पीने का पानी मटके में रखा जाता था। माँ चूल्हे पर रोटियाँ बनाती थीं। दादी हाथ का पंखा झलते हुए सो जातीं। गुनगुन को बड़ा आश्चर्य होता। रात सभी जन छत पर जब सोने जाते तो गुनगुन की माँ उसे तारे गिन-गिनकर गिनती सिखाया करती थी। बाद में भी गुनगुन जब भी छत पर सोने जाती तो तारों को गिनने लगती। मगर तारों की गिनती वह सौ तक कभी गिन ही नहीं पाती, नींद आकर उसे घेर लेती।

एक दिन गुनगुन के बाबा ट्यूबबेल चलाने खेत पर गये थे। दीना काका (नौकर) टिफिन लेने नहीं आए थे। गुनगुन की माँ बहुत परेशान थी।

गुनगुन ने जब माँ को परेशान देखा तो कहा- “अम्मा, हम खाना दे आयें बाबा को ?”

माँ ने पूछा- ”तुम खेत पर अकेले जा सकती हो...?”

उसने माँ को याद दिलाया कि आजकल वह स्कूल भी अकेले जाने लगी है। माँ खुश हो गयीं। छोटे से थैले में एक बोतल पानी, स्टील के डिब्बे में सब्जी और रूमाल में बेसन के दो नमकीन परांठे बाँधकर माँ ने उसे खेत पर भेज दिया।

घर से खेत तक पहुँचने में गुनगुन को आम के दो बाग पार करने थे। गुनगुन खेत की ओर चल पड़ी। हरी-हरी घास से भरी पगडंडियों पर चलते हुए उसे मजा आ रहा था। ठंडी हवाओं में पेड़ झूम रहे थे। चिड़ियाँ बोल रही थीं। बकरियाँ बाग में घास चर रही थीं। गुनगुन को अच्छा लग रहा था।

जल्दी ही उसने घर के पास वाले आम के बाग को पार कर लिया। एक बाग पार करना बाकी था। वह खेत की ओर बढ़ी जा रही थी, तभी गुनगुन की नजर पगडंडी पर खड़े एक ठिगने पेड़ पर पड़ी। पेड़ पर एक मोटा-सा गिद्ध बैठा था। गुनगुन काँपने लगी। वह ठिगने पेड़ के नीचे थी। वहीं तने से चिपक कर खड़ी हो गयी।

पेड़ के ऊपर गिद्ध सुस्ता रहा था। पेड़ के नीचे गुनगुन डर से चुप्पी साधे खड़ी थी। बहुत देर हो चुकी थी, उसे भूख लगी थी या डर को भागने के लिए, उसने थैले में हाथ डालकर रुमाल निकाला और परांठा टूंगने लगी। थोड़ी देर में उसी रास्ते से कोई आदमी निकला।

उसने पूछा- “गुनगुन तुम यहाँ क्यों खड़ी हो?”

“चाचा, पेड़ पर एक गिद्ध बैठा है...?”

“नहीं, यहाँ कोई गिद्ध नहीं...।”

कहते हुए आदमी आगे बढ़ गया। गुनगुन ने साहस जुटाकर ऊपर देखा। गिद्ध सच में जा चुका था। वह भी आगे बढ़ गयी। बाबा ने गुनगुन को देखा तो बहुत खुश हुए।

गुनगुन पहली बार खाना लेकर खेत पर गई थी। उसके बाबा ने हाथ-मुँह धोए और खाना खाने बैठ गए। जैसे ही उन्होंने रुमाल खोला पराठों की जगह गोल-गोल दो रिंग जैसी रूमाल में पड़ी थी। उसके बाबा ने उसे उठाकर गुनगुन के मुँह के आगे कर दिया। पराठों के बीच का हिस्सा गायब था, बीच से बाबा का चेहरा दिख रहा था। देखकर गुनगुन चकित रह गयी। बाबा को भूख लगी थी। उन्होंने उसी को खा लिया।

बाबा ने हँसते हुए पूछाख़"गुनगुन तुमने खाना नहीं खाया था..?"

गुनगुन झेंप गई। उसे खुद समझ नहीं आ रहा था कि उसने पराँठा कब खा लिए। बहुत देर वह सोचती रही मगर गिद्ध छोड़कर उसे कुछ याद नहीं आ रहा था। गुनगुन कुछ नहीं बोली। थोड़ी देर बाद वह घर लौट आई।

घर आकर बाबा ने गुनगुन की माँ को सारी बातें बतायीं। माँ हैरान रह गयीं। उन्हें याद आया- "सुबह गुनगुन स्कूल के रास्ते से लौट आई थी। आखिर इस लड़की को हो क्या गया है?"

बुदबुदाते हुए माँ ने गुनगुन को आवाज लगा दी। गुनगुन दौड़ते हुए माँ के पास पहुँच गयी।

माँ ने पूछा-सुबह स्कूल जाते हुए, बीच रास्ते से तुम क्यों लौट आई थीं?"

गुनगुन सहम गयी। माँ ने जब नरमी से पूछा तो बताया- "स्कूल के रास्ते में भूत खड़े थे...।"

"अरे! भूत...? कैसे थे भूत?" माँ ने पूछा।

"बहुत भयानक थे। भूत की ये लंबी-लंबी टांगें, बड़ा-सा सफेद पेट, बहुत बड़ी सी गर्दन, पतली-सी चोंच और उनके सिर पर लाल टोपी लगी थी।" गुनगुन की बातें सुनकर माँ को हँसी आ गयी।

"पागल लड़की, वे भूत नहीं सारस (फ्लेमिंगो) होंगे। इन दिनों गाँव में कुछ जोड़े सारस आते हैं।"

"नहीं, वे सारस नहीं भूत थे। कुमकुम ने बताया था हमें।" गुनगुन बोली।

"अच्छा ये बताओ, तुमने बाबा के पराँठे क्यों खा लिए थे ?"

माँ की बात सुनकर गुनगुन को गिद्ध का ध्यान फिर से आ गया मगर परांठा कब उसने खाया..? बिल्कुल उसे ध्यान नहीं आ रहा था। वह माँ की तरफ खिसक आई। जैसे डर रही हो। माँ ने फिर से पूछा।

"खेत के रास्ते में एक ठिगना-सा पेड़ है। उस पर बड़ा-सा गिद्ध बैठा था। हमें बहुत डर लग रहा था।"

"तो क्या हुआ..? पक्षी पेड़ पर बैठते ही हैं" माँ ने कहा।

"नहीं अम्मा, गिद्ध डरावना होता है। वह बच्चों का भेजा (दिमाग) खा जाता है। हमने टोपी भी नहीं पहनी थी। हमारा भेजा खा जाता तो हम तो मर ही जाते।"

"ऐसा कुछ भी नहीं होता। गिद्ध और सारस दोनों पक्षी हैं। उनसे बच्चों को डरना नहीं चाहिए।"

गुनगुन की बातें सुनकर इस बार माँ को हँसी नहीं आई थी। माँ सोचने लगीं कि गुनगुन के मन में डर कहाँ से बैठ रहा है। उन्होंने गुनगुन को समझाकर खेलने भेज दिया।

अगले दिन माँ ने गुनगुन की दादी से बात की। दादी ने बताया कि उन्होंने एक दिन 'खूनी गिद्ध' की कहानी गुनगुन को सुनाई थी।

गुनगुन की माँ को बात समझ आ गयी। उन्होंने दादी से कहा-"बच्चे कहानियाँ सिर्फ सुनते ही नहीं, बल्कि कहानियाँ उनके चरित्र पर गहरा प्रभाव डालती हैं। आपसे निवेदन है कि गुनगुन को डरावनी कहानी आगे से मत सुनाना अम्माजी।"

दादी कुछ बोलती उसके पहले माँ ने गुनगुन को बुलाकर कहा- गुनगुन, अपनी दोस्त कुमकुम को आज घर बुलाकर लाना। तुम दोनों को कुछ बताना है। सुनकर गुनगुन खुश हो गयी।

संपर्क:
मो.- 8953654363

बाल कहानी

सिसकता बचपन

मुग्धा

जीवन में हमारे साथ कुछ भी नया होता है, तो वह अपने आप नहीं हो जाता है। कुछ नवीन हो सके, इसके लिए कुछ कदम उठाने होते हैं, कोशिश करनी होती है। कुछ समय पहले एक पार्क में तीन-चार बच्चे खिलखिलाते हुए ताली बजा रहे थे और आपस में ही कुछ शब्दों के हेरफेर से नया सृजन कर रहे थे। किसी को भी मोहित होकर उन बच्चों को देखना और सुनना अच्छा लगता।

दो समय की रोटी का जुगाड़ कर सकने वाले माता-पिता के बच्चों में प्यारी-सी बातें बनाते समय जो उत्साह और उमंग दिख रहे थे, वे कभी भी कार और हवाई जहाज में सफर करने वाले बच्चों के चेहरे पर शायद न दिखें। साफ नजर आ रहा था कि ये जो बच्चे थे, वे कभी किसी की शानदार देखभाल में नहीं रहे, लेकिन उनके द्वारा बनाए गए कविता जैसे वाक्य और उनकी कल्पनाशीलता उनके भीतर छिपी प्रतिभा के संकेत दे रही थी। उन्हें सुघड़ और सुलझा हुआ मार्गदर्शन निखार और संवार सकता है। अगर मौका मिले तो शायद इनमें से ही कोई नया लेखक, कवि या दार्शनिक भी समाज को मिल सकता है। मगर यह सब बस सोचने की बात है। आज सरकारें भी सिर्फ अशिक्षा को मिटाने की बातें करती रहती हैं। जमीनी स्तर पर बच्चों की परेशानी दूर की जाए, इससे शायद उन्हें कोई मतलब नहीं होता। पार्क में खेलते वे बच्चे मजदूरों के बच्चे थे। उनके वहां होने का एक और तकलीफदेह कारण था। कुछ अमीर लोग जो शीतल पेय की आधी पी गई बोतल या चिप्स और बिस्कुट छोड़ जाते हैं, उनको ये बच्चे उठा लेते हैं। यह जान-सुन कर किसी भी दिल और कान में पीड़ा और चुभन होने लगेगी। आज व्यवस्था का खेल भी निराला है। एक के पास खूब है, तो उसने कचरे में फेंक दिया और दूसरे के पास निवाला भी नहीं। अगर किसी का मन इन बच्चों के लिए विचारमग्न हो, तब आज का अमीर, सुविधाभोगी और विलासितामय समाज एकाएक ही आखों के आगे घूम जाता है। अगर मान भी लिया जाए कि गरीब बच्चे अच्छा पढ़ लें, कुशल भी हो जाएं, तो ठसकेबाजी और आडंबर द्वारा उन्हें यह आभिजात्य वर्ग और दिखावे वाला समाज अपने दबाव से कुंठित कर देगा। इन दिनों एक अलग ही तरह का गुरूर तथाकथित 'श्रीमंत समाज' में नजर आने लगा है। खूब सुविधाभोगी और दौलतमंद अभिभावक चाहते हैं कि उनका बच्चा घर से बाहर न निकले और हर वक्त बस्ते के बोझ में दबा रहे। वे यह कभी नहीं सोचते हैं कि बच्चों पर बस्ते का बोझ नहीं डाला जाए और टीवी-मोबाइल आदि से दूर रख कर उनके मन में भी कुछ सृजन करने की बात को बिठाया जाए। जब स्कूलों में चार दिन का भी अवकाश होता है तो भी बच्चों को अपनी तरह से जीवन जीने की छूट नहीं होती है। आज दादी और नानी की कहानियां, बुआ-मौसी की गपशप और गली-मुहल्ले आदि में घूमने-फिरने का आनंद ही समाप्त हो गया है। अब अवकाश होने के साथ ही उन्हें परोक्ष कैदखाने में भेज दिया जाता है, जहां कुछ अटपटा-सा सिखा कर आडंबर वाली जीवनशैली से अवगत करा दिया जाता है। मिसाल के तौर पर एक बेहद महंगी पाठशाला के बच्चे एक टीवी चैनल पर कह रहे थे कि मोटी फीस चुका

कर उन सबने ऐसा खाना बनाना सीखा है, जो 'बिना आग के' बनता है। सदियों से दूध-केला, दूध-बिस्कुट, भेलपुरी, फल की चाट आदि किसे नहीं पता। मगर अब इनको यह सिखाया जा रहा है। आज का समय बच्चों को खुद सोचने नहीं दे रहा है। उसको सब पका-पकाया मिल रहा है, इस तरह कोशिश हो रही है कि हर बच्चे के कच्चे मन को मार ही दिया जाए। आज जीवन का अर्थ कुछ बदल-सा गया है। इसलिए घर के आंगन तो गायब ही हो गए हैं। एक-दूसरे मन को जोड़ते हुए नुक्कड़ और किसी मोड़ के पास बची जगह पर एक पौधा रोपने की अभिलाषा तक तो किसीकी होती नहीं है! नहीं तो एक समय वह भी था, जब घर की चारदीवारी से बाहर निकलकर बच्चे कई तरह के खेल-कूद किया करते थे और उनको देख-सुन कर मन भी प्रफुल्लित होता था। मगर आज यह हाल है कि अब तो गांव भी शहरों की तरह होने लगे हैं। गांवों में भी मोटरगाड़ियां दौड़ने लगी हैं, कुओं के मीठे पानी की जगह बोतलबंद पानी ने अपनी पैठ बना ली है और छाछ-राबड़ी का स्थान ठंडे पेयों और तुरंता खाद्य पदार्थों ने ले लिया है। ऐसे में अपने संगी-साथी को पास बिठा कर शब्दों से नए-नए भाव सजाते हुए यह बालक मन को भा गए। अब इन बच्चों से एक शानदार जीवन का मिलन हो जाए तो कितना अच्छा हो।

बाल कहानी

बंदर और खरगोश

पतरस बुखारी

एक बड़े-से जंगल में एक बंदर और एक खरगोश बड़े प्यार से रहते थे। दोनों में इतनी अच्छी दोस्ती थी कि हमेशा एक साथ खेलते और अपना सुख-दुख बांटते थे।

एक दिन खेलते-खेलते बंदर ने कहा, "मित्र खरगोश, आज कोई नया खेल खेलते हैं।" खरगोश ने पूछा, "बताओ कौन-सा खेल खेलने का मन है तुम्हारा?"

बंदर बोला, "आज हम दोनों को आँख-मिचोली खेलनी चाहिए।" खरगोश हंसते हुए कहने लगा, "ठीक है, खेल लेते है। बड़ा मजा आएगा।" दोनों यह खेल शुरू करने ही वाले थे कि तभी उन्होंने देखा कि जंगल के सारे पशु-पक्षी इधर-उधर भाग रहे हैं।

बंदर ने फुर्ती दिखाते हुए पास से भाग रही लोमड़ी से पूछा, "अरे, ऐसा क्या हो गया है? क्यों सब भाग रहे हैं?" लोमड़ी ने जवाब दिया, "एक शिकारी जंगल में आया है, इसलिए हम सब अपनी जान बचाकर भाग रहे हैं। तुम भी जल्दी भागो वरना वह तुम्हें पकड़ लेगा।" इतना बोलकर लोमड़ी तेजी से वहाँ से भाग गई।

शिकारी की बात सुनते ही बंदर और खरगोश भी डर कर भागने लगे। भागते-भागते दोनों उस जंगल से काफी दूर निकल आए। तभी बंदर ने कहा, "मित्र खरगोश, सुबह से हम भाग रहे हैं। अब शाम हो चुकी है। चलो, थोड़ा आराम कर लेते हैं। मैं थक गया हूँ।"

खरगोश बोला, "हाँ, थकान ही नहीं, प्यास भी बहुत लगी है। थोड़ा पानी पी लेते हैं। फिर आराम करेंगे।"

बंदर ने कहा, "प्यास तो मुझे भी लगी है। चलो, पानी ढूंढते हैं।"

दोनों साथ में पानी ढूंढने के लिए निकले। कुछ ही देर में उन्हें पानी का एक मटका मिला। उसमें बहुत कम पानी था। अब खरगोश और बंदर दोनों के मन में हुआ कि अगर इस पानी को मैं पी लूंगा, तो मेरा दोस्त प्यासा ही रह जाएगा।

अब खरगोश कहने लगा, तुम पानी पी लो। मुझे ज्यादा प्यास नहीं लगी है। तुमने उछल-कूद बहुत की है, इसलिए तुम्हें ज्यादा प्यास लगी होगी।

फिर बंदर बोला, "मित्र, मुझे प्यास नहीं लगी है। तुम पानी पी लो। मुझे पता है, तुमको बहुत प्यास लगी है।"

दोनों इसी तरह बार-बार एक दूसरे को पानी पीने के लिए कह रहे थे। पास से ही गुजर रहा हाथी थोड़ी देर के लिए रुका और उनकी बातें सुनने लगा।

कुछ देर बाद हंसते हुए हाथी ने पूछा, "तुम दोनों पानी क्यों नहीं पी रहे हो?"

खरगोश ने कहा, "देखो न हाथी भाई, मेरे दोस्त को प्यास लगी है, लेकिन वो पानी नहीं पी रहा है।"

बंदर बोला, "नहीं-नहीं भाई, खरगोश झूठ बोल रहा है। मुझे प्यास नहीं लगी है। इसको प्यास लगी है, लेकिन यह मुझे पानी पिलाने की जिद कर रहा है।"

हाथी यह दृश्य देखकर बोलने लगा, "तुम दोनों की दोस्ती बहुत गहरी है। हर किसी के लिए यह एक मिसाल है। तुम दोनों ही इस पानी को क्यों नहीं पी लेते हो। इस पानी को आधा-आधा करके तुम दोनों पी सकते हो।"

खरगोश और बंदर दोनों को हाथी का सुझाव अच्छा लगा। उन्होंने आधा-आधा करके पानी पी लिया और फिर थकान मिटाने के लिए आराम करने लगे।

कहानी से सीख

सच्चे दोस्त हमेशा एक-दूसरे का ख्याल रखते हैं। सच्ची दोस्ती में स्वार्थ की कोई जगह नहीं होती।

गांधी क्विज-3

1. भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा महात्मा गांधी श्रृंखला के बैंकनोट कब जारी किए गए थे?

1. 1996
2. 1994
3. 1997
4. 1999

2. गांधी जी का पसंदीदा भजन 'वैष्णव जन तो तेने कहिये' के रचयिता कौन थे?

1. हरि मेहता
2. रवि मेहता
3. नरसी मेहता
4. कृष्ण मेहता

3. गांधी जी के साथ नमक सत्याग्रह का नेतृत्व किसने किया था?

1. राधिका नायडू
2. सरोजिनी नायडू
3. मीरा नायडू
4. विशाखा नायडू

4. गांधी जी को देशवासी प्यार से किस नाम से बुलाते हैं?

1. चाचा
2. बापू
3. मामा
4. माँ

5. साबरमती आश्रम कहाँ है?

1. भोपाल
2. अलीगढ़
3. अहमदाबाद
4. पुणे

6. साबरमती आश्रम को पहले क्या कहा जाता था?

1. आश्रम
2. अहमदाबाद आश्रम
3. गांधी आश्रम
4. सत्याग्रह आश्रम

7. गांधी जी की मृत्यु के दिन को किस रूप में याद किया जाता है?

1. योग दिवस
2. फादर्स डे
3. शहीद दिवस
4. अहिंसा दिवस

8. टाइम मैगजीन ने महात्मा गांधी को पर्सन ऑफ द ईयर कब नामित किया?

1. 1924
2. 1947
3. 1948
4. 1930

9. महात्मा गांधी को नोबेल शांति पुरस्कार के लिए कितनी बार नामांकित किया गया था?

1. 5 बार
2. 3 बार
3. 7 बार
4. 1 बार

10. उस एकमात्र कांग्रेस अधिवेशन का नाम बताइए जिसकी अध्यक्षता महात्मा गांधी ने की थी?

1. कलकत्ता अधिवेशन, 1928
2. बेलगाम अधिवेशन, 1924
3. गया अधिवेशन, 1922
4. मद्रास अधिवेशन, 1927

नोट: आप गांधी क्विज के उत्तर antimjangsds@gmail.com पर भेज सकते हैं। प्रथम विजेता को उपहार स्वरूप गांधी साहित्य दिया जायेगा।

गतिविधियाँ

गांधी ग्रीष्म पाठशाला आरंभ

गांधी स्मृति द्वारा स्लम के बच्चों को मुख्यधारा से जोड़ने के लिए गांधी दर्शन में गांधी ग्रीष्म पाठशाला का आयोजन किया गया। इसका शुभारंभ समिति के निदेशक डॉ ज्वाला प्रसाद ने किया। इस अवसर पर राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय की सुश्री निशा त्रिवेदी भी उपस्थित थीं।

इस 10 दिवसीय शिविर में दिल्ली के विभिन्न स्लम क्षेत्रों से आए लगभग 140 बच्चों ने जूट उत्पाद, शिल्प कला, माइम, छऊ लोक नृत्य, लिपोन कला, रंगमंच, संगीत, चरखा कताई, मिट्टी के बर्तन बनाने जैसे कई कौशल सीखे।

समिति के उपाध्यक्ष श्री विजय गोयल की प्रेरणा से आयोजित इस शिविर में भाग लेने वाले बच्चों के चेहरे पर कुछ नया सीखने की खुशी झलक रही थी।

विदेशी प्रतिनिधि मण्डल ने किया गांधी स्मृति दौरा

पिछले दिनों विदेश से आए अनेक प्रतिनिधिमण्डल ने गांधी स्मृति का दौरा किया और महात्मा गांधी के जीवन से प्रेरणा ली।

यूनाइटेड किंगडम में पनामा की राजदूत सुश्री नतालिया रोयो ने 4 जून, 2024 को गांधी स्मृति का दौरा किया। इस यात्रा के दौरान, उन्होंने शहीद स्तंभ पर श्रद्धांजलि अर्पित की और महात्मा गांधी के कमरे का भी दौरा किया।

भारत में नीदरलैंड के दूतावास से 21 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने 6 जून, 2024 को गांधी स्मृति का दौरा किया। भारत में नीदरलैंड की राजदूत श्रीमती मारिसा जेराड्र्स के नेतृत्व में प्रतिनिधिमंडल में डच सरकार के स्वास्थ्य, कल्याण, खेल मंत्रालय, विदेश मंत्रालय (अंतर्राष्ट्रीय उद्यमिता विभाग), न्याय मंत्रालय, बुनियादी ढांचा और जल मंत्रालय, संस्कृति मंत्रालय, आर्थिक मामले और जलवायु मंत्रालय, रक्षा मंत्रालय, कांसुलर मामलों के विभाग आदि के अधिकारी शामिल थे। प्रतिनिधिमंडल ने शहीद स्तंभ पर महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने उस कमरे का भी अवलोकन किया, जहां महात्मा गांधी ने अपने जीवन के अंतिम 144 दिन बिताए थे।

हिंदी कार्यशाला का आयोजन

गांधी स्मृति एवम् दर्शन समिति द्वारा 11 जून को गांधी दर्शन में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें संस्कृति मंत्रालय के राजभाषा उपनिदेशक शिशिर शर्मा ने हिंदी में कामकाज करने के बारे में कर्मचारियों का मार्गदर्शन किया। समिति के निदेशक डॉ ज्वाला प्रसाद ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

अपने संबोधन में श्री शर्मा ने कहा कि हिंदी भारत की राजभाषा है। यह अंग्रेजी की तुलना में काफी आसान और स्पष्ट भाषा है। निदेशक डॉ ज्वाला प्रसाद ने भी कर्मचारियों को अधिक से अधिक काम हिंदी में करने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम में समिति के सभी स्टाफ सदस्य उपस्थित थे।

डिजिटल गांधी सेंटर का शुभारंभ

महात्मा गांधी के विचारों को जनता, विशेषकर युवा पीढ़ी तक पँहुचाने हेतु अत्याधुनिक डिजिटल गांधी सेंटर का शुभारंभ गांधी स्मृति में किया गया। समिति के उपाध्यक्ष श्री विजय गोयल ने इसका उद्घाटन किया। इस अवसर पर जीएसडीएस की कार्यकारी समिति के माननीय सदस्य श्री महेश चंद शर्मा, श्री बनवारी, श्रीमती अमिता सरभाई, संयुक्त सचिव, संस्कृति मंत्रालय और निदेशक डॉ. ज्वाला प्रसाद भी उद्घाटन समारोह में उपस्थित थे। महात्मा गांधी के जीवन, दर्शन और इतिहास पर आकर्षक प्रदर्शनियों वाले इस केंद्र में आधुनिक तकनीक के जरिए गांधी की जीवन यात्रा को प्रदर्शित किया गया है।

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति

हमारे आकर्षण

गांधी स्मृति म्यूजियम (तीस जनवरी मार्ग)

* गांधी स्मृति म्यूजियम
* डॉल म्यूजियम
* शहीद स्तंभ
* मल्टीमीडिया प्रदर्शनी
* महात्मा गांधी के पदचिन्ह
* महात्मा गांधी का कक्ष
* महात्मा गांधी की प्रतिमा
* वर्ल्ड पीस गोंग

गांधी दर्शन (राजघाट)

* गांधी दर्शन म्यूजियम
* क्ले मॉडल प्रदर्शनी
* गेस्ट हाउस और डॉरमेट्री (200 लोगों के लिये)
* सेमीनार हॉल (150 लोगों के लिये)
* कॉन्फ्रेंस हॉल (300 लोगों के लिये)
* प्रशिक्षण हॉल : (80 लोगों के लिये)
* ओपन थियेटर
* राष्ट्रीय स्वच्छता केन्द्र
* गेस्ट हाउस और डॉरमेट्री

(डॉ. ज्वाला प्रसाद)
निदेशक

प्रवेश निःशुल्क (प्रातः 10 बजे से सायः 6.30 बजे तक), सोमवार अवकाश
हॉल व कमरों की बुकिंग के लिये संपर्क करें– ईमेलः 2010gsds@gmail.com, 011-23392796

gsdsnewdelhi www.gandhismriti.gov.in

RNI NO. DELHIN/2018/76242

''आप मुझे जो सजा देना चाहते हैं, उसे कम कराने की भावना से मैं यह बयान नहीं दे रहा हूँ। मुझे तो यही जता देना है कि आज्ञा का अनादर करने में मेरा उद्देश्य कानून द्वारा स्थापित सरकार का अपमान करना नहीं है, बल्कि मेरा हृदय जिस अधिक बड़े कानून से-अर्थात अन्तरात्मा की आवाज को स्वीकार करता है, उसका अनुसरण करना ही मेरा उद्देश्य है।''

(मोहनदास करमचंद गांधी)

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, नई दिल्ली
(एक स्वायत्त निकाय, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार)

प्रकाशक - मुद्रक : स्वामी गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के लिए पोहोजा प्रिंट सोल्यूशंस प्रा. लि., दिल्ली - 110092 से मुद्रित तथा गांधी दर्शन, राजघाट, नई दिल्ली-110092 से प्रकाशित।